दोस्त

सुन्नी बरैल्वी सुफीपंथी

वहाबी, देवबंदी, तबलीगी, अेहले हदीष

- देश भावना
- देश प्रेम/कुरबानी
- वफादारी
- भाइचारा
- प्रेम भावना
- अेकता-शांती
- अंग्रेजो से जेहाद
- आजादी का संग्राम
- प्रेम संदेश

- गद्दारी-आंतकवाद
- हत्या-शत्रुता
- आत्मघाती हमला
- अंग्रेजो की गुलामी
- कट्टरवाद
- कोमवाद
- फाटफुट
- फित्ना-फसाद
- बोम्ब धमाके
- कोमी दंगे

लेखक

मुनाजिरे अहले सुन्नत, खलीफ-ए-मुफ्ती आजमे हिन्द

अल्लामा अब्दुस्सात्तार हमदानी

"मस्रूफ" (बरकाती-नूरी)

असल गुजराती पुस्तक का हिन्दी भाषा में अनुवाद

प्रकाशक
मरकजे अहले सुन्नत बरकाते रजा
इमाम अहमद रजा रोड, पोरबंदर (३६०५७५) मोबाईल. 9879303557
website: www.markazahlesunnat.in | e-mail : hamdani78692@gmail.com

भारत के दोस्त और दुश्मन

-: लेखक :-

खलीफए मुफ्तीए आज़मे हिन्द, मुनाज़िरे अहले सुन्नत,
अल्लामा अब्दुल सत्तार हमदानी "मस्रूफ" (बरकाती-नूरी)
हिन्दी अनुवादक :- अब्दुल कादिर अबदुर्रहीम हमदानी - पोरबंदर (M.E. in Elect.)

-: प्रकाशक :-

मरकज़े अहले सुन्नत बरकाते रज़ा
इमाम अहमद रज़ा रोड, मेमनवाड
पोरबंदर - ३६०५७५ (गुजरात)
Web :- www.markazahlesunnat.in - Email :- hamdani78692@gmail.com

नाम किताब	:	भारत के दोस्त और दुश्मन
मुसन्निफ	:	मुनाज़िरे अहले सुन्नत, माहिरे रज़वियात, अल्लामा अब्दुस्सत्तार हमदानी "मस्रूफ" (बरकाती - नूरी)
कम्पोज़िंग	:	हाफिज़ मुहम्मद इमरान हबीबी
प्रुफरीडिंग	:	हाजी शब्बीर अ.सत्तार हमदानी
सने तबाअत	:	अप्रिल, इ.स. २०१८
ता'दाद	:	दो हजार एक सो (२१००)
नाशिर	:	मरकज़े अहले सुन्नत बरकाते रज़ा इमाम अहमद रज़ा रोड़, मेमन वाड़,-पोरबंदर

- : मिलने के पते : -

(१) कुतुबख़ाना अमजदिया, मटिया महल, जामा मस्जिद. दहेली. ६
(२) कुतुबख़ाना फारूकिया, मटिया महल, जामा मस्जिद. दहेली. ६
(३) दार मुस्तफा, भावना डेरी के पास, S.V.P. रोड, पोरबंदर
(४) रजवी किताब घर, मटिया महल, जामा मस्जिद. दहेली. ६
(५) न्यु सिल्वर बुक डिपो, भींडी बाजार - मुम्बई
(६) कलीम बुक डीपो, ख़ास बाज़ार, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद

भारत के दोस्त और दुश्मन

"अनुक्रमिका"

वास्तविक चित्र
जेहाद के नाम पर आंतकवाद

वर्तमान युग में विश्व स्तर पर और विशैषत भारत के विविध प्रांतो में बोम्ब विस्फोटक, हत्या, आत्मधाती हुमला, नरसंहार, सांप्रदायिक दंगे तथा अन्य घृणास्पद आंतकी प्रवृत्तिओं के कारण भय का वातावरण व्यापक है।

आंतकवादियों के विविध संगठन लश्करे तैयबा, हिजबुल मुजाहेदीन, जैशे मुहम्मद, आई.एस.आई., इन्डीयन मुजाहेद्दीन, सिम्मी इत्यादी संगठनो ने विश्व की और भारत की शांति में अशांति का पलीता चांप दिया है। वर्णनीय संगठनों को इस्लाम से कोई सम्बन्ध नहीं बल्कि ये समग्र संगठन इस्लाम से विचलित हो चुके हैं। इन का सीधा सम्बन्ध वहाबी, देवबंदी, तबलीगी, अहले हदीष, जमाअते इस्लामी इत्यादी जैसे इस्लाम विरुद्ध फिर्कों के साथ हैं।

सुन्नी बरेल्वी संप्रदाय वर्णनीय आंतकवादी संगठनों की धोर निंदा करता है। विशेष में जितने भी आंतकवादी संगठन हैं, उन में से एक संगठन भी सुन्नी बरेल्वी सूफी पंथी नहीं।

क्यूंकि :-

सुन्नी बरेल्वी सूफी संप्रदाय कभी भी इस प्रकार की किसी आंतकवादी प्रवृत्ति का कभी भी आचरण नहीं किया, या भविष्य में कभी भी आंतकवादी प्रवृत्ति का आचरण नहीं करेगा।

सुन्नी बरेल्वी सूफी संप्रदाय हमेंशा अपने प्यारे मादरे वतन ''भारत'' के वफादार थे, हैं और हमेंशा रहेंगे।

पोरबंदर
दिनांक :- 15/05/2006

अल्लामा अब्दुल सत्तार हमदानी
(लेखक)

अर्पण

भारत की आजादी के महान स्वतंत्रता सेनानी तथा शहीदे वतन जिस ने अपना माल-मिल्कत, सरकारी पदों, सुःख, साहबी, चैन-आराम, बल्कि अपने प्राण की आहूति दे कर ''जंगे-आजादी'' के मुख्य हीरो की भूमिका निभाई। मुस्लिम समुदाय को अंग्रेजों के विरुद्ध उकसाने के लिये अंग्रेजों से लडने का ''पहेला-फत्वा'' दिया। अंग्रेजों के विरुद्ध दिये अपने फत्वे पर अंतिम श्वास तक अडग रहे। यहां तक कि कालापानी की जन्मटीप की सजा ''आंदामान-निकाबार-टापू की जेल में'' आप काट रहे थे तब अंग्रेज वाइसरोय ने कहा कि आप सिर्फ मेरे कान में इतना केह दें कि मुझे मेरे फत्वे पर अफसोस है। मैं इसी वक्त आप को जेल मुक्त का ओर्डर दे दूंगा और आप के मकान की एक ईंट सोने की और एक चांदी की इस तरह बनवा दूंगा। तब आप अपने जीवन की अंतिम पलों में मृत्यु-शैया पर लेटे हूए थे।

मृत्यु-शैया का निर्बल, रोगिष्ट और अशक्त मुजाहिद जो अपने हाथ से पानी भी नहीं पी सकता था, करवट भी नहीं बदल सकता था, वो देश भक्ति और स्वमान का अद्वितीय उदाहरण देते हूए बिस्तर पर उठ बेठा और आक्रोश भरे स्वर में सिंह गर्जना करते हूए कहा कि :-

अगर खुदा मुझे हजार जिन्दगी और हजार मौत दे, तो मैं अपनी हर जिन्दगी में यही फत्वा दूंगा कि :-

''अंग्रेजों के खिलाफ जेहाद करना फर्ज है''

आंदामान-जैल में अंग्रेजों द्वारा दी गई जन्मटीप की सजा की अवधि पूर्ण होने के पूर्व ही कारावास में जिनका देहांत हुवा है और शहीदों की सुची में जिनका नाम सुवर्ण अंको से अंकित है ।

उस महान शहीदे वतन, मन्तिक और फलसफा के प्रखर ज्ञानी तथा इमाम :-

की बारगाहे उच्च में यह किताब अर्पण करते हूए गर्व और संतोष की मिश्र उर्मियों का अनुभव करता हूं ।

शहीदे वतन की अंतिम विश्राम-शैया (कब्र) पर अल्लाह तआला अपने रहमत के असंख्य पुष्पों की अवरित वर्षा करे, ऐसी हार्दिक अभिलाषा । ....

= लेखक =

गुजरात राज्य के नामांकित धारा शास्त्री, सामाजिक महानुभाव, भा.ज.पा. अग्रणी, आध्यस्थापक परशुराम युवा संस्थान - रोजकोट, जनाब अभय कुमार भारद्राज-राजकोट (एडवोकेट गुजरात हाईकोर्ट) की हार्दिक उर्मियों की

अभिलाषा एंव अभिपाय

सलाम.... सत्य के पहरेदार को......

इतिहास साक्षी है कि सत्य की किंमत इमाम हुसैन को अपने प्राण का बलिदान दे कर चुकानी पडी थी ।

शहीद इमाम हुसैन की परंपरा बजा लाना या'नी सत्य के कांटो से भरे हुवे मार्ग पर चलना पसंद करना ।

वर्षो से जिनके साथ मेरा हार्दिक प्रेम के सबंध का रिश्ता है, वो पोरबंदर निवासी अल्लामा अब्दुल सत्तार हमदानी ने भारतीय सांप्रत परिस्थिति के परिपक्ष में फिर एक बार सत्य कहेने का खतरा उठाया है और वो भी सोच-समझ कर ।

सत्य को समझना आसान है, परन्तु सत्य बोलना अति कठीन है । क्यूंकि सत्य के अनुसरण से व्यक्ति को अपने प्राण का बलिदान देने की तैयारी रखनी पडती है ।

समग्र खतरों तथा कष्टदायक परिस्थिती का मुकाबला करने के लिये तत्पर तथा सावधान हो कर हमदानीजी ने ये पुस्तक या'नी ''भारत के दोस्त और दुश्मन'' का आलेखन किया है ।

मुझे श्रध्धा और विश्वास है कि भारत के मुस्लिम बंधूओं को और विशेषत सुन्नी बरेल्वी बिरादरों को सत्य स्वरुप से समझने में,

पहेचानने में तथा राष्ट्रद्रोही प्रवाह से अलग थलग पुरवार करने में ये पुस्तक लाइट हाउस की तरह सत्य सीमा सुचक पुरवार होगा ।

इस पुस्तक के वांचन द्वारा ये वास्तविकता स्पष्ट रुप से सामने आती है कि देश के दुश्मनों को और विशेषत लश्करे तय्येबा, जैस-ए-मुहम्मद, हिजबुल मुजाहेदीन, सिम्मी तथा अन्य आंतकवादी संगठनो को जो निःशंक वहाबी, देवबंदी, तबलीगी, अहले हदीष और जमाअते इस्लामी के चुस्त अनुयायी हैं, इन को स्वंय इन के ही पुस्तकों के आवरण तथा संदर्भो से हमदानीजी ने इन का असली रुप प्रजा समक्ष प्रस्तृत कर दिया है । हमदानी जी ने अति चौंका देने वाला कडवा सत्य भारत की प्रजा समक्ष रजू किया है और इस पुस्तक की सहाय से सत्य इतिहास लिखने का मार्गदर्शन अवश्य प्राप्त होगा ।

इश्वर से मेरी प्रार्थना है कि हमदानीजी को इन के कडवे सत्य के मार्ग में विषपान करने की शक्ति प्राप्त हो और वह हर प्रकार की परेशानी, विपदा और कठिनाई का मुकाबला कर के अपने निर्धारित पंथ पर चलते रहें ।

प्रत्येक भारतीय जो बिनःपक्षपाती और सांप्रदायिक भावना के विष से दूर हैं, उन के लिये इस पुस्तक का वांचन अनिवार्य इस लिये है कि इस के वांचन से सुन्नी मुस्लिम सूफी पंथी बरेल्वी संप्रदाय की सच्ची पहचान तथा इन की राष्ट्र भक्ति, राष्ट्र प्रेम और कुरबानी की भावना की जानकारी प्राप्त हो ।

मवदीय

हस्ताक्षर :- (अवाच्य)

(अभय कुमार भारद्वाज)

आध्यस्थापक :- परशुराम युवा संस्थान

राजकोट - मो. नं. 09824290007

राजकोट

दिनांक :- 18/04/2007

"अभिप्राय"

अल्लामा अब्दुल सत्तार साहब हमदानी पोरबंदर की धरती पर साहित्य की महक रखने वाली व्यक्ति है । हमदानी साहब के नाम से मशहूर ये शख्स अनेक सामाजिक और शैक्षणिक संस्थाओं के साथ जुडे हूए हैं और अब तक एक सो पिस्तालीस(१४५) जितने पुस्तकों का आलेखन कर चुके हैं । शेर-शाएरी तथा गजल सर्जन के सम्राट हैं । उर्दु, फारसी, अरबी, हिन्दी और गुजराती भाषा पर इन का प्रभुत्व तथा नियंत्रण प्रसंशनीय है । हमदानी साहब साहित्य के छूपे रुस्तम हैं ।

साहसिक वैपारी, उद्योगपति और कोन्ट्राक्टर की धंधाकीय प्रवृत्तिओं में अति व्यस्त होते हूए भी साहित्य के क्षेत्र में इत्ला सर्जन किया है कि कल्पना में न आए ।

हमदानी साहब हिन्दु-मुस्लिम-एकता और बंधूत्व के प्रखर समर्थक हैं और दोनों धर्म के लोगों में विशाल चाहक वर्ग रखते हैं । इन दोनों कामों में मध्यंत्र मजबूत जजीर बन के प्रवर्त दुराग्रह, मतभेद, मनभेद, संदेह, अविश्वास तथा शंका मत दूर करने का महा-पुरुषार्थ करते हैं, जो वर्तमान सांप्रत युग में अति आवश्यक तथा अनिवार्य है ।

"भारत के दोस्त और दुश्मन" की हिन्दी आवृत्ति इस समय आपके शुभ हाथों में है । इस पुस्तक में गुढ संशोधन द्वारा इस सच्ची वास्तविकता को पुरवार किया गया है कि वर्तमान युग के आंतकवादी संगठन अंग्रेजों की कटुनिती की दैन हैं । अखंड भारत के गद्दारों का पर्दा चाक करने वाले पुस्तक का आलेखन खतरों और आपत्ति से भरा साहस है । अब से पहेले इस प्रकार का साहसिक संशोधन शायद ही किसीने किया होगा ।

अपने जीवन के ज्ञात समय में भी लेखक की कलक देशसेवा तथा देश दाज प्रत्ये लोगों को जागृत करने के लिये चलती रही है । ऐसे जागृत प्रवहरी लोग जब तक भारत में जीवित हैं, तब तक लोकशाही तथा सच्ची शुध्ध बिनःसांप्रदायिकता जीवित रहेगी । इन से अनुरोध है कि अपनी तैज, तीखी और निडर कलम से वर्तमान सांप्रत युग के अंधकार से प्रेम संदेश की चमकती किरण के प्रकाश को रेला कर लोगों को सत्य का सीधा और सच्चा मार्ग निर्देशित करने के लिये जागृत दैनिक समाचार पत्र बिना विलंब आरंभ करें । शुभेच्छक इंव स्नेहाधीन

सुमन सिंह गोहिल

पोरबंदर

दिनांक :- 10/04/2018

(१) मेनेजिंग कमिटी अेन्ड फाउन्डर मेम्बर, रामकृष्ण मिशन - पोरबंदर

(२) कमिटी चेरमैन, स्टेट लायब्रेरी बुक सिलेकशन - पोरबंदर

"भारत के दोस्त और दुश्मन" पुस्तक में प्रस्तृत संदर्भ पुस्तकों की प्रमाणित सुची

नं.	पुस्तक का नाम	लेखक/संपादक
१	अत्तौहीद	मुहम्मद इब्ने अ.वहाब नजदी
२	तकवीयतुल ईमान	मोल्वी इस्माईल दहेल्वी
३	तेहजीरुन्नास	मोल्वी कासिम नानोत्वी
४	यकरोजी	मोल्वी इस्माईल दहेल्वी
५	अल-जेहदुल-मिक्ल	मोल्वी महेमूद हसन देवबंदी
६	बराहीने कातेआ	मोल्वी खलील अहमद अंबेठवी
७	फतावा रशीदीया	मोल्वी रशीद अहमद गंगोही
८	हिफजुल ईमान	मोल्वी अशरफ अली थानवी
९	बहिश्ती जेवर	मोल्वी अशरफ अली थानवी
१०	इमदादुल फतावा	मोल्वी अशरफ अली थानवी
११	मौलाना इल्यास और उनकी दीनी दा'वत	मोल्वी सय्यद अबूल हसन अली नदवी
१२	मल्फूजाते मौलाना इल्यास	मोल्वी मन्जूर नोअ्मानी
१३	बागी हिन्दुस्तान (उर्दु अनुवाद)	अब्दुश्शाहिद खां शेरवानी
१४	तजकेरा ओलोमा-ए-अहले सुन्नत	मौलाना महेमूद अहमद कादरी
१५	मजाहेबुल इस्लाम	नजमुलगनी रामपूरी
१६	'अल-फूरकान' (मासिक) शहीद नं. स.हि. १३५५	मोल्वी मन्जूर नोअ्मानी
१७	हयाते तय्येबह	मिर्जा हयरत दहेल्वी
१८	इशाअतुस्सुन्नत	मोल्वी मुहम्मद हुसैन बटाल्वी
१९	मकालाते सर सय्यद	मुहम्मद इस्माईल पानीपती

नं.	पुस्तक का नाम	लेखक/संपादक
२०	अल-इक्तेसाद-फी-मसाअेलिल जेहाद	अबू सईद मुहम्मद हुसैन लाहोरी
२१	तजकेरतुर्रशीद	मोल्वी आशिक इलाही मेरठी
२२	सवानेह अहमदी	मुहम्मद जाफर थानेसरी
२३	उन्नीस्वीं सदी का अफसान-ए-तबाही	मुहम्मद अमीन जुबैरी
२४	हकाइके तेहरीके बालाकोट	शाह हुसैन गर्दजी
२५	इम्तियाजे हक	राजा गुलाम मुहम्मद
२६	मौलाना इस्माईल दहेल्वी और तकवीयतुल ईमान	मौलाना शाह अबूल हसन जैद फारूकी
२७	हिन्दुस्तानी मुस्लिम सियासत पर एक नजर	डॉक्टर मुहम्मद अशरफ
२८	हदाइके बख्शिश भाग-३	इमाम अहमद रजा बरेल्वी
२९	हुस्सामुल हरमैन अला मनहरिल कुफ्रे वल-मैन (गुजराती अनुवाद)	इमाम अहमद रजा बरेल्वी
३०	मकतूबाते सय्यद अहमद शहीद (फारसी)	मुहम्मद जाफर थानेसरी
३१	तारीखे तनावलियां	सय्यद मुराद अली अलीगढी
३२	मकतूबाते सय्यद अहमद शहीद (उर्दु अनुवाद)	सखावत मिर्जा
३३	फरियादे मुस्लेमीन	मुन्शी मुहम्मद हुसैन 'महेमूद'
३४	सीरते सय्यद अहमद शहीद	सय्यद अबूल हसन अली नदवी
३५	मुशाहिदाते काबुल-व-यागिस्तान	मुहम्मद अली कुसूरी
३६	तजकेरा अकाबिरे अहले सुन्नत	मौलाना अब्दुल हकीम शर्फ

नं.	पुस्तक का नाम	लेखक/संपादक
३७	अहले सुन्नत की आवाज	ताजुल औलोमा सय्यद मुहम्मद मियां मारेहरवी
३८	मखजने अहमदी	सय्यद मुहम्मद अली
३९	ओलोमा-ए-हिन्द का शानदार माजी	सय्यद मुहम्मद अली
४०	काबुल में सात साल	उबैदुल्लाह सिंधी
४१	मुकालमतुस्सदरैन	ताहिर अहमद कासमी
४२	'माहे-नौ' करांची	खास अंक ब-यादगार तेहरीके आजादी
४३	अल-इफादातुल-यवमिया	मोल्वी अशरफ अली थानवी
४४	मौलाना मुहम्मद अहसन नानोत्वी	मुहम्मद अैयूब बिन मशीयतुल्लाह
४५	सवानेह कासमी	मुनाजिर अहसन गीलानी
४६	जरीदा तर्जुमान (साप्ताहिक) देहेली	अेडिटर मुहम्मद सुलेमान 'साबिर'
४७	हयाते मुफ्ती आजम	मिर्जा अब्दुल वहीद बेग
४८	तर्जुमाने अहले सुन्नत (मासिक)	जुलाई १९७५ का जंगे आजादी नंबर
४९	अरवाहे सलाषा	मोल्वी जहूरुल हसन कसोल्वी
५०	मकतूबाते शैखुल इस्लाम	मोल्वी मुनाजिर अहसन गीलानी
५१	फीरोजुल्लुगात	अल्हाज मोल्वी फीरोजुद्दीन
५२	तजकेरतुल खलील	मोल्वी आशिक इलाही मेरठी
५३	कासिमुल उलूम	मोल्वी कासिम नानोत्वी

नं.	पुस्तक का नाम	लेखक/संपादक
५४	घी न्यु रोयल पर्सीयन इंग्लीश डीक्षनेरी	डो. अेस. पी. पाल
५५	अेअ्लामुल-अअ्लाम-बे-अन्ना हिन्दुस्तान-दारुल-इस्लाम	इमाम अहमद रजा फाजिले बरेल्वी
५६	हिन्द का मुस्लिम राजकारण (अनुवाद)	मांडवीया यूसुफ अब्दुल्लाह

जरूरी खुलासा

मादरे वतन अखंड भारत के लिये प्राण की आहूती दे कर शहीद होने वाले देश के वफादारों और दोस्तों की सुची बडी लम्बी है।

इसी तरह अंग्रेजों की गुलामी का पट्टा गले में डाल कर देश को हानी पहुंचाने वाले गद्दारों और दुश्मनों की सुची भी बहुत लम्बी है।

परन्तु ....

इस किताब में ऐसे दोस्तों और दुश्मनों का ही उल्लेख करने में आया है, जिन का प्रत्यक्ष सबंध मुस्लिम कौम के साथ है। या'नी भारत के वफादार और दोस्त सच्चे मुस्लिम तथा भारत के गद्दार और दुश्मन फक्त नाम के झूठे मुस्लिम का ही वर्णन किया गया है।

भवदीय,

= लेखक =

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

"प्रस्तावना"

"बोम्ब विस्फोटक हुवा..... १५०, मनुष्यो की मृत्यु हुई...... आंतकवादी हमला हुवा........ ३५, निर्दोष लोगों की धातकी हत्या...... आत्मधाती हम्ले में सरकारी कचहरी धाराशयी....... १७, कर्मचारी दबकर मर गए" इस प्रकार के शिर्षक प्रति दिन समाचार पत्रो में अब सामान्य बात हो गई है ।

विश्व के अधिकतर देश इस प्रकार की आंतकवादी घटनाओ का कई मरतबा सामना कर चुके हैं और कर रहे हैं । ऐसी घटनाओं का आशय क्या है ? वो किसीको भी नहीं मा'लूम । बल्कि खुद आंतक करने वाला कर्ता भी वास्तविक ध्येय से अज्ञात होते है । सिर्फ और सिर्फ हत्या तथा आंतक द्वारा दहशत, खौफ, डर, भय, त्रास और असलामती का वातावरण स्थापित करना और लोगों के मन में अपनी धाक, रौब, दबदबा और प्रभाव बिठाना होता है ।

इस प्रकार के आंतकी हमलो में जिन निर्दोष लोगों के प्राण की आहुति दी जाती है, वो लोग संपूणपणे निर्दोष होते हैं । क्यूंकि एसी घटनाओं में महिलाएं, छोटे बच्चे, शीशु, कुमारावस्था के लडके अत्यादी का भोग लिया जाता है और "चोरी उपर से सीना जोरी" का नग्न प्रदर्शन करते हुए कुछ संगठनो द्वारा एसी आंतकी, घटना की जवाबदारी ली जाती है । बेहयाई, बे-शरमी, निर्दयता, नफ्फटता और कठोरता से अपने इस मानवता विहोणे अभद्र कार्य पर गर्व किया जाता है कि यह काम हमने अंजाम दिया है ।

वर्तमान युग में लश्करे तैयबा, जैशे मुहम्मद, हिज्बुल मुजाहेदीन, इन्डीयन मुजाहेदीन, सिम्मी इत्यादी संगठनों द्वारा

आंतकवादी प्रवृत्तिओं का आचरण किया जाता है । निःसंदेह इन समग्र संगठनों का नाम इस्लामिक है और इन संगठनो के संचालक इस्लाम के अनूयायी होते हैं । इस कारण सामान्य जनसमुदाय में ये भ्रान्ति, कुधारणा, भ्रम और बदगुमानी प्रचलित हो गई है कि समग्र मुस्लिम समुदाय आंतकवादी है । भारत का हिन्दु हो या अन्य धर्मी हो, विदेशी गोरा हो या काला, प्रत्येक व्यक्ति हर मुसलमान को आंतकवादी समझता है और मुस्लिम या'नी आंतकवादी । इस प्रकार की गैर समझ का शिकार हो कर प्रत्येक मुस्लिम को शंका की द्रष्टि से देखता है ।

लैकिन वास्तविकता ये है कि मुस्लिम नामधारी आंतकी संगठनो के अनूयायीओं को इस्लाम से दूर का भी सबंध नहीं होता । बल्कि इस्लाम के मूलभूत, सुद्रढ, स्थायी और मानवता लक्षी सिध्धांतो और नियमों से विचलित, विद्रोही, विमुख तथा अवज्ञाकारी तत्वो द्रारा ही आंतकवादी संगठन स्थापित किये जाते हैं और कार्यरत होते हैं । इस्लाम ने इस प्रकार के आंतकी कुःकर्मो की सख्त और कडे शब्दो में निंदा की है और समग्र आंतकवादी आचरण प्रत्ये घृणा, धिक्कार, घिन, अप्रसन्नता, नफरत और बेजारी की ही लागणी व्यक्त की है । इन आंतकी संगठनो और कर्ताओं के नाम मुस्लिम होने के बा-वुजूद (अगरचे) वह मुस्लिम नहीं बल्कि इस्लाम से विचलित (मुर्तद) होने वाले फिर्कों (समुदायों/Sects) के अनूयायी हैं । या'नी वहाबी, देवबंदी, नजदी, तबलीगी, अहले हदीष फिर्कों के अनूयायी और माननेवाले हैं । जिस की माहिती संक्षिप्त में निम्नलिखित है ।

सन हिजरी १११५ (इ.स.१७०३) अरबस्तान के इलाके "नजद" के एक गाँव "उययना" में "मुहम्मद इब्ने अब्दुल वहाब नजदी" नामक शख्स पैदा हुवा । शैतान के फरेब, छल, कपट और

धोके का शिकार हो कर इस्लाम से विचलित (मुर्तद) हो गया । उस ने अपने झूठे और असत्य अकीदों (मान्यताओं) को पुस्तक स्वरूप प्रगट किया । उस किताब का नाम ''अत्तौहीद'' है, जो अरबी भाषा में लिखी गई है । इस किताब में इस्लाम के मूलभूत अकीदों पर हीन कक्षा के प्रहार किये गए हैं। विशेष में इस्लाम धर्म के आदरणीय तथा सन्माननिय महानुभावों की शान में बे-अदबी तथा अपमानजनक प्रहार किये हैं । जिस के कारण उस समय के विश्व के भिन्न देशों के एक सो (१००) से ज्यादा महान मुफ्तियों ने मुहम्मद इब्ने अब्दुल वहाब नजदी पर काफिर तथा मुर्तद के फत्वे दे कर उसे इस्लाम से खारिज (निकला हुवा) का हुक्म लगाया ।

मुहम्मद इब्ने अब्दुल वहाब नजदी ने इस्लाम के अंदर नये संप्रदाय ''वहाबी-नजदी'' फिर्के की बुनियाद (नींव) रखी और हिजरी सन ११४० (इ.स.१७२८) में वहाबी मजहब की जाहेरात (धोषणा) की । शयखे नजदी ने अपने वहाबी धर्म के प्रचार और प्रसार के लिये मुहम्मद इब्ने सऊद का साथ ले कर पैसे और तलवार (Money and Muscle) के जौर से अरबस्तान और आसपास के विस्तारों में अपने झूठे धर्म 'वहाबियत' को फैलाया ।

''भारत में वहाबी संप्रदाय का प्रवेश''

भारत में वहाबी फिर्के (Sect) के आगमन पूर्वे समग्र भारत के मुस्लिम सुन्नी, सूफी पंथी या'नी बरेल्वी विचारधारा के मानने वाले थे । समग्र मुस्लिम समुदाय पर सूफी-संतो का इतना विशेष प्रभाव और वर्चस्व था कि मुस्लिम समाज अपने धार्मिक, सामाजिक, परिवारिक, व्यवसायिक, आर्थिक, राजकीय अथवा

अन्य किसी भी क्षेत्र में धार्मिक आगेवानो या'नी सूफी-संतो के आदेशो, सूचनो, निर्देशो, मार्गदर्शनो तथा विचार-विमश का इतना आदर और पालन करते थे कि सूफी-संतो के मुख से निकली हुई बात की स्वीकृति और अमलवारी अनिवार्य होती थी ।

भारत के मुस्लिमो पर दो (२) खान्दान की अकल्पनीय पकड थी । ▣ पहला :- शाह वलीयुल्लाह दहेल्वी खान्दान और ▣ दूसरा :- फजले इमाम खैराबादी खान्दान का मुस्लिम समुदाय पर संपूर्ण वर्चस्व प्रभुत्व तथा अंकुश था । इन दोनों परिवार के दो (२) नबीरे अपने अपने परिवार का प्रतिनिधित्व तथा मुस्लिम संप्रदाय को धर्मोपदेशक का कार्य अंजाम देते थे । शाह वलीयुल्लाह दहेल्वी के खानदान से मोल्वी इस्माईल दहेल्वी तथा फजले इमाम खैराबादी खान्दान से अल्लामा फजले हक खैराबादी विख्यात और चर्चित थे । परन्तु मोल्वी इस्माईल दहेल्वी की महत्वता सिर्फ बडे बाप का बेटा थी । जबकि अल्लामा फजले हक खैराबादी अपने युग के प्रखर ज्ञानी, अद्भूत विद्रान, मन्तीक और फलसफा (तर्क शास्त्र तथा दर्शन शास्त्र) के महाविद्यायक तथा प्ररक थे । जबकि मोल्वी इस्माईल दहेल्वी की दीनी मालूमात (धार्मिक ज्ञान) अल्पमात्रा का और मर्यादित था । वर्णनीय दोनों मुस्लिम समुदाय के अग्रणीयों के दरमियान हिजरी सन १२४० (इ.स. ००००) में दिल्ही की जामेअ-मस्जिद में अकीदे (धार्मिक मान्यता) के अनूसंधान में ''मुनाजरा'' (वाग्युध्ध/Debate) हुवा । जिस में लाखों की संख्या में श्रोता उपस्थित थे । इस मुनाजरे अनुसबंधित कायदा और शांति (Law and Order) की समग्र व्यवस्था उस समय के शासक या'नी अंग्रेजों ने की थी । इस मुनाजरे में मोल्वी इस्माईल दहेल्वी का घोर पराजय हुवा था और उस की प्रतिष्ठता को नाशवान चोट लगी ।

व्यवस्था प्रबंधक अंग्रेजों को वर्णनीय मुनाजरा की संपूर्ण माहिती प्राप्त थी । अंग्रेजों ने ''मोके से फायदा'' उठाते हुए पराजित मोल्वी इस्माईल दहेल्वी का संपर्क किया । इस्माईल दहेल्वी अपनी जाहेर में प्रतिष्ठा हरण करने वाले अल्लामा फजले हक खैराबादी पर अति क्रोधित था और बदले की भावना से व्यथिथ था । मुल्ला इस्माईल और अंग्रेजों में एक संधि हूई । अंग्रेजों को अपने शासन को द्रढ बनाने की चिंता थी और मुल्ला दहेल्वी को अपने ''वेर की बसुलात'' (Revenge) की जंखना थी । ''दोनों तरफ थी आग बराबर लगी हूई'' के अनूसार अंग्रेजों और इस्माईल दहेल्वी के बीच में मुस्लिम धार्मिक नेता अल्लामा फजले हक के सुन्नी सूफी बरेल्वी संप्रदाय के विरुद्ध (Enmity) नया धर्म या'नी वहाबी धर्म अस्तित्व में आया ।

वहाबी धर्म के स्थापक मुहम्मद इब्ने अब्दुल वहाब नजदी की किताब ''अत्तौहीद'' (अरबी) का मोल्वी इस्माईल दहेल्वी ने ''उर्दु अनुवाद'' किया । उस पुस्तक का नाम ''तकवीयतुल ईमान'' रखा और अंग्रेजी साम्राज्य की तरफ से यह किताब अपने खर्च से छाप कर लाखों की संख्या में विना-मुल्य प्रत्येक मुस्लिम परिवार के घर पहुंचाई गई ।

''तकवीयतुल-ईमान'' पुस्तक प्रगट होते ही मुस्लिम समुदाय में खलबली मच गई । क्यूंकि इस पुस्तक में इस्लाम के अति आदरणीय नबीयों और वलीयों की शान में इतनी हलके स्तर की तौहीन (अपमान) की गई है कि जिस को कोई भी मुसलमान सहन नहीं कर सकता । हर तरफ से इस्माईल दहेल्वी और उस के पुस्तक ''तकवीयतुल-ईमान'' का प्रचंड विरोध हुवा । खंडन में पुस्तकें प्रगट हुए, सभा-रैली तथा कुफ्र के फत्वों से सुन्नी बरेल्वी सूफी पंथी आलिमों ने अपना कर्तव्य निभाया । अंग्रेज साम्राज्य की आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा शस्त्र सरंजाम की सहाय के

कारण ''वहाबी-धर्म'' दिन-प्रति-दिन प्रगति करता रहा और नया धर्म ''वहाबी-धर्म'' मुस्लिमों में ''नया-फिर्का'' की हैसियत धारण कर के शीध्रता से प्रचलित होने लगा ।

भारत में बसने वाले अधिकतर मुस्लिम सुन्नी सूफी पंथ के अनूयायी थे । वहाबी धर्म के झूठे और धर्म से विचलित मान्यताओं का मुस्लिम जन समुदाय ने अस्वीकार बल्कि प्रचंड विरोध किया । अंग्रेजों के पीठबल का उपयोग कर के तलवार के बल से वहाबी धर्म के प्रचार और प्रसार का आंदोलन शुरू हुवा । अंग्रेजों के ''हाथ की कठपुतली'' बनकर अंग्रेजों के इशारों पर नाचनेवाले वहाबी-मुल्लों ने मुस्लिम समुदाय पर अत्याचार, निर्दयता, अन्याय, हत्या, हिंसा, डकैती, बालात्कार, यौन शोषण और मानवता जिहोणी निर्दयता का जो नग्न-नृत्यु किया है, उस की धुंधली झांखी इस पुस्तक में यथाशक्ति वर्णन करने का प्रयास किया है । अपेक्षा है कि इसके वांचन से वांचक मित्रो समक्ष वर्तमान युग के वहाबी, देवबंदी, तबलीगी, अहले हदीष (सल्फी), जमाअते इस्लामी (सिम्मी) इत्यादी विचलित पंथी आंतकी संगठनो की हीन और आंतकी चेष्टाओं का स्पष्ट चित्र द्रष्टिगोचर हो जाएगा ।

दु:ख तो इस बात का है कि महान देश अखंड भारत के साथ गद्दारी और अंग्रेजों की वफादारी का अद्यम कृत्य करने वाले देश के दुश्मन वर्तमान युग की राजनिती का दुरुपयोग कर के अपने को महान देश भक्त, देश के वफादार, आजादी की लडत के शुरवीर योद्धा, अंग्रेजों से लडकर शहीद होने वाले इत्यादी देश-सेवा और कुरबानी को अपने नाम अंकित करने की कु:चेष्टा करते हुए झूठ, असत्य, छल, कपट, फरैब, बे-शर्मी, निर्लज्जता, अशिष्टता और असम्यता का इतना विपुल प्रमाण में उपयोग करते हैं कि सामान्य जन समुदाय को आसानी से धोका दे देते हैं ।

द्रष्टांत स्वरुप :-

▣ जब किसी मुस्लिम समुदाय के मंच से व्याखन देने का अवसर प्राप्त होता है, तो मुस्लिमों को प्रभावित करने के लिए ऐसी डींग और गप मारते हैं कि हमारे देवबंदी पेश्वा मोल्वी इस्माईल दहेल्वी और उनके पीर (गुरु) सय्यद अहमद रायबरेल्वी इस्लाम की खातिर शीखों से लडते लडते शहीद हूए हैं ।

▣ जब किसी राजकीय पक्ष के राजनैतिक मंच से भाषण देने की तक मिलती है, तो देश बंधूओं समक्ष अपनी देश भक्ति की रागनी आलापते हूए ऐसी झूठी पंकतियां रेलाते हैं कि हमारे धार्मिक पैश्वा मोल्वी इस्माईल दहेल्वी और सय्यद अहमद रायबरेल्वी भारत की आजादी के स्वतंत्रता-सैनानी थे । देश को आजाद कराने के लिये अंग्रेजों से लडते-लडते शहीद हो कर मातृ-भूमि की रक्षा के लिए योगदान तथा बलिदान दिया है ।

परन्तु .... वास्तविकता सदंतर विपरित है ।

इस किताब में ठोस हवालों और आधारभूत तथा विश्वसनीय पुस्तकों के संदर्भों से सिद्ध किया गया है कि वहाबी-देवबंदी फिर्के के पेश्वा हरगिज..... कदापी इस्लाम के मुजाहिद या स्वातंत्र सैनानी नहीं थे........ बल्कि........................

▣ इस्लाम के गद्दार होने के साथ साथ मातृ-भूमि भारत के भी गद्दार थे ।

▣ इस्लाम की खातिर शीखों से लडते हुए शहीद नहीं हुवे ।

▣ भारत की स्वतंत्रता के विद्रोह में अंग्रेजों से लडते लडते प्राण की आहूति नहीं दी है ।

वास्तविकता ये है कि :-

वहाबी-देवबंदी पंथ के पेश्वा मोल्वी इस्माईल दहेल्वी और उसके जाहिल (अज्ञान) पीर सय्यद अहमद रायबरेल्वी को अंग्रेजों ने पंजाब और सरहद प्रांत में शीख-मुस्लिम सांप्रदायिक दंगो की अग्नि प्रजवल्ल करने के लिये भेजा था । क्यूंकि शीख और मुस्लिम दोनों कोमें अंग्रेजों के लिये "सर-दर्द" समान थीं । समग्र भारत में अपना शासन स्थापित करने में पंजाब के शीख और सरहद के पठान बाधा रुप थे । इसलिये इन दोनों शक्तिमान कौम को आपस में लडाने के लिये सांप्रदायिक दंगों की आग लगाना जरूरी था । इस धूत कार्य को अंजाम देने के लिये अंग्रेजों ने वहाबी-देवबंदी वर्ग के पेश्वाओं को नियुक्त किया । शीख और मुस्लिम सांप्रदायिक दंगो से अंग्रेज शासन को महा-लाभ था । क्यूंकि सांप्रदायिक दंगो की अग्नि में झुलसने के कारण दोनों कोमें तबाह और बरबाद अथवा कमजोर, क्षीण और दुर्बल होंगी । ऐसी परिस्थिती में पंजाब और सरहद प्रांत पर सरलता से अंग्रेजी शासन स्थापित हो सकता है ।

इसी ध्येय को द्रष्टि समक्ष रखते हूए अंग्रेजों ने वहाबी-देवबंदी पंथ के पेश्वाओं को पंजाब और सरहद प्रांत के मिशन पर संपूर्ण सहाय दे कर भेजा था । मिशन पर जाने वाले सैनिकों का समग्र खर्च, वेतन, खाद्य सामग्री, शस्त्र-सरंजाम तथा अन्य जरूरी और अनिवार्य व्यय अंग्रेजों के जिम्मे था ।

★ एक प्रसंग की तरफ द्रष्‌पात करें :-

''वहाबी सेना के भोजन की व्यवस्था अंग्रेजो द्वारा की गई''

वहाबी-देवबंदी वर्ग के प्रथम कतार के मोल्वी तथा इतिहासकार सय्यद अबूल हसन नदवी ने वहाबी-देवबंदी पेश्वा मोल्वी इस्माईल दहेल्वी और उस के जाहिल पीर (अज्ञान गुरू) सय्यद अहमद रायबरेल्वी का जीवन वृतांत दो (२) विस्तृत भागो में ''सीरते सय्यद अहमद शहीद'' के नाम से लिखा है ।

इस जीवन वृतांत में वहाबी-देवबंदी पेश्वाओं द्वारा पंजाब और सरहद प्रांत के कथित जेहाद के नाम से लडी गई लडाईयों का वर्णन अंकित है । वहाबी सेना की भोजन व्यवस्था के संदर्भ में वर्णनीय पुस्तक में एक प्रसंग का वर्णन इस प्रकार है कि :-

ناگہاں دور سے کچھ مشعلیں نظر آئیں۔ لوگوں نے قیاس آرائیاں شروع کیں۔ کسی نے کہا شاید اس نواح کے لوگ بیعت کے ارادے سے آتے ہیں۔ دوسرے نے کہا یہ عورتیں معلوم ہوتی ہیں، برسات میں ان کا دستور ہے کہ حضرت خضرؑ کی نیاز دریا پر لاکر کرتی ہیں۔ کسی نے کہا کسی کی شادی ہوگی، بارات جا رہی ہوگی۔ ابھی یہ روشنی بند ہوئی جاتی ہے۔ کچھ دیر کے بعد دید بانوں نے عرض کیا کہ مشعلیں قریب آگئیں۔ اتنے میں کیا دیکھتے ہیں کہ ایک انگریز گھوڑے پر سوار چند پالکیوں پر کھانا رکھے کشتی کے قریب آیا اور پوچھا کہ پادری صاحب کہاں ہیں؟۔ حضرت نے کشتی پر سے جواب دیا کہ میں یہاں ہوں۔ انگریز گھوڑے سے اترا اور ٹوپی میں ہاتھ میں لئے کشتی پر پہنچا اور مزاج پرسی کے

بعد کہا کہ تین روز سے میں نے اپنے ملازم یہاں کھڑے کردیئے تھے کہ آپ کی آمد کی اطلاع کریں۔ آج انہوں نے اطلاع کی کہ اغلب یہ ہے کہ حضرت قافلے کے ساتھ آج تمہارے مکان کے سامنے پہنچیں۔ یہ اطلاع پاکر غروب آفتاب تک میں کھانے کی تیاری میں مشغول رہا۔ تیار کرانے کے بعد لایا ہوں۔ سید صاحب نے حکم دیا کہ کھانا اپنے برتنوں میں منتقل کرلیا جائے۔ کھانا لے کر قافلے میں تقسیم کردیا گیا اور انگریز دو تین گھنٹے ٹھہر کر چلا گیا۔

حوالہ:- (۱) ''سیرت سید احمد شہید'' سید ابوالحسن علی ندوی۔ ناشر:- ایچ۔ایم۔سعید کمپنی، پاکستان چوک، کراچی۔ سن طباعت جولائی ۱۹۷۵ء۔ حصہ:۱، صفحہ:۲۱۷

(۲) ''سیرت سید احمد شہید'' سید ابوالحسن علی ندوی۔ ناشر:- مجلس تحقیقات ونشریات اسلام، لکھنؤ۔ ساتواں ایڈیشن۔ سن طباعت ۱۹۸۶ء۔ حصہ:۱، صفحہ:۲۷۷
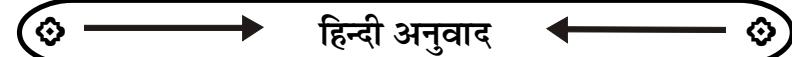
हिन्दी अनुवाद

''अचानक दूर से कुछ मशालें नजर आई । सेना के सदस्यों में अनुमान मत शुरू हूए । किसीने कहा: शायद इस विस्तार के लोग बयअत (मुरीद होने) के इरादे से आते हैं । दूसरे ने कहा : ये औरतें मालूम होती हैं, वर्षा ऋतु में इनका नियम है कि खिजर की नियाज दरिया पर ला कर करती हैं । किसीने कहा: किसी की शादी होगी, बारात जा रही होगी । अभी ये प्रकाश अद्रश्य हो जाता है । कुछ समय बाद दूरबीन द्वारा पहेरा देने वालों (Sentinel) ने कहा कि मशालें समीप आ गई । इतने में क्या देखते हैं कि एक अंग्रेज घोडे पर सवार चंद पालकियों पर भोजन सामग्री रखकर कश्ती (नाव) के करीब आया और पूछा कि पादरी

साहब कहां हैं ? हजरत ने नाव से ही उत्तर दिया कि मैं यहां हूं। अंग्रेज घोडे से उतरा और टोपी हाथ में लिये नाव पर आया, और मिज़ाज पुर्सी (कुशल-क्षेम पुछना) के बाद कहा कि तीन (३) दिनों से मैंने अपने नोकरों को यहां खडे कर दीये थे कि आपके आगमन की सूचना दें। आज उन्होंने माहिती दी कि अनुमानित है कि हजरत काफले के साथ आज तुम्हारे निवास स्थान के सामने पहुंचेंगे। ये माहिती प्राप्त होते ही सूर्योस्त तक मैं भोजन व्यवस्था में व्यस्त रहा। भोजन तैयार करा कर लाया हूं। सय्यद साहब ने आदेश दिया कि भोजन अपने वासणों में तबदील (स्थानांतरण) कर लिया जाए। भोजन ले कर काफले (सेना) में वितरण कर दिया गया, और अंग्रेज दो-तीन घन्टा ठहर कर चला गया।''

हवाला :- "सीरते सय्यद अहमद शहीद",
लेखक :- सय्यद अबुल हसन अली नदवी,
प्रकाशक नं. १ :- एच. एम. सईद कम्पनी, पाकिस्तानचोक, करांची (पाकिस्तान) प्रकाशन वर्ष :- जूलाई-१९७५, भाग नं. १, पृष्ठ नं. २१७
प्रकाशक नं. २ :- मजलिस तहकीकात व नशिरयाते इस्लाम, लखनऊ, आवृति सातवीं, प्रकाशन वर्षः- इ.स. १९८६, भाग नं. १, पृष्ठ नं. २७७

वांचक मित्रो से नम्र विनंती कि उपरोक्त हवाले को कई मर्तबा ध्यान पूर्वक पठन करें। निःशक यही पुरवार होगा कि वहाबी देवबंदी वर्ग के पेश्वा संपूर्ण स्वरुप से अंग्रेजों के हाथ बिक चुके थे। अपने जर खरीद (बिकाऊ/Money Fertility) वहाबी गुलामों

को प्रवास में भोजन की अन-उपस्थिती का कष्ट न हो, इस हेतू से अंग्रेज कितने सर्तक थे, वो देखें। इस्माईल दहेल्वी अंग्रेज आका के आदेश का पालन करते हूए शीख-मुस्लिम सांप्रदायिक दंगो की आग लगाने अपनी वहाबी सेना को ले कर कश्ती (नौका) द्वारा जल प्रवास कर रहा था। मार्ग में आने वाले स्थानों पर रहने वाले अंग्रेज कर्मचारीयों को हाई-कमान्ड द्वारा आदेश दिया गया था कि हमारे खरीदे हूए भारत और इस्लाम के गद्दार फलां दिन और फलां वक्त आप के विस्तार से पसार होंगे, लेहाजा उन के खाने-पीने का योग्य बंदोबस्त कर के रखना। इस प्रकार के आदेश प्रत्येक अंग्रेज कार्यकर्ताओं को दिये गए थे।

वर्णनीय प्रसंग में जिस अंग्रेज यजमान का वर्णन है, उस को भी हाई कमान्ड से समान आदेश मिला था। आदेश मिलते ही उसने वहाबी सेना के आगमन की प्रतिक्षा में तीन(३) दिन तक अपने आदमियों को जांच पडताल करने लगा रखे थे। लैकिन मोल्वी इस्माईल दहेल्वी की वहाबी सेना निर्धारित समय से तीन(३) दिन बाद अंग्रेज यजबान के निवास स्थान के सामने पहुंची थी।

जरा सोचो ! जिस को भारत की आजादी का महान लडवैया और मुजाहिद केह कर वर्तमान युग के वहाबी नेता गर्व अनुभवते हैं, उनका तथाकथित मुजाहिद इस्माईल दहेल्वी अंग्रेजों से लडने नहीं बल्कि अंग्रेजो द्वारा आयोजित मिजबानी खा रहा है। मोल्वी इस्माईल दहेल्वी की वहाबी-सेना का सेनापति (Commander-in-Chief) इस्माईल दहेल्वी का जाहिल पीर सय्यद अहमद रायबरेल्वी है। ये माहिती भी अंग्रेज हाई कमान्ड ने अपने यजमान अंग्रेज कर्मचारीयों को दी हूई थी। इसी लिये तो अंग्रेज यजमान ने नौका के समीप आ कर इन के सबंध में ही पृछा करते हूए कहा कि "पादरी साहब कहाँ हैं ?" इस संबोधन से आपस में एक-दूसरे के गाढ सबंध और आत्मीयता का अनुमान किया जा सकता है। मुस्लिम धर्म गुरू के

लिये ⊙ मोलाना साहब ⊙ पीर साहब ⊙ हजरत साहब इत्यादी आदरणीय संबोधन हैं, परन्तु इन इस्लामिक संबोधनों के बदले वहाबी-सेना के सेनापति को अंग्रेज यजमान ने ''पादरी'' विशेषण से संबोधित करके बंध शब्दों में इस वास्तविकता की पृष्टि की है कि इस्लाम धर्म से विचलीत (मुर्तद) हो जाने के अपराध के कारण तथा ईसाई धर्मी अंग्रेज साम्राज्य की सहायता, चापलूसी, गुलामी, चमचामगिरी और खुशामद इंव अपनी ही मातृभूमि के साथ गद्दारी तथा बेःवफाई की यही शाब्दिक शिक्षा है कि अब हम तुम्हें अपना हमदर्द, शुभ चिंतक, सह धर्मी, हमराज, हम पियाला, हम निवाला, गहरा मित्र तथा जिगरी दोस्त समझ हमारे ईसाई धर्म गुरुओं के लिये निश्चित संबोधन से ही संबोधित करते हैं।

वहाबी सेना के सेनापति के लिये अंग्रेज यजमान द्वारा प्रमेय विशेषण ''पादरी साहब'' से वहाबी सेनापति इत्ना पराचित था कि बिना विलंब शीध्र प्रत्युत्तर दिया कि ''मैं यहां हूं''। प्रकट तथा स्पष्ट स्वरुप से ''मौलाना'' के स्वांग में छूपा पादरी फौरन समझ गया कि जिस की पादरी साहब केह कर पृच्छा की जा रही है, वो ''मुल्ला पादरी मैं ही तो हूं''। फिटकार है ऐसी पापी पेट पालन की झंखना पर कि सोने के चंद सिक्कों के बदले में अपना धर्म, ईमान, स्वमान, देश भावना, देश भक्ति और मातृ भूमि का प्रेम जैसे अनिवार्य संस्कार का दीवाला निकाल कर और देश के गद्दारों और शत्रुओं की सूचि में महत्वपूर्ण तथा कलंकित स्थान रखने वाले वहाबी राजकीय नेताओं पर भी जो भूतकाल में अपने आदरणीय पेश्वाओं द्वारा अंग्रेज गुलामी की कुःचेष्टाओं पर दंभ तथा असत्यता की रेशमी चादर डालने की मिथ्या प्रवृत्ति करते हैं और देश के लिये प्राण की आहूति देने वाले शहीदों में इन की गणना करने का व्यर्थ प्रयत्न करते हैं और इतिहास को भ्रष्ट करने का महा अपराध करते हैं।

खैर अंग्रेज यजमान वहाबी सेनापति समक्ष अपनीआपत्ति व्यक्त करते हूए कहा कि सतत तीन(३) दिन से आपके आगमन की प्रतिक्षा में व्याकुल था। अपने नोकरों को आपके स्वागत के लिये सतत उपस्थित रखा था, परन्तु आप न आए और आज ये खूशखबरी मिली कि आप की पधरामणी आज हो रही है। इस लिये अतिथि सन्मान की भावना से प्रेरित हो कर सुर्योस्त समय से आपके लिये भोजन व्यवस्था में व्यस्थ रहा हूं। भोजन-पकवान व्यवस्था विधि पूर्ण करके सेवा में लाया हूं।

अंग्रेज यजमान द्वारा प्रस्तृत भोजन सामग्री का वहाबी सेनापति ने स्वीकार किया और वो भोजन सामग्री पूरे लश्कर में वितरण कर दी गई। ये इस बात का पुरावा है कि अंग्रेज यजमान दो-पांच व्यक्ति के लिये खाना नहीं लाया था बल्कि पूरी वहाबी-सेना के लिये खाने का प्रबंध कर के लाया था। एक महत्वपूर्ण बात ये है कि इस घटना के वर्णन कर्ता वहाबी इतिहासकार अलीमियां नदवी ने इस वास्तविकता का कोई निर्देशन नहीं किया कि अंग्रेज यजमान जो खाना लाया था, वो शाकाहारी (Veg.) था या मासांहारी (Nonveg) ? अगर नोनवेज खाना था, तो मांस (Motton) किस का था ? बकरी, भेंस या खिन्जीर (सुव्वर/Pig) का था ? हलाल किया हुवा था या झटके का था ? इन महत्वपूर्ण तथा अनिवार्य बाबतों की जांच किये बगैर वहाबीयों ने हलाल-हराम की परवाह किये बगैर अंग्रेज द्वारा लाया गया भोजन सफाचट कर गए। पापी पेट की पृष्टि और तृप्ति के वक्त ऐसी जांच-परताल करना पापी पेट की सेवा-पूजा में वहाबीयों के लिये बाधा रुप थी। इस लिये जो आया, वो पेट में पधरा कर वहाबी सेना पेट में अंगारे भरना वाली कहावत पर कटिबद्ध हैं।

वहाबीयों का आचरण वास्तविकता से कितना विपरित है? गुलबांगें और डींगें तो ये मारी जाती है कि हमारे वहाबी पेश्वा मातृ

भूमि की रक्षा के लिये अंग्रेजों से लडते हूए शहीद हूए हैं, लैकिन हकीकत ये है कि इतिहास के पृष्ठों में वो अंग्रेजों से लडते हूए नहीं बल्कि अंग्रेजों से खाते हूए दिखाई देते हैं ।

वर्तमान युग भ्रष्ट राजनिती धारक वहाबी मुल्ला प्रजा समक्ष अपने भूतकाल की देश सेवा की चाहे जितनी गपें मारें । लैकिन इतिहास इस वास्तविकता का मुलःशाक्षी है कि :-

- ▣ वहाबीओं के पेश्वा मोल्वी इस्माईल दहेल्वी और उस का जाहिल पीर सय्यद अहमद रायबरेल्वी अंग्रेजों से लडते हूए मातृभूमि भारत के लिये शहीद नहीं हूए और न ही इस्लाम की खातिर शीखों से लडते हूए शहीद हूए हैं ।
- ▣ इतिहास द्वारा पुरवारित वास्तविकता ये है कि अंग्रेजों ने वहाबीओं के पेश्वाओं को पंजाब और सरहद प्रांत में शीख-मुस्लिम सांप्रदायिक दंगो की आग लगाने भेजा था । ताकि दोनों कोमें आंतर विग्रह के परिणाम स्वरुप निर्बल हो जाएं। विशेष में आंतर विग्रह की अग्नि में झूलसने के कारण दोनों कोमें भारत की आजादी की लडत को भूल जाएगी ।
- ▣ अंग्रेजों के आदेश को माथे पर चडा कर वहाबी सेना पंजाब तथा सरहद प्रांत में पहुंची । वहां उन्होंने 'जेहाद' के नाम पर लूटफाट, हत्या, बलात्कार तथा अन्य अत्याचार किये और साथ में अपने बातिल (असत्य) मजहब वहाबी धर्म का भी प्रचार तथा प्रसार आरंभ किया ।
- ▣ सरहद प्रांत में वहाबीओं ने अपने धर्म का प्रचार करने में बल और अत्याचार का अतिरेक किया । निर्दोषों की हत्या, युवा महिलाओं के साथ जबरदस्ती निकाह द्वारा बालात्कार तथा अन्य अनिष्टों के कारण व्यथिथ हो कर सरहद प्रांत के सुन्नी मुस्लिम सूफी पंथी बरेल्वी विचारधारा के ''दुर्रानी

पठानों'' ने वहाबी सेना और वहाबी सेना के पेश्वाओं की इबरतनाक (प्रेरणादायक) धातकी हत्या कर डाली । मुस्लिमों ही के हाथों अपने कुःकर्मो तथा भ्रष्ट आचरण के कारण मारे जाने वाले वहाबी पेश्वाओं को आज महान देश भक्त, इस्लाम का मुजाहिद, शहीद, देश के लिये प्राण की आहुति देनेवाले, इत्यादी विशेषणों से सन्मानित करने की हीन-चेष्टा की जा रही है ।

इस पुस्तक में वहाबीओं की हकीकत खूद उन के प्रमाणित पुस्तकों द्वारा वांचक वर्ग समक्ष प्रस्तृत करने का यथाशक्ति प्रयत्न किया है । अपेक्षा है कि न्याय प्रिय वांचक वर्ग इसे कडवा सत्य समझ कर भी स्वीकार करेंगे ।

अंत में अल्लाह से प्रार्थना है कि हमें ईमान की सलामती के साथ इस्लाम के मानवता लक्षी उच्च आदेशों का पालन करने की प्रेरणा तथा मादरे वतन ''मेरा महान भारत'' की वफादारी तथा सच्ची सेवा करने की उच्च भावना अर्पण करे । (आमीन)

पोरबंदर
दिनांक :- 10/04/2018
मंगलवार

शुभ चिंतक

हस्ताक्षर :- (अवाच्य)

अल्लामा अब्दुल सत्तार हमदानी
''मस्रूफ'' (बरकाती-नूरी)

वहाबीओं और अंग्रेज़ों के मधुर सबंध

ई.स. १७५७ के प्लासी युद्ध के बाद अंग्रेज़ अति सावधान बन चुके थे। अंग्रेज़ों को हिन्दुस्तान में रहे लोगों में से मुसलमानों से ज्यादा भय था। क्यूंकि हिन्दुस्तान पर ई.स. १२०६, सुल्तान कुत्बुद्दीन अैबक के समय से मुसलमान शासन करते थे। ई.स. १२०६ से ई.स. १८५७ बहादुरशाह ज़फर के शासन के आरंभिक काल तक गुलाम वंश, खिलजी वंश, तुघलक वंश, सय्यद वंश, लोदी वंश और मुघल वंश के मुस्लिम शासको ने अखंड हिन्दुस्तान पर शासन किया था। अंग्रेज़ों ने अखंड हिन्दुस्तान में पकड जमाकर आहिस्ता-आहिस्ता शासन की धूरा स्वंय के हाथ में ली थी और मुस्लिम शासको को अज्ञातवास में रख दिया। इसलिये अंग्रेज़ों को सबसे ज्यादा भय मुस्लिमों से था। अंग्रेज़ अच्छी तरह से जानते थे कि, अंग्रेज़ी साम्राज्य की विरूद्ध जब भी विद्रोह होगा तब मुस्लिम मुख्य भुमिका में होंगे। अपनी दीर्ध द्रष्टि द्वारा अपेक्षित भावि भय को संपूर्ण बल के साथ आक्रमित होने से रोकने के लिये अंग्रेज़ों ने प्रारंभिक सावचेती स्वरूप मुसलमानों की एकता और संगठन को तोडने का षडयंत्र रचा।

अंग्रेज़ उस वास्तविकता से भी परिचित थे, बल्कि भूतकाल के अनुभवों को येह बात महत्वपूर्ण बोधपाठ स्वरूप स्वीकार चुके थे कि यदि मुसलमान एक बार संगठित हो कर युद्ध कर बेठे तो इनको पराजित करना अत्यंत कठिन है। इतिहास के पृष्ठ इस बात के मूण साक्षी हैं कि, इश्के रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के ज़ज्बे को ले कर युद्ध करने वाले मुठ्ठी भर और निहत्ते (बगैर

हथियार) इस्लाम के मुजाहिदों ने विशाल संख्याबल रखनेवाली सेनाओं को मिट्टी में मिला दिया है। इसलिये मुसलमानों को कभी संगठित नहीं होने देना चाहिए।

मुसलमानों की एक विशिष्टता ये भी अंग्रेज़ों ने गहन अध्ययन तथा संशोधन कर के जान ली थी कि मुसलमान मज़हब के नाम पर शहीद होने में एक क्षण का भी विलंभ नहीं करते। इसलिये मुसलमानों को निर्बल करने के लिये मज़हब का आश्रय लेना चाहिये। मज़हब के नाम पर मुसलमानों के भीतर मन-भेद और मत-भेद उत्पन्न कर के झगडे करवा कर उन की एकता को तोड देना चाहिए। यदि यह योजना सफल हो जाए तो मुसलमान आंतर विग्रह में इस हद तक फंस जाएंगे कि अखंड भारत में शासन स्थापित करने की कल्पना तक नहीं कर पाऐंगे। परिणाम स्वरूप भारत के मुसलमान तथा अन्य धर्म के लोगों के साथ मिलकर ब्रिटिश साम्राज्य के विरूद्ध विद्रोह का आंदोलन नहीं कर पाएंगे। इस कारण से अंग्रेज़ों ने अखंड भारत को हमेंशा के लिये अपनी गुलामी की ज़ंवीरों में बंदीवान बनाए रखने के लिये वहाबी-तबलीगी पंथ के मुल्लाओं को खरीद लिये और भारत में वहाबी-नजदी पंथ की प्रवृत्तिओं को वेगवंती बनाई जिस की संक्षिप्त जानकारी आगे के पृष्ठों में दी गई है।

वहाबी-तबलीगी जमाअत की इस्लाम विरूद्ध की मान्यताओं तथा प्रवृत्तिओं को प्रारंभ में हिन्दुस्तान के मुसलमानों ने स्वीकार नहीं किया। किन्तु वह प्रवृत्तिओं का नियमन (दोरी संचार) पडदे के पीछे रह कर अंग्रेज़ों ने किया। वहाबी-तबलीगी पंथ के मुल्लाओं को आर्थिक, सामाजिक एंव शैक्षणिक सहायता प्रदान की। दुसरी तरफ वहाबी आंदोलन का विरोध करने वाले अहले सुन्नत व जमाअत के महान आलिमों तथा उन के अनुयायीओं का सभी क्षेत्रों में उत्पीडन किया।

उपरोक्त विगतों को समझने के लिये इतिहास के पृष्ठों को पलटना आवश्यक है । यह आवश्यक कामगीरी यथाशक्ति पुर्वक पूर्ण करने के प्रयत्न स्वरूप वहाबी-तबलीगी विचारधारा रखनेवाले लेखक एंव तटस्थ लेखको द्वारा लिखे गए पुस्तकों के संदर्भ यहां प्रस्तृत करता हूं ।

सुन्नी (बिन तबलीग) आलिमों का अंग्रेज़ों के विरुद्ध जेहाद का फत्वा

ई.स. १८५७ का विद्रोह हिन्दुस्तान के इतिहास की एक महत्व पूर्ण घटना है । यह विद्रोह हिन्दुस्तान के मुसलमान तथा हिन्दुओं ने कंधे से कंधा मिलाकर अत्याचारी अंग्रेज़ शासन के विरुद्ध किया था । जिस का आधार डालने का श्रेय हिन्दुस्तान के बिन तबलीग सुन्नी मुसलमानों के सरताज आलिम, तर्क तथा फिलसूफी के महाझानी, अल्लामा फज़ले हक़ खैराबादी रहेमतुल्लाहे अलैह के सर पर है ।

यहां संक्षिप्त में भारत की आज़ादी के महान लडायक तथा मुख्य हीरो हज़रत अल्लामा फज़ले हक़ खैराबादी के जीवन के मुख्य अंश प्रस्तृत करता हूं ।

अल्लामा फज़ले हक़ खैराबादी

जन्म :- आपका जन्म ई.स.१७५७ के मुजब हि.स. १२१२ में हुआ था ।

शिक्षा :- आपने हज़रत शाह अब्दुल कादिर मुहद्दिषे देहेल्वी तथा हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिषे देहेल्वी रदिअल्लाहु अन्हुमा से शिक्षा प्राप्त की ।

शिक्षा की परिपुर्णता :-

आपने ई.स. १८०५ (हि.स.१२२४) में मात्र १३ वर्ष की छोटी आयू में आलिम फाज़िल की डिग्री प्राप्त कर ली थी । उपरांत मात्र पांच मास के कम समय में कुरआन हिफ्ज़ (कंठस्थ) कर लिया । आपने युवानी की वय तक पहुंचते पहुंचते इल्म के महान शिखरों को सर कर लिया । मन्तिक (तर्क शास्त्र) तथा फलसफा (फिलोसोफी) के विषय में आप अपने समय में ईमाम का स्थान रखते थे ।

सरकारी पद :-

ई.स. १८५७ के आज़ादी के आंदोलन में भाग लेने पूर्ण आप बडे बडे सरकारी तथा राजकीय पदो पर नियुक्त थे :-

- ✪ सर्व प्रथम आप दिल्ही रेजीडन्ट के शिरस्तेदार (अेकाउन्टन्ट जनरल) बने । बाद में आपने त्याग पत्र दे कर पद त्याग किया ।
- ✪ उस के बाद ज़िन्जर के नवाब फयज़ मुहम्मद खां के वहां राज कारभार के सलाहकार के तौर पर मासिक रु ५००/- के वेतन के साथ नियुक्त हुए ।
- ✪ वहां से अल्वर के महाराजा के सलाहकार के तौर पर नियुक्त हुए ।
- ✪ वहां से सहारनपूर के नवाब के वहां राजकीय सलाहकार की सेवा देते रहे ।
- ✪ सहारनपूर से आप रामपूर के नवाब यूसुफ अली के कानूनी सलाहकार के तौर पर आठ (८) वर्ष रहे ।
- ✪ अंत में लखनौ के सदरुस्सुदूर (चीफ जस्टिस) नियुक्त हुए। उस समय अवध में नवाब वाजीद अली का शासन था।
- ✪ वहां से आप ईस्वी १८५६ में अल्वर के महाराजा के पास आ गए । क्यूंकि आप अवध के नवाब वाजिद अली की रंगीन प्रकृति की चेष्टाओं से तंग आ गए थे ।

"इस्वी १८५७ के विद्रोह की तैयारी"

ईस्वी १८५७ के अगस्त मास के विद्रोह के आंदोलन को उग्र बनाने के लिये आप अल्वर से प्रचार करते करते दिल्ही पहुंचे ।

दिल्ही में अंग्रेज़ी साम्राज्य की विरुद्ध विद्रोह करने के लिये आप ने विशाल मात्रा में आज़ादी के सेनानीओं को अेकत्रित किया और उन सभी को आंदोलन के लिये प्रोत्साहित किया ।

आप ने दिल्ही की जामेअ मस्जिद में जुम्आ के दिन विशाल जनमेदनी समक्ष अंग्रेज़ों के विरुद्ध तकरीर (प्रवचन) किया तथा धनुष के अंतिम बाण स्वरूप अंग्रेज़ों के विरुद्ध 'जेहाद' का फत्वा दिया और आंदोलन की अग्नि को प्रजवल्लित की ।

अंग्रेज़ों के विरुद्ध आप ने 'जेहाद' का जो अैतिहासिक फत्वा दिया था, उस के समर्थन में जिस महान सुन्नी बरेल्वी (बिन-तबलीग) आलिमों ने हस्ताक्षर किया था उस में (१) मुफ्ती सदरुद्दीन आज़ूरदा (२) मौलाना अब्दुल कादिर बदायूनी (३) काज़ी फयज़ुल्लाह कश्मीरी (४) मौलाना फज़्ले रसूल बदायूनी (५) मुफ्ती ईनायत अहमद काकोरवी (६) मौलाना मुफ्ती मज़हर करीम दरियाबादी (७) मौलाना फैज़ अहमद बदायूनी (८) मुफ्ती लुत्फुल्लाह अलीगढी (९) मौलाना हिदायतुल्लाह खां रामपूरी इत्यादि ने हस्ताक्षर कर के मुसलमानों को अंग्रेज़ों के विरुद्ध जनून पुर्वक जेहाद के लिये उत्सुक किया ।

"गिरफ्तारी, मुकद्दमा"

२५, सितम्बर १८५७ के दिन विश्वासघातीओं के विश्वासघात के कारण विद्रोह असफल हो कर शांत हो गया । अत्याचारी अंग्रेज़ों

ने विद्रोह में भाग लेनेवाले 'मुजाहिदों' की सूची बनाकर उन की गिरफ्तारी शुरू की । हज़रत अल्लामा फजले हक अंग्रेज़ों की सूची में 'मोस्ट वोन्टेड' थे । आप पलायन तथा भुगर्भ में रहे परंतु एक गद्दार की बातमी के कारण आप ईस्वी १८५९ में 'सीतापूर' से गिरफ्तार किए गए । लखनऊ की कोर्ट में आप की विरूद्ध मुकद्दमा चलाने में आया । आप का मुकद्दमा जिस न्यायधीश की कोर्ट में चलता था, वह न्यायाधीश भुतकाल में अल्लामा के कनिष्ठ (जुनियर) के तौर पर कार्य कर चुके थे । इसलिये उस न्यायाधीश को आप के प्रति अनुभूति तथा सहानुभूति थी । वह न्यायाधीश कानून की मर्यादा में रह कर आप का पक्ष लेने को इच्छुक एंव उत्सुक था । उस न्यायाधीश ने अल्लामा को फत्वा से इन्कार करने की परिस्थिती में निर्दोष घोषित करने की तैयारी बताई, परंतु........

न्योछावर हो जाओ, हिन्दुस्तान की स्वतंत्रता के वह महान और निडर योद्धा पर कि जिन्होंने हिन्दुस्तान के नागरिकों को मातृभूमी की प्रतिष्ठा के लिये कुरबान होने की प्रेरणा दी और खचाखच भरी हुई कोर्ट में सिंह गर्जना करते हुए फरमाया कि "वह फत्वा सत्य है। मैंने ही वह फत्वा दिया है और आज भी मेरा मंतव्य उसी फत्वे के अनुसार है ।" न्यायाधीश ने आपको यह स्वीकार करने से रोकने की चेष्टा भी की, परन्तु आप हिमालय पर्वत की तरह अडग रहे और अंग्रेज़ों की विरूद्ध दिए गए फत्वे को वापस लेने अथवा वह फत्वे के लिये प्राश्चित करने से इन्कार कर दिया ।

फेसला/सजा

आप ने अंग्रेज़ों की विरुद्ध दिए गए जेहाद के फत्वे का स्वंय स्वीकार किया । इसलिये कोर्ट ने आप को आंदामान निकोबार (कालापानी) में आजीवन कारावास तथा आप की तमाम संपति जब्त करने की शिक्षा और दंड किया ।

बंदीवान समय तथा देहांत

कोर्ट के निर्णय के बाद आप को कैदी बनाकर आंदामान निकोबार द्वीप की जेल में भेज दिया गया । वहां की जहरीली आबोहवा (विषमय हवामान) के कारण आप अत्यंत बीमार पड गए । १ वर्ष, ९ मास तथा २५ दिन की कारावास की यातनाएं सहन कर के २०, अक्तूबर १८६२ के मुजब १२, सफर १२७८ के दिन जेल में आप का देहांत हुवा ।

संपति की जब्ती

आप धनाठ्य परिवार के सदस्य थे । पूर्वजों की लाखों की संपति आप के पास थी । वे सब संपति अंग्रेज़ों ने जब्त कर ली । जिस में उन के मकान, खेती की जमीनें तथा खैराबाद में भव्य महल, दीवानखाना, जीयनपुर गाँव, नंदुपुरा गाँव भी जब्त हुए । लाखों रूपयों की आप की अंगत लायब्रेरी भी जब्त कर ली गई ।

''ब्रिटिश अत्याचारों का भोग बनने वाले अन्य सुन्नी बरेल्वी आलिम''

अल्लामा फजले हक खैराबादी रदीअल्लाहो तआला अन्हो के 'जेहाद के फत्वे' का समर्थन करने वाले तथा अंग्रेज़ों के विरुद्ध स्वातन्त्रय संग्राम करने वाले अन्य सुन्नी बरेल्वी आलिम भी अंग्रेज़ी प्रशासन के अत्याचार का भोग बने । जिस की संक्षिप्त माहिती निम्न लिखीत है ।

''हज़रत मौलाना मुफ्ती सदरुद्दीन 'आज़ुर्दा'''

आप दिल्ही के 'सदरुस्सुदूर' (चीफ जस्टिस) के पद पर नियुक्त थे । आप का जन्म ईस्वी १७८२ में दिल्ही में हुआ था । आप शाह अब्दुल कादिर मुहद्दिष दहेल्वी के शिष्य और प्रखर सुन्नी बरेल्वी सूफी पंथी (बिन तबलीग) आलिम थे । अंग्रेज़ों के खिलाफ दिए गए 'जेहाद के फत्वे' में हस्ताक्षर करने के अपराध के आरोप में आपकी संपूर्ण संपत्ति तथा अंगत लायब्रेरी जब्त कर ली गई ।

''हज़रत मौलाना मुफ्ती ईनायत अहमद काकोरवी''

इस्वी १८५७ के विद्रोह में आप ने महत्व पूर्ण भुमिका निभाई । विद्रोह के मुख्य केन्द्र बरैली शरीफ में आप ने अंग्रेज़ों को अच्छी तरह अभिभूत किया । विद्रोह के अपराध बदल आप की गिरफ्तारी कर के मुकद्दमा चलाया गया और ईस्वी १८४८ में आंदामान निकोबार द्वीप पर आजीवन कारावास भुगतने के लिये भेज दिया गया ।

''हज़रत मौलाना किफायत अली 'काफी' शहीद''

आप बिजनौर के रहेवासी थे । आप १८५७ के पूर्व आग्रा (अकबराबाद) में स्थायी हुए थे । आप ने भी स्वतंत्र तौर पर अंग्रेज़ों की विरुद्ध 'जेहाद' का फत्वा दिया था । बरैली और मुरादाबाद विस्तार के लोगों को अंग्रेज़ों की विरुद्ध स्वातंत्रय संग्राम करने के लिये अेकत्रित किया । मुरादाबाद से अंग्रेज़ शासकों को भगाकर मुरादाबाद शहेर का कब्जा ले लिया । विद्रोह शांत होने के बाद अंग्रेज़ों द्रारा सामुहिक गिरफ्तारी का प्रारंभ हुवा । बातमी की कारण आप भी गिरफ्तार हो गए । कोर्ट में मुकद्दमा चला । अत्याचारी अंग्रेज़ों ने आप को फांसी की सजा दिलवाई । मुरादाबाद शहर के

बीच बाजार के बीच आप को अंग्रेज़ों ने खुलेआम (जाहेर में) फांसी दी ।

आप सच्चे आशिके रसूल सलल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम और महान शायर थे । 'काफी' उपनाम (तखल्लुस) से आप शायरी लिखते थे । अहले सुन्नत व जमाअत के इमाम, आ'ला हज़रत ईमाम अहमद रजा फाजिले बरेल्वी रदीअल्लाहो तआला अन्हो आप के प्रशंसक और आप की शायरी से अति-प्रभावित थे । आप (हज़रत किफायत अली काफी) के बारे में आ'ला हज़रत फरमाते हैं कि :

'काफी' सुल्ताने नअत गोयाँ है 'रजा'
इन्शाअल्लाह में वजीरे आ'जम ।

(हदाईके बख्शीश, भाग - ३)

उपरोक्त पंक्ति में ईमाम अहमद रजा ना'त कहनेवालों के 'सुल्तान' के संबोधन (खिताब) से हज़रत मौलाना किफायत अली 'काफी' शहीद की प्रशंसा कर रहे हैं और स्वंय को उन का मंत्री (वजीर) वर्णन कर रहे हैं ।

★ "हज़रत मौलाना फैज अहमद बदायूनी"

आप का जन्म ईस्वी १८११ में हुआ था । आप अपने समय के महान सूफी पंथी और बरेल्वी विचार सरणी के आलिम थे । १८४७ के विद्रोह के समय रोहेलखंड वासीओं को भारी मात्रा में अपने साथ ले कर दिल्ही पहुंच गए थे । अल्लामा फजले हक खैराबादी ने अंग्रेज़ों की विरुद्ध दीये हुए फत्वे में आप ने भी हस्ताक्षर किये थे। दिल्ही के आसपास के विस्तार में आप ने अंग्रेज़ों को अच्छी तरह अभिभूत किया था । विद्रोह शांत होने के बाद अंग्रेज़ों की "वोन्टेड लिस्ट" में आप का नाम भी समाविष्ट था । अंग्रेज़ों के हाथ में आ कर त्रास-अत्याचार का भोग न बनना पडे ईसलिये आप हमेंशा

वोन्टेड ही रहे । आप को पकडने के लिये अंग्रेज़ों ने बहुत प्रयास किए परन्तु आप अंत तक पकड में नहीं आए ।

भागदौड में आप कहीं चले गए । बाद में आप का क्या हुवा? इस की जानकारी आज तक प्राप्त नहीं हुई ।

★ "हज़रत मौलाना काफी फयजुल्लाह कश्मीरी"

अल्लामा फजले हक खैराबादी ने अंग्रेज़ों की विरुद्ध दीये हुए जेहाद के फत्वे में हस्ताक्षर करने के जुर्म में अंग्रेज़ों ने आप को फांसी की सजा दे कर अत्याचार का एक अधिक उदाहरण प्रस्तृत किया ।

उपरोक्त वर्णनीय आलिमों के अलावा अनेक सुन्नी बरेल्वी सूफी पंथी (बिन तबलीग) आलिमों को अंग्रेज़ों ने हिन्दुस्तान की वफादारी और अंग्रेज़ी साम्राज्य विरुद्ध 'विद्रोह' के अपराध में फांसी, आजीवन कारावास, संपति जब्त, सीमापार वगेरे सजाएं दीं । जिस में हकीम अब्दुल हक इब्ने हकीम बख्श, खयातनाम शायर मौलाना ईमाम बख्श सेहबाई, सूफी मियां हसन अस्करी, हकीम ईमामुद्दीन, मुफ्ती मजहर करीम दरियाबादी, सय्यद ईस्माईल हुसैन मुनीर शिकोहाबादी वगेरे का समावेश होता है ।

वर्णनीय बिन तबलीग सुन्नी बरेल्वी सूफी पंथी आलिमों के उपरांत अनेक ओल्मा अंग्रेज़ों के खिलाफ आंदोलन करने के कारण अत्याचार के भोग बने । वे सब का वर्णन करना यहाँ अशक्य है । संक्षिप्त में बिन तबलीग बरेल्वी सूफी पंथी विचारधारा रखने वाले केवल सुन्नी उल्मा ही नहीं परन्तु सुन्नी जनता, समाज सेवको, कार्यकर्ताओ, आगेवानो, प्रत्येक एक प्लेटफोर्म पर एकत्रित तथा संगठित हो कर अंग्रेज़ी साम्राज्य के जड़मूल उखेडने तथा अखंड भारत को स्वतंत्रता अर्पण करने के लिये सर पर कफन बांध कर मेदाने जंग में उतर पडे थे ।

परन्तु अफसोस........, कुछ केवल नाम के तथा कथित मुस्लिमों कि जो वास्तव में अंग्रेज़ों के पीठ्ठु, प्यादे और गुलाम थे । उन्होंने हमारे देश के साथ बेवफाई की और मुसलमानों को गलत पंथ पर ले जाने के लिये प्रयत्नशील रहे ।

हिन्दुस्तान के इतिहास में वहाबी-तबलीगी जमाअत के मुखियाओं के नाम 'काले-अक्षरो' से कलंक स्वरूप अंकित हुए हैं। हिन्दुस्तान का सुन्नी बरेल्वी मुस्लिम नागरिक कभी भी अंग्रेज़ों के वफादार और हिन्दुस्तान के गद्दार वहाबी-तबलीगी मुल्लाओं को क्षमा नहीं करेगा ।

"हिन्दुस्तान की आजादी की कोशिश करने वालों का विरोध किस ने किया ?"

मादरे वतन भारत को श्वेत चर्मधारी अयाचारी अंग्रेज़ों की गुलामी की बेडियों से मुक्त करवा कर 'स्वतंत्रता' प्रदान करने के लिये देश के सपुत प्राण की आहुति देने के लिये टूट पडे थे । वह लडत में मुस्लिमों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा मुस्लिमों को इस लडत में सहभागी बनने के लिये सुन्नी आलिमों ने प्रत्साहित किया । अल्लामा फजले हक खैराबादी जंगे आजादी के मुख्य हिरो की तरह छा गए ।

परन्तु...... अफसोस कि अंग्रेज़ों की गुलामी का पट्टा गले में बांध कर, अंग्रेज़ों की वफादारी निभा कर, यह देश को अधिक अवधि तक अंग्रेज़ों की गुलामी में बंदीवान रखने का पाप करने वाले 'वतन-फरोश' जंगे आजादी के विलन के तोर पर हमेंशा के लिये बदनाम हो गए ।

संदर्भ - १

"मोल्वी ईस्माईल साहब ने फरमाया कि अंग्रेज़ों के अहद में मुसलमानों को कुछ अजिय्यत नहीं पहुंची और यूं कि हम अंग्रेज़ों की रिआया हैं, अपने मजहब की रू से ये बात 'फर्ज' है कि अंग्रेज़ों से जेहाद करने में हम कभी शरीक न हों ।

संदर्भ :- "मजाहिबुल इस्लाम", लेखक :- नजमुल गनी रामपूरी, पृष्ठ :- ६६२

हिन्दी अनुवाद

"मोल्वी ईस्माईल साहब ने आदेश दिया कि अंग्रेज़ों के युग में मुसलमानों को किसी भी प्रकार की यातना नहीं पहुंची तथा जैसा कि हम अंग्रेज़ों की प्रजा हैं । हमारे मजहब की द्रष्टि से यह बात फर्ज है कि अंग्रेज़ों की विरुद्ध जेहाद करने में हम कदापी भाग न लें ।"

संदर्भ - २

"मशहूर यह है कि आपने अंग्रेज़ों से मुखालिफत का कोई एलान नहीं किया, बल्कि कलकत्ता या पटना में उन के साथ तआवुन का इजहार किया ।"

संदर्भ :- 'अल-कुरआन' मासिक का शहीद नंबर, माहे शाबान, स.हि. १३५५, संपादक :- मोल्वी मन्जूर नोअल्लमानी, प्रकाशक :- जामेआ प्रेस, दिल्ही, पृष्ठ नं:७६

"प्रसिद्ध यह है कि आपने (मोल्वी ईस्माईल दहेल्वी) अंग्रेज़ों के विरोध की कोई धोषणा नहीं की बल्कि कलकत्ता और पटना में उन (अंग्रेज़ों) के साथ सहयोग की अभिव्यक्ति की ।"

उपरोक्त दोनों संदर्भ के पठन के बाद अब एक संदर्भ ऐसा प्रस्तृत करता हूँ जिस के पठन से पाठकों समक्ष वहाबी-तबलीगी जमाअत के ईमामे अव्वल (प्रथम ईमाम) मोल्वी ईस्माईल दहेल्वी की अंग्रेज़ों के बारे में नीती स्पष्ट हो जाएगी ।

संदर्भ - ३

"कलकत्ता में जब मौलाना ईस्माईल साहब ने जेहाद का वअज फरमाना शुरू किया है और शीखों के मज़ालिम की कैफियत पैश की है तो एक शख्स ने दरियाफ्त किया, आप अंग्रेज़ों पर जेहाद का फत्वा क्यूं नहीं देते ? आप ने जवाब दिया, उन (अंग्रेज़) पर जेहाद करना किसी तरह वाजिब नहीं । एक तो उन की रेयत हैं, दूसरे हमारे मजहबी अरकान के अदा करने में वो जरा भी दस्त अंदाजी नहीं करते । हमें उन की हुकूमत में हर तरह की आजादी है, बल्कि उन पर कोई हमला आवर हो तो हम मुसलमानों पर फर्ज है कि वो उस से लडे और अपनी गवर्मेन्ट पर आंच न आने दे ।"

संदर्भ :- 'हयाते तय्यबह', लेखक :- मिर्जा हयरत दहेल्वी, प्रकाशक :- फारूकी पब्लीकेशन, दिल्ही, पृष्ठ :- २९६

"कलकत्ता में जब मौलाना ईस्माईल साहब ने जेहाद के प्रवचन का आरंभ किया और शीखों के अत्याचार की परिस्थिती प्रस्तृत की तो एक व्यक्ति ने पूछा कि आप अंग्रेज़ों पर जेहाद का फत्वा क्यूं नहीं देते ? आप ने उत्तर दिया कि, उन (अंग्रेज़ों) पर जेहाद करना किसी भी प्रकार उचित नहीं । प्रथम तो हम उन की प्रजा हैं, दूसरा यह कि हमारे धार्मिक कार्य पूर्ण करने में वे लेशमात्र भी हस्तक्षेप नहीं करते । हमको उन के शासन में सभी प्रकार की स्वतंत्रता है। बल्कि यदि कोई उन पर आक्रमण करे, तो मुसलमानों का फर्ज (कर्तव्य) है कि वे वह आक्रमणखोर से लडे और अपनी गवर्मेन्ट को आंच न आने दे ।"

✪ अधिक एक हवाले पर द्रष्टिपांत करें :-

संदर्भ - ४

"सय्यद साहब, मोल्वी ईस्माईल साहब ने अंग्रेज़ों से जेहाद करने का ईरादा नहीं किया और मोल्वी ईस्माईल साहब ने कलकत्ता में अपनी मजलिसे वअज में बरमला कह दिया कि हम को अंग्रेज़ों से जेहाद करना जाईज नहीं ।"

संदर्भ :- 'ईशाअतुस्सुन्नत', लेखक :- मोल्वी मुहम्मद हुसैन बटाल्वी, भाग-२, झमीमा-६, पृष्ठ :- ५

"सय्यद साहब तथा मोल्वी ईस्माईल साहब ने अंग्रेज़ों के विरुद्ध जेहाद करने का ईरादा नहीं किया था और मोल्वी ईस्माईल साहब ने कलकत्ता में अपने प्रवचन की सभा में कह दिया कि हमारे लिये अंग्रेज़ों से जेहाद करना जाईज नहीं है।"

उपरोक्त चार (४) संदर्भ के पठन से स्पष्ट रूप से सिद्ध हो गया कि मोल्वी इस्माईल दहेल्वी तथा उन के पीर सय्यद अहमद अंग्रेज़ों की विरूद्ध जेहाद करने के तीव्र विरोधी थे।

मोल्वी इस्माईल दहेल्वी, जिस को वहाबी-तबलीगी पंथ के अनुयायी अपना सर्वमान्य मुख्या तथा इमाम के तौर पर स्वीकार करते हैं। उपरांत उन को 'मोलाना शहीद' के टाइटल से याद (स्मरण) करते हैं। मोल्वी इस्माईल दहेल्वी ने भारत में सर्व प्रथम वहाबी-नजदी पंथ की बुनियाद रखी थी। उन्होंने वहाबी-नजदी पंथ के स्थापक मुहम्मद इब्ने अब्दुल वहाब नजदी के पुस्तक "अत्तोहीद" (अरबी) का उर्दु में अनुवाद करके "तकवीयतुल ईमान" नामक किताब लिखी। यह पुस्तक ने समस्त हिन्दुस्तान के मुसलमानों को विवाद के भंवर में डाल दिया। मोल्वी इस्माईल दहेल्वी की वर्णनीय किताब गुमराही से भरपूर थी और इस के खंडन में उस समय के महान सुन्नी बरेल्वी सूफी पंथी आलिमों ने कुल तीस (३०) किताबें लिखी थीं। जिस में जंगे आजादी के महान शूरवीर हज़रत अल्लामा फजले हक खैराबादी की किताब 'तहकीकुल फत्वा' तथा मौलाना अबुल कलाम आजाद के पिता हज़रत मौलाना खैरुद्दीन की दस (१०) विस्तृत भाग में लिखी गई किताब 'अल-रजमुश्शयातीन' महत्व की किताबें हैं। उपरांत मौलाना अबुल कलाम आजाद के

पिता हज़रत मौलाना खैरुद्दीन ने तो वहाबीओं को काफिर तथा मुर्तद का फत्वा भी दे दिया था। संक्षिप्त में उस समय के भारत के अधिकांश (अकषर) आलिम, मोल्वी इस्माईल दहेल्वी के नये पंथ वहाबी फिर्के के गंदे (मलिन) अकीदों की विरूद्ध में थे।

उपरोक्त वास्तविकता को लक्ष में रख कर, अब एक महत्व की साबिती तरफ द्रष्टिपात करते है।

संदर्भ - ५

"हंगामा ईस्वी १८५७ में पुरे जोश के साथ अंग्रेज़ों के खिलाफ हिस्सा लेने वाले वो सब के सब उलमाए किराम शामिल थे, जो अकीदए हज़रत सय्यद अहमद और हज़रत शाह इस्माईल के शदीद तरीन दुश्मन थे, और जिन्होंने हज़रत शाह इस्माईल के रद्द में बहुत सी किताबें लिखी हैं। और अपने शागिर्दों को लिखने की वसिय्यत की है।"

संदर्भ :- हाशिया :- 'मकालाते सर सय्यद', लेखक :- मुहम्मद इस्माईल पानीपती, प्रकाशक :- मजलिसे तरक्कीये अदब, लाहोर, पाकिस्तान, ईस्वी १९६४, भाग - २६, पृष्ठ : ३५२

हिन्दी अनुवाद

"इस्वी १८५७ के विद्रोह में पूरे जोश के साथ अंग्रेज़ों के विरुद्ध जंग में हिस्सा लेनेमें वे तमाम आदरणनीय आलिम शामिल थे कि जो हज़रत सय्यद अहमद और हज़रत शाह इस्माईल के अकीदे के कट्टर शत्रु थे। तथा जिन्होंने हज़रत शाह इस्माईल के खंडन में अनेक किताबें लिखी हैं और अपने शिष्यों को लिखने की वसिय्यत की है।"

उपरोक्त पेरिच्छेय (पैराग्राफ) के पठन के बाद यह बात में शंका को जरा भी स्थान नहीं है कि उस समय मुसलमान दो विभाग में विभाजीत थे । अंग्रेज़ों के विरोधी तथा अंग्रेज़ों के हितेच्छु ।

अंग्रेज़ों का विरोध तथा अंग्रेज़ो के विरुद्ध विद्रोह करनेवाले सुन्नी बरेल्वी सूफी पंथी आलिम तथा जनता थी ।

तथा

अंग्रेज़ों के कृतज्ञ, उन के शुभ चिंतक तथा अंग्रेज़ों की विरुद्ध विद्रोह करने से लोगों को रोकने वाले देवबंदी, वहाबी-तबलीगी पंथ के मुल्ले थे ।

देवबंदी-वहाबी-तबलीगी जमाअत के मुखियों ने अंग्रेज़ों की नमक हलाली का हक अदा करने के कर्तव्य से इस्वी १८५७ के विद्रोह को असफल बनाने का यथाशक्ति प्रयास किया । अंग्रेज़ों की विरुद्ध युद्ध में जानेवाले मुजाहिदों के उत्साह को तोडने के लिये मजहब का आश्रय लिया । यहांतक कि अंग्रेज़ी साम्राज्य की विरुद्ध 'जेहाद' करने वाले मुजाहिदों को उपद्रही, दंगाई, पापी, बागी तथा कुकर्मी कहा और अंग्रेज़ों के पिट्ठु और मादरे वतन हिन्दुस्तान के गद्दारों को 'मुजाहिद' तथा 'बुद्धिमान' कहा ।

संदर्भ - ६

"मुफसिदा इस्वी १८५७ में जो मुसलमान शरीक हुए थे, वो सख्त गुनाहगार और ब-हुक्मे कुरआनो हदीष वो मुफसिद, बागी और बद-किरदार थे । अकषर उन में अवाम कल-अनाम थे । बअज जो खवास व उलमा कहेलाते थे, वो भी अस्ले दीन (कुरआनो हदीष) से बे-बेहरा थे, या ना-फहम व बे-समझ थे । बा-खबर और समझदार उल्मा इसमें हरगिज़ शरीक नहीं हुए ।"

हवाला :- "अल-इक्तेसाद फी मसाएलिल जेहाद"
लेखक:- अबू-सईद मुहम्मद हुसैन लाहौरी, एडिटर :- रिसाला इशाअतुस्सुन्नत, विकटोरीया प्रेस, पृष्ठ : ४९

हिन्दी अनुवाद
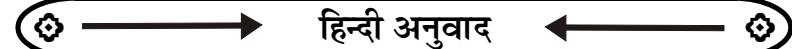
"ईस्वी १८५७ के विद्रोह में जिन मुस्लिमो ने भाग लिया वे अत्यंत पापी तथा कुरआन और हदीष के आदेश अनुसार फसादी, बागी तथा कुकर्मी थे । वे विद्रोहीयो में अधिकांश सामान्य अज्ञानी लोग पशू जैसे थे । जो खास लोग तथा आलिम कहेलाते थे, वह भी धर्म की अस्ल से वंचित अथवा मुर्ख तथा ना-समझ थे । खबरदार और समझदार आलिम उस में कदापी शामिल नहीं हुए ।"

उपरोक्त हवाले से यह बात सिद्ध हो गई कि वहाबी-देवबंदी जमाअत के विद्रान लेखक के कथन अनुसार इस्वी १८५७ की जंगे आजादी में हिस्सा लेने वाले महान मुजाहिद जैसा कि अल्लामा फजले हक खैराबादी वगेरे आलिम होते हुए भी धर्म से अज्ञात, बेवकूफ तथा नासमझ थे । और अंग्रेज़ों के गुलाम मोल्वी इस्माईल दहेल्वी जैसे मुल्ले ही सही अर्थ में दीनदार और समझदार थे ।

आश्चर्य तो इस बात का है कि वर्तमान समय के वहाबी-तबलीगी जमाअत के अनुयायी अपने पूर्वज मुखियाओं के काले कारनामे के कारण शरमाते भी नहीं । बल्कि हिन्दुस्तान की आजादी की जंग के शत्रू, मादरे वतन हिंद के गद्दार, अंग्रेज़ों के हाथ पर बिके हुए और भारत के इतिहास में 'महा कलंकित' कपुतों के तौर पर साबित हुए मुल्ले जैसा कि मोल्वी इस्माईल दहेल्वी, सय्यद अहमद वगेरे को 'शहीद' तथा 'मुजाहिद' के शिर्षक दे कर बे-शर्मी

का अद्रितिय उदाहरण दे रहे है। ऐसे राष्ट्र विरोधी तत्वों को शहीद तथा मुजाहिद कहेना गधे को सिंह कहने के समान है।

मोल्वी इस्माईल दहेल्वी और उस के पीर सय्यद अहमद ने केवल बोल कर ही स्वातंत्र्य संग्राम का खंडन नहीं किया बल्कि अंग्रेज़ी साम्राज्य की जड़ें मजबूत करने के लिये तलवार ले कर युद्ध करने के लिये रण मेदान में कुद पडे। किस के सामने लडते ? अंग्रेज़ों की विरुद्ध ? नहीं, बल्कि अंग्रेज़ों की विरुद्ध विद्रोह कर के अंग्रेज़ों को हिन्दुस्तान की भूमि से तडीपार करने का आंदोलन करने वाले मुजाहिदों के खिलाफ, अंग्रेज़ों के इशारो पर कठपुतली बनकर नाचने वाले वहाबी-तबलीगी जमाअत के सरदार अपने 'धर्मबंधु' और 'देशबंधु' पर तलवार का उपयोग कर रहे थे। ईसाई धर्म के प्रतिनिधिओं को खुश करने के लिये 'अहले ईमान' को मारने के लिये उत्सुक हुए थे। मुसलमानों के 'खूने नाहक' के पाप को 'जेहाद' में समाविष्ट कर के बहुत बडे बे-शर्म होने का द्रष्टांत दे रहे थे।

"अंग्रेज़ों के बदले हिन्दुस्तान के सुन्नी मुसलमानो के खिलाफ युद्ध"

हवाला :-

''हज़रत ने इसी सिलसिले में फरमाया कि हाफिज जानी साकिन अंबेठा ने मुझ से बयान किया था के हम काफिले के हमराह थे। बहुत सी करामतें वकतन-फ-वकतन हज़रत सय्यद साहब से देखी। मोल्वी अब्दुल हय्य साहब लखनवी, मोल्वी मुहम्मद इस्माईल साहब दहेल्वी और मोल्वी मुहम्मद हुसैन

साहब रामपूरी भी हमराह थे। और ये सब हजरात सय्यद साहब के हमराह जेहाद में शरीक थे। सय्यद साहब ने पहेला जेहाद मुसम्मा यार मुहम्मद खाँ, हाकिमे यागिस्तान से किया था।''

हवाला :- मोल्वी रशीद अहमद गंगोही के जीवन वृतांत के तौर पर लिखी गई किताब ''तजकिरतुर्रशीद'' लेखक :- मोल्वी आशिक इलाही मेरठी, प्रकाशक :- मक्तबा नोअल्लमानिया, देवबंद (यू.पी.) भाग-२, पृष्ठ : २७०

हिन्दी अनुवाद

''हज़रत ने इसी संदर्भ में फरमाया कि हाफिज जानी, अंबेठा के वासी ने मेरे समक्ष वर्णन किया था कि हम काफिले में साथ थे। बहुत सी करामतें (चमत्कार) बहुधा सय्यद साहब से देखने को मिली। मोल्वी अब्दुल हय्य साहब लखनवी, मोल्वी मुहम्मद इस्माईल दहेल्वी तथा मोल्वी मुहम्मद हुसैन साहब रामपूरी भी साथ में थे और वे सब महानुभाव सय्यद साहब के साथ जेहाद में शरीक थे। सय्यद साहब ने प्रथम जेहाद यार मुहम्मद खाँ नामधारी यागिस्तान के हाकिम के खिलाफ किया था।''

उपरोक्त अनुच्छेय पढने से स्पष्ट तौर पर साबित हो गया कि वहाबी-देवबंदी-तबलीगी जमाअत के इमाम मोल्वी इस्माईल दहेल्वी और उस के गुरू सय्यद अहमद ने सर्व प्रथम यागिस्तान के शासक तथा मुस्लिम कल्मा-गो यार मुहम्मद खाँ पर आक्रमण किया था। यदि वह आक्रमण को इस्लामी न्याय के तराजू पर तोला जाए तो उस को निस्संदेह जुल्मो-सितम, अत्याचार, अन्याय, लूटफाट, डकैती

जैसे विशेषण ही मिलेंगे। परन्तु बेशर्मी सीमापार हो चुकी है। ऐसे लूंटेरे और डाकूओं को वहाबी-तबलीगी जमाअत के लोग जंगे आजादी के योद्धा और 'शहीद' निरुपण कर रहे है।

अंग्रेज़ों के खिलाफ जेहाद की जगह अंग्रेज़ों की तरफ से देशबंधूओं से लडने वाले हिन्दुस्तान के गद्दार तथा अंग्रेज़ों के वफादार वहाबी-तबलीगी जमाअत के मुखिया सरहद के मुसलमानों के विरुद्ध किस नीति के अनूसार युद्ध कर रहे थे वह समझना भी आवश्यक है।

मैसूर में टीपू सुल्तान का शासन तथा मराठावाड में मराठाओं की शक्ति को नष्ट करने के बाद पंजाब, कश्मीर, मुल्तान और सरहद के प्रांत अंग्रेज़ों के लिये सरदर्द थे। अन्य प्रांत में अंग्रेज़ों ने अपने शासन की जडें मजबूत कर ली थीं परन्तु वर्णनीय प्रांत में वे सफल नहीं हो पा रहे थे। पंजाब के शीख तथा सरहद के पठान अंग्रेज़ों की जरा भी चलने नहीं देते थे। शीख तथा पठान दोनों कौम को निर्बल कर के, वह प्रांत पर अधिकार जमाना अंग्रेज़ों के लिये अति आवश्यक तथा अनिवार्य था। अंग्रेज़ों ने प्रत्यक्ष आक्रमण करने की योजना बनाई थी पर वह योजना का पालन करने से भयभीत थे। क्यूंकि शीख और पठान दोनों लडायक कौम थी। दोनों कौम के विरुद्ध अंग्रेज़ों की योजना सफल नहीं हो सकती थी। अंत में अंग्रेज़ों ने गिदडवृत्ति अपनाकर अपने गुलामों की सेवा लेने का निर्णय किया।

वहाबी-तबलीगी जमाअत के प्रथम इमाम मोल्वी इस्माईल दहेल्वी और उस के पीर सय्यद अहमद अपनी सेवाओं को अंग्रेज़ों को अर्पण करने के लिये कटिबद्ध तथा करारबंद थे। अंग्रेज़ों ने वे दोनों को सरहद के प्रांतों को कब्जे में लेने के लिये प्राथमिक तैयारी के लिये भेजा। अंग्रेज़ों ने उन दोनों को जो योजना समझाई वह निम्नलिखीत है।

मुसलमानों को शीखो के विरुद्ध युद्ध करने के लिये उकसाया जाए तथा मुसलमानों को शीखों के विरुद्ध उकसाने के लिये ऐसा प्रचार किया जाए कि निर्दोष मुस्लिमों के उपर शीख अत्याचार कर रहे हैं। इसलिये हमें इस अत्याचार का बदला लेना चाहिये। यह युक्ति पंजाब में अपनाई जाए कि जिस से पंजाब में शीख-मुस्लिम जंग शुरू हो जाए। जिस के परिणाम से पंजाब में शीख कमजोर हो जाएंगे।

सरहद के विस्तार में जहां मुसलमान बहुमती में हैं वहां पर वहाबी धर्म की मान्यताओं का प्रचार कर के मुस्लिमों को धर्म के नाम पर लडाई करवा कर कमजोर करना।

उपरोक्त कार्य जो यह दोनों हिन्दुस्तानी गद्दार अच्छी तरह पूर्ण कर सकें और इच्छनीय परिणाम आए तो अंग्रेज़ों के लिये उन प्रांतो पर अधिकार जमाना आसान हो जाए।

मोल्वी इस्माईल दहेल्वी और सय्यद अहमद अंग्रेज़ों द्वारा अर्पण किया गया शस्त्र-सरंजाम तथा आर्थिक सहायता के जोर पर सरहदी विस्तार में जेहाद के लिये गए। यह तथाकथित 'जेहाद' इस्लाम के लिये नहीं बल्कि 'ईसाईयों' को मजबूत करने के लिये था। अंग्रेज़ों के जो भी विरोधी हों उन को नष्ट करने के लिये था। वे विरोधी हिन्दु, शीख हो या फिर मुसलमान हो। अंग्रेज़ों के गुलाम अपने मालिक के विरोधीओं को सबक सिखाने के लिये कैसे-कैसे खेल खेल रहे थे उस की विस्तृत चर्चा यहाँ शक्य नहीं है, इसलिये संक्षिप्त में प्रस्तृत की है। यह विषय की विस्तृत माहिती यदि किसी को प्राप्त करनी हो वह टूंक समय में प्रकाशित होने वाली मेरी किताब 'इस्लाम तथा भारत के गद्दार कौन ?' का अवश्य वांचन करे। इस विषय के कुछ हवाले यहाँ प्रस्तृत करता हूँ।

हवाला : १

"इस सवानेह और नीज मक्तूबाते मुन्सलिका से साफ मालूम होता है कि सय्यद साहब का सरकारे अंग्रेज़ी से जेहाद करने का हरगिज इरादा नहीं था। वो इस आजाद अमलदारी को अपनी ही अमलदारी समझते थे और इस में शक नहीं कि अगर सरकारे अंग्रेज़ी उस वक्त सय्यद साहब के खिलाफ होती, तो हिन्दुस्तान से सय्यद साहब को कुछ मदद न पहुंचती, मगर सरकारे अंग्रेज़ी उस वक्त दिल से चाहती थी कि शीखों का जोर कम हो।"

हवाला :- "सवानेह अहमदी" लेखक :- मुहम्मद जाफर थानेसरी, प्रकाशक :- मक्तबए फारूकी, दिल्ही, पृष्ठ : १३९

हिन्दी अनुवाद

"इस जीवन वृतांत तथा संलग्न पत्रो द्वारा स्पष्ट हो रहा है कि सय्यद साहब की अंग्रेज़ी सरकार के खिलाफ जेहाद करने की कदापी इच्छा नहीं थी। वह यह स्वतंत्र वहीवटीतंत्र को अपना ही वहीवटीतंत्र समझ रहे थे। और इस में भी शंका नहीं है कि अगर अंग्रेज़ी सरकार सय्यद साहब के विरुद्ध होती तो हिन्दुस्तान से सय्यद साहब को किसी भी प्रकार की सहायता न पहुंचती, परन्तु अंग्रेज़ सरकार उस समय दिल से यह चाहती थी कि शीखों की शक्ति कम हो जाए।"

उपरोक्त अनुच्छेद से साबित हो रहा है कि सय्यद साहब का जेहाद इस्लाम को मजबूत करने के लिये नहीं बल्कि अंग्रेज़ों को

ताकतवर करने के लिये था। शीखों की ताकत (शक्ति) कम करने का अंग्रेज़ दिल से चाह रहे थे। इसलिये सय्यद साहब शीखों के सामने लडे थे। सय्यद साहब की अंग्रेज़ सहायता कर रहे थे और करते भी क्यूं नहीं ? अपना पालतु कुत्ता अपने लिये जो लड रहा है। अपने कंधो पर हमारी राइफल का वजन उठा रहा है। वो अपना ही है और हमको भी अपना ही समझ रहा है।

सय्यद साहब अंग्रेज़ों के प्रशासन को अपना ही प्रशासन समझने जैसी आत्मीयता रखते थे। अंग्रेज़ों के खिलाफ जेहाद करने की कदापी इच्छा नहीं थी। अंग्रेज़ों के विरुद्ध हिन्दुस्तान की स्वतंत्रता के लिये लडने का कार्य सय्यद साहब का नहीं था। सय्यद साहब का काम तो अंग्रेज़ों की तरफ से हिन्दुस्तान के मुजाहिदों से लडना था। सय्यद साहब से लडने के कारण हिन्दुस्तानी कमजोर होंगे फिर उस के बाद अंग्रेज़ों के खिलाफ लम्बी अवधी तक नहीं लड सकेंगे। इसका परिणाम यह आएगा कि हिन्दुस्तानी तूट पडेंगे और फिर अंग्रेज़ अपनी अधिकारिता सरलता से स्थापित कर सकेंगे।

सय्यद साहब ने दूसरा कार्य यह भी किया कि जो लोग अंग्रेज़ों को हिन्दुस्तान से निकालने के लिये अंग्रेज़ों की विरुद्ध युद्ध कर रहे थे, उन को मना करना तथा अंग्रेज़ों के शत्रु शीख के खिलाफ लडने के लिये उकसाना।

हवाला : २

"सय्यद साहब की बराबर रविश ये रही कि एक तरफ लोगों को शीखों के मुकाबिल आमाद-ए-जेहाद करते और दूसरी जानिब हुकूमते बरतानिया की अमन पसंदी जता कर लोगों को उस के मुकाबले से रोकते थे।"

हवाला :- ''मकालाते सर सय्यद'' लेखक :- सर सय्यद अहमद खाँ, प्रकाशक :- मजलिसे तरक्कीए अदब, इस्वी : १९६२, लाहौर, भाग-२६, पृष्ठ : २५२

हिन्दी अनुवाद

''सय्यद साहब का अविरत यह वर्तन रहा कि एक तरफ वे लोगों को शीखों की विरुद्ध जेहाद करने की प्रेरणा देते और दूसरी तरफ वे ब्रिटीश शासन की शांतिप्रियता व्यक्त कर के लोगों को उन का मुकाबला करने से रोकते थे।''

वहाबी-तबलीगी जमाअत के मुखिया अंग्रेज़ों की गुलामी और नमक हलाली का हक सच में अदा कर रहे थे। मुसलमानों को शीखों के खिलाफ लडने के लिये उक्सा रहे थे। दूसरी तरफ अंग्रेज़ों के खिलाफ हिन्दुस्तानी मुसलमानों के आक्रोश को शांत करने के लिये अंग्रेज़ों की शांती प्रिय नीती के गुण गा रहे थे। एक ही तीर से दो निशाने लगा रहे थे। शीख तथा मुसलमानों को आंतर विग्रह में झोंक कर दोनों तरफ तबाही कर रहे थे। शीख की मृत्यु हो या मुसलमान की मोत हो, मरेंगे तो अंग्रेज़ के शत्रु की ही मृत्यु होगी। हमारा मिशन अंग्रेज़ प्रशासन के शत्रुओं की शंख्या को कम करना है, जो सफल हो रहा है।

हवाला : ३

''मुसलमानाने सरहद व पंजाब पर शीखों ने अपने जमान-ए-उरूज में जो मजालिम किए थे, उन से मुतास्सिर हो कर मौलाना सय्यद अहमद और उन के खलीफा मौल्वी मुहम्मद इस्माईल ने इस्वी १८२२

में जो सिलसिल-ए-जेहाद शुरू किया था, वो इस्वी १८४७ तक जारी था, ता आं कि अंग्रेज़ों ने पंजाब पर कब्जा किया।''

हवाला :- ''उन्नीस्वीं सदी का अफसान-ए-तबाही'' लेखक :- मुहम्मद अमीन जुबैरी तथा 'माहे नौ' कराची का खास अंक, ब-यादगार तेहरीके आजादी, पृष्ठ : २५

हिन्दी अनुवाद

''सरहद प्रांत तथा पंजाब के मुसलमानों पर शीखों ने अपने उन्नती के समय में जो अत्याचार किए थे उन से प्रभावित हो कर मौलाना सय्यद अहमद और उन के खलीफा (अनुगामी) मुहम्मद इस्माईल ने इस्वी १८२२ में जेहाद का जो सिलसिला शुरू किया था, वो इस्वी १८४७ तक चालु रहा था, यहाँ तक कि अंग्रेज़ों ने पंजाब पर कब्जा कर लिया।''

योजना सफल हुई। अंग्रेज़ों की इच्छा पूरी हुई। इस्वी १८२२ से मोल्वी सय्यद अहमद और मोल्वी इस्माईल दहेल्वी ने शुरू की हुई लडाई आखिर सफल हुई और इस्वी १८४७ यानी २५ वर्ष बाद पंजाब अंग्रेज़ों के कब्जे में आ गया।

हालाँकि मोल्वी इस्माईल दहेल्वी और उस के गुरू सय्यद अहमद इस्वी १८४७ से पहले ही सरहद के मुस्लिमो द्वारा मारे गए। परन्तु उन्होंने शुरू किए हुए मुस्लिम-शीख दंगे इस्वी १८२२ से १८४७ तक जारी रहे। थोडा सोचे। जिस प्रांत में लगातार २५ वर्ष तक दो के बीच लडाई जारी रही होगी वहाँ बसने वाले लोगों की क्या परिस्थिती हुई होगी? वर्तमान समय में बार-बार कौमी दंगे होते हैं। वे एक-दो दीन, सप्ताह या अधिकतम एक माह तक सिमित होते

हैं, परन्तु वह समय भी कितना कष्टदायक और दर्दनाक होता है कि प्रजा परेशान हो जाती है। यहाँ तक कि कोमी हिंसा से निकलने के बाद भी वर्षो तक उस से भयभीत रहते है। तो जरा सोचें, जिस प्रांत में २५ वर्ष तक कौमी दंगा-फसाद चालु रहा होगा वहां लोगों की क्या परिस्थिती हुई होगी ? परन्तु राष्ट्र के गद्दार वहाबी-तबलीगी संप्रदाय के पेश्वाओं को लोगों की दुर्दशा की कोई चिंता नहीं है। बल्कि वे तो ऐसी ही दुर्दशा करने के लिये प्रयास कर रहे थे। उस का अपेक्षित परिणाम आया कि पंजाब पर कब्जा करने की अंग्रेज़ों की इच्छा पुर्ण हुई।

मोल्वी इस्माईल दहेल्वी और मोल्वी सय्यद अहमद पंजाब में सांप्रदायिक दंगों की आग लगा कर वहाँ से फरार हो गए और सरहद प्रांत में पहुंच गए।

सरहद प्रांत में जेहाद के नाम पर आंतक

पंजाब और सरहद प्रांत अंग्रेज़ों के लिये सरदर्द समान थे। पंजाब के शीख तथा सरहद प्रांत के पठान अंग्रेज़ों को सफल नहीं होने देते थे बल्कि अंग्रेज़ साम्राज्य के विरूद्ध संघर्ष तथा घर्षण करते थे। यह दोनों प्रजा का आमना-सामना करके प्रतिकार करना अंग्रेज़ों की शक्ति में न था। यह दोनों जाति अेकत्रित और संगठित हो न जाए इसलिये अंग्रेज़ों ने शुरू से ही लुच्ची लोमडी की निती अणनाई थी और दोनों कोम के बीच शत्रुता के बीज बो दीए थे। मोल्वी इस्माईल दहेल्वी तथा सय्यद अहमद जैसे वहाबी-नजदी पंथ के पेश्वाओं को खरीद कर उन को मुस्लिम-शीख दंगा भडकाने के लिये कार्यरत किया, जिस से दो बलवान कौम आपस में टकरा कर नष्ट हो जाए अथवा मांद पड जाए और दो में से एक कौम नष्ट होजाए तो आंतर विग्रह के कारण बची हुई दूसरी कौम को पराजित

करना सरल हो जाएगा। और अगर दोनों प्रजा नष्ट न हो तब भी दोनों प्रजा अवश्य निर्बल हो गई होगी। ऐसी दुर्बल हुई कौम को अलग-अलग मोरचे पर पराजित करना आसान होगा। परिणाम जो भी आए, अंग्रेज़ों को ही लाभ होने वाला था।

शीखों के सामने लडने के लिये मोल्वी इस्माईल दहेल्वी और उस के पीर सय्यद अहमद रायबरेल्वी को हर तरह की सहायता कर के सर्व प्रथम उन को पंजाब भेजा। यह दोनों भारत के गद्दारों ने पंजाब की भोली और धर्म प्रेमी मुस्लिम प्रजा को इस्लाम के नाम पर मुसलमानों को शीखों के खिलाफ लडने के लिये उत्तेजित कर के उस को जेहाद का नाम दिया। भोले मुस्लिम इन दोनों ठग के प्रपंच में आ गए और इस्लाम के नाम पर जेहाद का पुण्य प्राप्त करने हेतु शीखों के विरुद्ध लडने के लिये निकल पड़े। ऐसे युद्ध का अंग्रेज़ों को शीध्र लाभ यह हुवा कि शीख तथा मुस्लिम प्रजा का ध्यान अंग्रेज़ों प्रति हट गया और दोनों प्रजा एक-दूसरे से लडने में ऐसी व्यस्त हुई कि वह अंग्रेज़ों को भूल गए। अत्याचारी अंग्रेज़ों को देश में से निकाल कर देश को स्वतंत्रता दिलाने के कर्तव्य को भूल गए और अंग्रेज़ों के शासन की जडें मजबूत हो गईं।

पंजाब में पहुंच कर मोल्वी इस्माईल दहेल्वी और सय्यद अहमद ने शीखों के विरुद्ध कथित जेहाद का प्रारंभ किया। यहाँ तक कि उन के साथ की सेना यही भ्रम में थी कि यह दोनों बुज़ुर्ग इस्लाम को फैलाने के लिये अपने प्राण को दाव पर लगा रहे हैं। परन्तु वह भ्रम सरहद प्रांत में पहुंचते ही टूट गया। लोग उन को इस्लाम के वफादार तथा हमदर्द समझते थे परन्तु उस के ख़िलाफ पुरवार हुवा। वह इस्लाम के वफादार नहीं, बल्कि अंग्रेज़ों के विश्वासु थे। वे इस्लाम के हमदर्द नहीं, बल्कि अंग्रेज़ों के चाकर थे। वे फक्त इस्लाम के ही गद्दार नहीं बल्कि मातृभूमी भारत के भी गद्दार थे। उन का मुख्य ध्यैय यह था कि जो लोग अंग्रेज़ों के साम्राज्य के विस्तरण

को रोकने के लिये समर्थ हैं, उन के सामने लडा जाए । फिर वो चाहे शीख हो या मुस्लिम । अंग्रेज़ का शत्रु वो हमारा शत्रु ।

मेरे उपरोक्त दावे के समर्थन मे मैं केवल इतना ही कहूंगा कि वहाबी-नजदी-तबलीगी जमाअत के नेताओं मोल्वी इस्माईल दहेल्वी और सय्यद अहमद ने 'जेहाद' की प्रवृत्ति शुरू की थी, उस की समय अवधि २०, दिसम्बर १८२६ से ६, मई १८३१ तक है । जिस हिसाब से ४, वर्ष ४ माह तथा १६ दिन यानी कि सरेराश साढे चार (४॥) वर्ष की समय अवधि में उन्होंने महत्वपूर्ण लडाईयाँ की थीं । जिस का देवबंदी-वहाबी-तबलीगी जमाअत के लेखकों ने अपने पुस्तकों में गर्व से उल्लेख किया है, उन लडाईयों में से अधिकतम लडाईयां खुले मेदान में नहीं परन्तु रात्री के अंधकार में किया हुवा हमला और लूंट ही थी । उपरोक्त लडाईयों की संख्या बाइस (२२) जितनी है । जिस में चौदह (१४) लडाइयाँ मुसलमानों के खिलाफ लड़ी गई हैं । इस्लाम के नाम का उपयोग कर के, अपने अंगत हित तथा स्वार्थ के लिये की गई लूंटो को और भारत की प्रजा पर जुल्मो-सितम करने वाले निर्दय अंग्रेज़ों की जडें मजबूत करने के लिये की गई लडाइयों को 'जेहाद' का नाम दे कर वहाबी-बलीगी जमाअत के लेखक और समीक्षक पुरे मुस्लिम समाज को लज्जित कर रहे हैं । अंग्रेज़ों के गुलाम तथा लूटेरों को 'मुजाहिद' एंव 'शहीद' का शिर्षक दे कर इस्लाम की प्रतिष्ठा को लांछन लगा रहे हैं । सब से ज्यादा गंभीर बाबत तो यह है कि मुस्लिमों के खिलाफ जहर उगलने, प्रवचन करने वाले और मुसलमानों को सर्वनाश करने की चेष्टा करने वाले कोमवादी, विभाजनवादी राजकीय पक्षों को मुसलमानों के खिलाफ साहित्य प्रदान कर के उन को सांप्रदायिकता का जहर फेलाने के लिये प्रोत्साहित कर रहे हैं ।

यह जब्र भी देखा है, तारीख की नजरों ने,
लम्हों ने खता की थी, सदियों ने सजा पाई ।

वांचको को शुद्ध माहिती प्रदान करने हेतु आधारभूत पुस्तकों के संदर्भ से वहाबी-तबलीगी जमाअत के पेश्वाओं ने की हुई लडाइयाँ की संक्षिप्त माहिती यहाँ प्रदान करता हूँ ।

वहाबी-तबलीगी जमाअत के मुख्याओं ने तथा कथित 'जेहाद' के नाम पर की हुई लडाइयाँ

शीखों के खिलाफ :-

(१) शीदु
(२) अकोरा
(३) डमगला
(४) शनगारी
(५) मुजफ्फराबाद
(६) हजरू
(७) अबासीन

मुसलमानों के खिलाफ :-

(१) खैबर
(२) पंजतार
(३) हिन्द (प्रथम)
(४) हिन्द (द्रितीय)
(५) पेशावर
(६) छतरबाह
(७) ओतमान झह
(८) अनब
(९) कोहाट
(१०) मायार
(११) मरदान
(१२) सवात
(१३) जीदा
(१४) खुलाबट

शीख-मुस्लिम संगठन के खिलाफ :-

(१) बालाकोट

उपरोक्त वर्णनीय कुल बाईस (२२) लडाइयों में से शीखों के खिलाफ केवल सात (७) लडाईयाँ ही की गई हैं । बाकी की चौदह (१४) लडाइयाँ सुन्नी मुस्लिमों के विरुद्ध और एक

लडाई शीख-मुस्लिम संगठन के विरुद्ध लडी गई और वह लडाई वहाबी गुरूओं की अंतिम लडाई थी। वह लडाई में मोल्वी इस्माईल दहेल्वी और उस का पीर सय्यद अहमद दोनों गुरू-शिष्य की मृत्यु हुई। यह लडाई सरहद प्रांत के बालाकोट स्थल पर हुई। यह लडाई शीख और मुसलमानों ने संगठित हो कर लडी थी।

वर्णनीय युद्धो की संक्षिप्त जानकारी

सीदु

यह लडाई पंजाब के सीदु नाम के सथान पर हुई थी। जिस में वहाबीओं की सेना की संख्या १,००,००० (एक लाख) की थी। शीखों की सेना में ३० से ३५ हजार तक सैनिक उपस्थित थे। यह लडाई में वहाबीओं की सेना में रजवाडी शानो-शौकत द्रष्टिगोचर होती थी। सय्यद अहमद हाथी पर बैठ कर मैदान में आया था। आर पार की लडाई हुई। मोल्वी इस्माईल दहेल्वी और सय्यद अहमद अपनी सेना को छोड कर फरार हो गए। कई वहाबी मर गए। अंत में वहाबी कायरता पूर्वक भाग गए। शीखों का विजय हुवा। शीखों ने वहाबीओं का लश्करी सामान एंव माल-मता लूट ली।

संदर्भ :-

(१) "हयाते तय्यबह", लेखक :- मिर्जा हयरत दहेल्वी, प्रकाशक :- मक्तबा अत्तौहीद, दिल्ही, पृष्ठ : ३०४ तथा ३०५

(२) "सय्यद अहमद शहीद", लेखक :- गुलाम रसूल महर, प्रकाशक :- किताब मंजिल, लाहौर (पाकिस्तान) पृष्ठ : ३६५, ३६६, तथा ३७९

अकोरा

अकोरा किल्ले में शीख सेना सो रही थी। उस समय रात दो बजे वहाबीओं ने सो रही सेना पर आक्रमण कर दिया। शीखों की सेना का कमान्डर सरदार बुधासिंघ था। यह युद्ध में शीखों का पराजय हुवा। वहाबीओं ने शीखों के माल-सामान की लूट की और बहुत संपति प्राप्त की।

संदर्भ :-

"हयाते तय्यबह", लेखक :- मिर्जा हयरत दहेल्वी, प्रकाशक :- मक्तबा अत्तौहीद, दिल्ही, पृष्ठ : २९१ से २९५

डमगला

यह लडाई खुले मेदान में नहीं लडी गई बल्कि वहाबी-तबलीगी जमाअत के मुख्याओं की लूटेरी टोली पखली के शासक हाकिम शीख सरदार हरीसिंग के प्रतिनिधी सरदार फुलसिंध जब अपने युवान योद्धाओं के साथ डमगला नाम की जगह पर गाढ निंद्रा में था तब निंद्राधीन शीखों पर वहाबीओं ने रात्री के २, बजे के बाद अचानक आक्रमण कर के कुछ शीखों को मार डाला और उन के माल सामान को लूट लिया।

संदर्भ :-

"हयाते तय्यबह", लेखक :- मिर्जा हयरत दहेल्वी, प्रकाशक :- मक्तबा अत्तौहीद, दिल्ही, पृष्ठ : ३०९

शनगारी

यह लडाई भी शीखों के विरुद्ध हुई थी। वहाबीओं की सेना का सेनापति मोल्वी इस्माईल दहेल्वी था। यह लडाई में वहाबीओं का विजय और शीखों का पराजय हुवा था।

संदर्भ :-

(१) ''हकाइके तहरीके बालाकोट'', लेखक :- शाह हुसैन गरदेजी, प्रकाशक :- अल-मजमउल इस्लामी, मुबारकपुर, पृष्ठ : ९५

(२) ''हयाते तय्यबह'', लेखक :- मिर्जा हयरत दहेल्वी, प्रकाशक :- मक्तबा अत्तौहीद, दिल्ही, पृष्ठ : ३१३ से ३१४

मुजफ्फराबाद

मुजफ्फराबाद पंजाब में शीखों का मुख्य मथक था । यहां का प्रमुख शेरसींग था, जो शीखों का सरदार था । शेरशींग सुल्तान नजफ खाँ के साथ पेशावर गया हुवा था । उस की अनउपस्थिती का लाभ ले कर वहाबीओं की सेना ने मोल्वी खैरुद्दीन शेरकोह के नेतृत्व में मुजफ्फराबाद पर आक्रमण कर के उस का कब्जा ले लिया ।

संदर्भ :-

''मौलाना इस्माईल दहेल्वी और तकवीयतुल ईमान'', लेखक :- मौलाना शाह अबुल हसन जैद फारूकी, प्रकाशक :- हज़रत शाह अबुल खैर एकेडमी, दिल्ही, पृष्ठ : ९७

हजरू

यह शीखों की आबादी वाला गाँव था । गाँव वाले रात्री को गहरी नींद में सोए हुए थे । उस का लाभ ले कर वहाबीओं ने देर रात को गाँव पर चढाई कर दी । बेखबर गाँव वासीओं की हत्या और लूट मार कर के वहाबी प्लायन हो गए ।

संदर्भ :-

''हयाते तय्यबह'', लेखक :- मिर्जा हयरत दहेल्वी, प्रकाशक:- मक्तबा अत्तौहीद, दिल्ही, पृष्ठ : २९५, २९६ और २९७

अबासीन

यह लडाई शीखों के सरदार बुधसींग तथा उस की कौम के विरुद्ध हुई । यह लडाई में शीख पराजित हुए और युद्ध का मेदान छोड कर भाग गए । वहाबीओं ने शीखों के छोडे हुए लश्करी सामान और संपति पर कब्जा कर लिया ।

संदर्भ :-

''हयाते तय्यबह'', लेखक :- मिर्जा हयरत दहेल्वी, प्रकाशक :- मक्तबा अत्तौहीद, दिल्ही, पृष्ठ : ३०० और ३०२

खैबर

सरहद प्रांत के दुर्रानी मुसलमानों के विरुद्ध वहाबीओं ने यह युद्ध किया था । इन लोगों ने प्रारंभ में मोल्वी इस्माईल दहेल्वी और उस की टोली का स्वागत किया था परन्तु बाद में जानकारी मिली कि यह लोग तो अंग्रेज़ों के एजन्ट और वहाबी हैं । इसलिये यह लोग विरोधी हो गए । इसी कारण वहाबी क्रोध में आ गए और दुर्रानी मुसलमानों पर आक्रमण किया।

संदर्भ :-

''सय्यद अहमद शहीद'', लेखक :- गुलाम रसूल महर, प्रकाशक :- किताब मंजिल, लाहौर (पाकिस्तान) पृष्ठ : ४५४

पंजतार

सरहद के मुस्लिम सरदार फतेहखाँन और उस की कौम के खिलाफ वहाबी मान्यताओं (अकीदों) को स्वीकार न करने की सजा स्वरूप वहाबीओं ने पंजतार पर हमला कर के उस का कब्जा ले लिया ।

संदर्भ :-

(१) ''हयाते तय्यबह'', लेखक :- मिर्जा हयरत दहेल्वी, प्रकाशक :- मक्तबा अत्तौहीद, दिल्ही, पृष्ठ : ३३९
(२) ''सय्यद अहमद शहीद'', लेखक :- गुलाम रसूल महर, प्रकाशक :- किताब मंजिल, लाहौर (पाकिस्तान) पृष्ठ : ७०२

हिन्ड (प्रथम)

सरहद प्रांत के मुस्लिम सरदार खादीखान के विरुद्ध वहाबीओं ने यह युद्ध किया था। सरदार खादीखान ने प्रारंभ में मोल्वी इस्माईल दहेल्वी और सय्यद अहमद की सहायता की थी परन्तु उन के वहाबी अकीदे जाहिर होने पर वह विरोधी हो गया। क्यूंकि सरदार खादीखान कट्टर सुन्नी अकीदा रखने वाला था। और सरहद प्रांत के पीरे तरीकत हज़रत शैख अब्दुल गफ़ूर अखुन्द रहमतुल्लाहि अलैह का खास मुरीद था। उस ने सय्यद अहमद की बयअत का, मुरीद होने का तथा वहाबी अकीदा धारण करने का अस्वीकार किया। इस लिये उस को सबक सिखाने के लिये वहाबीओं ने खादीखान के किल्ले हिन्ड पर आक्रमण कर के निर्दयता के साथ अनेक मुसलमानों को मार डाला। सरदार खादीखान को भी गोली मार दी गई। सरदार खादीखान को 'शहीद' कर दिया और हिन्ड का कब्जा कर के वहाबीओं ने हत्याओं और लूंटमार का आंतक मचा डाला। यहाँ तक कि सरदार खादीखान के जनाजा की नमाज पढने को भी मना कर दिया। लोगों ने रात्री को छुप कर नमाजे जनाजा पढ कर सरदार खादीखान को दफ्न किया।

संदर्भ :-

(१) ''सवानेह अहमदी'', लेखक :- मुहम्मद जाफर थानेसरी, प्रकाशक :- नफीस एकेडमी, करांची (पाकिस्तान), पृष्ठ : २४३
(२) ''सय्यद अहमद शहीद'', लेखक :- गुलाम रसूल महर, प्रकाशक :- किताब मंजिल, लाहौर (पाकिस्तान) पृष्ठ : ४८७
(३) ''हयाते तय्यबह'', लेखक :- मिर्जा हयरत दहेल्वी, प्रकाशक :- मक्तबा अत्तौहीद, दिल्ही, पृष्ठ : ३३० और ३३२

हिन्ड (द्वितीय)

सरदार खादीखान के भाई अमीरखान के खिलाफ हुई थी। हिन्ड की प्रथम लडाई में वहाबीओं ने सरदार खादीखान को शहीद कर के किल्ले का कब्जा ले लिया था। इसलिये सरदार अमीर खान ने हिन्ड के किल्ले को वहाबीओं के कब्जे से मुक्त कराने के लिये पेशावर के हाकिम सरदार मुहम्मद खाँ का सहकार लिया। पेशावर के हाकिम ने पांच हजार (५०००) सशस्त्र सेना सरदार अमीरखान के साथ भेजी। सरदार अमीर खान ने हिन्ड के किल्ले पर आक्रमण कर के उस का कब्जा कर लिया। इस में वहाबीओं का पराजय हुवा और वह कैदी के तौर पर पकडे गए। मोल्वी इस्माईल दहेल्वी को भी अन्य वहाबीओं के साथ बंदी बनाकर पेशावर लाया गया। मोल्वी इस्माईल दहेल्वी रात्री के अंधकार में जेल तोड कर भाग गया।

संदर्भ :-

''हयाते तय्यबह'', लेखक :- मिर्जा हयरत दहेल्वी, प्रकाशक :- मक्तबा अत्तौहीद, दिल्ही, पृष्ठ : ३३३

पेशावर

हिन्द की दूसरी लडाई में पराजित और बंदी बनने के बाद जेल तोड कर मोल्वी इस्माईल दहेल्वी भाग कर उस ने भारी मात्रा में वहाबीओं की सेना एकत्रित की। हिन्ड की दूसरी लडाई में पेशावर के हाकिम सरदार मुहम्मद खान ने सरदार अमीर खान को की हुई सहायता का बदला लेने के लिये उस ने पेशावर पर आक्रमण किया। पेशावर में वहाबी सेना ने अराजकता और आंतक फेलाया । दो हजार (२०००) मुसलमानों को शहीद कर दिया और एक हजार (१०००) मुसलमानों को घायल कर दिया । वहाबीओं ने पेशावर के हाकिम सुल्तान मुहम्मद खान के पूरे प्रदेश पर कब्जा कर लिया।

संदर्भ :-

(१) ''मौलाना इस्माईल दहेल्वी और तकवीयतुल ईमान'', लेखक :- मौलाना शाह अबुल हसन जैद फारूकी, प्रकाशकः- हज़रत शाह अबुल खैर एकेडमी, दिल्ही, पृष्ठ : ८०

(२) ''हयाते तय्यबह'', लेखक :- मिर्जा हयरत दहेल्वी, प्रकाशक :- मक्तबा अत्तौहीद, दिल्ही, पृष्ठ : ३४५, ३४६, ३४९

ओतमान जई

वहाबीओं ने यह लडाई सरहद प्रांत के दुर्रानी मुस्लिमों के विरुद्ध की थी । इस लडाई में वहाबीओं ने तोप का विपुल मात्रा में उपयोग किया था । स्वंय सय्यद अहमद रायबरेल्वी ने एक तोप तय्यार कर के उच्च स्थान पर स्थापित कर दी थी और तोप के प्रथम गोले से ही दो सौ (२००) मुसलमानों को शहीद कर दिया । मोल्वी इस्माईल दहेल्वी ने एक साथ दो (२) तोप के जरीए मुसलमानों पर

गोले बरसाए । तोपो से गोले बरसाने की जिम्मेदारी मोल्वी इस्माईल दहेल्वी ने राजा राम राजपूत को सोंपी थी । राजाराम राजपूत ने तोप द्वारा गोले बरसा कर मुसलमानों में तबाही मचा दी । इस युद्ध में वहाबीओं ने भारी मात्रा में दुर्रानी मुसलमानों को मार कर उन की संपति की लूटमार की ।

संदर्भ :-

(१) ''सय्यद अहमद शहीद'', लेखक :- गुलाम रसूल महर, प्रकाशक :- किताब मंजिल, लाहौर (पाकिस्तान) पृष्ठ : ४५४

(२) ''हयाते तय्यबह'', लेखक :- मिर्जा हयरत दहेल्वी, प्रकाशक :- मक्तबा अत्तौहीद, दिल्ही, पृष्ठ : ३२१, ३२२

अनब

कश्मीर के रास्ते अनब नामी क्षेत्र का शासक सरदार पाइन्दा खाँ सुन्नी अकीदा रखने वाला था । इसलिये उस ने वहाबी अकीदों का अस्वीकार किया और सय्यद अहमद की बयअत करने (मुरीद होने) से इन्कार किया । इसलिये वहाबीओं ने आक्रोशित हो कर सरदार पाइन्दा खाँ पर आक्रमण किया और उस का सारा प्रदेश कब्जे में ले लिया । सरदार पाइन्दा खाँ अपनी पत्नि और बालकों को ले कर प्राण बचाने के लिये चला गया और अगरवर प्रदेश की नदी के दूसरे किनारे पर शमधरा नाम के गाँव में छ माह तक छुप कर रहा ।

संदर्भ :-

(१) ''हयाते तय्यबह'', लेखक :- मिर्जा हयरत दहेल्वी, प्रकाशक :- मक्तबा अत्तौहीद, दिल्ही, पृष्ठ : ३३६ तथा ३३७

(२) "मौलाना इस्माईल देहेल्वी और तकवीयतुल ईमान",
लेखक :- मौलाना शाह अबुल हसन जैद फारूकी,
प्रकाशक :- हज़रत शाह अबुल खैर एकेडमी,
दिल्ही, पृष्ठ : ८९

छतरबाई (फुलणा)

अनब से भाग कर छह(६) मास तक अज्ञातवास में रहे हुए सरदार पाइन्दा खान ने शीखों के सरदार हरीसींघ से सहायता मांगी। हरीसींघ ने सरदार पाइन्दाखान के पुत्र जहानदादखान को अपने पास बंदी रख कर सहायता की । छतरबाई नाम के स्थल पर युद्ध हुवा । जिस में सरदार पाइन्दाखान का विजय हुवा, उस ने अपना खोया हुवा प्रदेश पुनः प्राप्त किया और वहाबी वहां से भाग गए ।

संदर्भ :-
"तारीखे तनावलिया", लेखक :- सय्यद मुराद अल, अलीगढी, प्रकाशक :- मक्तबा कादरिया, लाहौर, पृष्ठ : ४७ से ५६

मरदान

सरहद के मुस्लिमों पर वहाबीओं की सेना ने आक्रमण कर के तलवार के जोर से उन के प्रदेश पर कब्जा कर लिया ।

सवात

सरहद के मुस्लिमों के प्रदेश में वहाबीयत फेलाने के लिये तलवार का उपयोग कर के मोल्वी इस्माईल देहेल्वी और सय्यद अहमद रायबरेल्वी ने आक्रमण कर के कब्जा कर लिया ।
(उपरोक्त दोनों लडाइयों के हवाले के लिये देखें)

संदर्भ :-
"तारीखे तनावलिया", लेखक :- सय्यद मुराद अल, अलीगढी, प्रकाशक :- मक्तबा कादरिया, लाहौर, परिचय के पेज नं. २, अजः- मुहम्मद अ. कय्युम जलवाल

खुलाबट

सरहद के मुस्लिम चुस्त सुन्नी अकीदा रखते थे । उन को शीखों से भी बुरे और खतरनाक समझकर वहाबीओं ने उन पर हम्ला किया ।

संदर्भ :-
"हकाइके तहरीके बालाकोट", लेखक :- शाह हुसैन गरदेजी, प्रकाशक :- अल-मजमउल इस्लामी, मुबारकपुर, पृष्ठ : १३८

कोहाट

काबुल के अमीर दोस्त मुहम्मद खान के भाई यार मुहम्मद खाँ के खिलाफ इस्वी १८३० में सय्यद अहमद ने युद्ध किया था । इस युद्ध में यार मुहम्मद खाँ का पराजय हुवा । कोहाट जितने के बाद सय्यद अहमद रायबरेल्वी 'सय्यद बादशाह' के नाम से विख्यात हुवा ।

संदर्भ :-
"तारीखे तनावलिया", लेखक :- सय्यद मुराद अल, अलीगढी, प्रकाशक :- मक्तबा कादरिया, लाहौर, पृष्ठ : ४७ से ५६

मायार

सरहद के दुर्रानी मुस्लिमो विरुद्ध युद्ध करने का प्रमुख कारण वहाबीओं के लिये यह था कि दुर्रानी मुसलमान पक्के सुन्नी अकीदा रखने वाले थे । इसलिये उन्होंने सय्यद अहमद रायबरेल्वी के मुरीद बनकर, वहाबी अकीदों को स्वीकार करने का इन्कार किया । इस युद्ध में अस्सी (८०) दुर्रानी मुसलमान शहीद हुए और अठ्ठाइस (२८) वहाबी मारे गए ।

संदर्भ :-

''सय्यद अहमद शहीद'', लेखक :- गुलाम रसूल महर, प्रकाशक :- किताब मंजिल, लाहौर (पाकिस्तान) पृष्ठ : ६२६

जीदा

सरदार यार मुहम्मद खान और उस की कौम के खिलाफ सय्यद अहमद रायबरेल्वी ने अकीदों का बहाना बना कर युद्ध किया। इस युद्ध में यार मुहम्मद खाँ के साथी सरहदी मुसलमान तीन सो (३००) की संख्या में शहीद हुए । तीन सो मुसलमानों को शहीद करने का घोर अपराध कर के सय्यद अहमद ने दो (२) रकअत नमाज शुकराने की अदा की ।

संदर्भ :-

''सय्यद अहमद शहीद'', लेखक :- गुलाम रसूल महर, प्रकाशक :- किताब मंजिल, लाहौर (पाकिस्तान) पृष्ठ : ४५३

बालाकोट

मुसलमानों के उपर वहाबीओं के अत्याचार चरमसीमा पर पहुँचने के कारण, वहाबीओं के जुल्मो-सितम से हमेंशा के लिये छुटकारा पाने के लिये मुस्लिमों ने शीखों के साथ संगठन किया और दिनांक ६, मई १८३१ के दिन बालाकोट के स्थल पर वहाबीओं के खिलाफ अंतिम लडाई लडी गई । जिस में अंग्रेज़ों के विश्वासु गुलाम और एजंट मोल्वी इस्माईल दहेल्वी, सय्यद अहमद रायबरेल्वी और अनेक दूसरे वहाबी मारे गए ।

संदर्भ :-

''मुशाहिदाते काबुल-व-यागिस्तान'', लेखक :- मुहम्मद अली कुसूरी, प्रकाशक :- अंजुमने तरक्कीए उर्दु, कराची, पृष्ठ : ११८

नोट :-

उपरोक्त लडाइयों में से बालाकोट की अंतिम लडाई में मुस्लिमों ने शीखों का सहकार क्यूं लिया ? उस की विस्तृत माहिती इस प्रकरण के बाद के प्रकरण में आएगी । तथा उपरोक्त युद्धो पर सामुहिक विवेचन भी करने में आएगा । संक्षिप्त में इतना कि वहाबीओं के अत्याचार इतने अधिक हो गए थे कि मुसलमानों की युवा विधवाओं को जबरन अपनी पत्नि बना लेते थे । स्वंय सय्यद अहमद ने दो (२) युवतिओं को अपनी पत्नि बना लिया था ।

एक महत्वपूर्ण बात जाननी जरूरी है कि वहाबी नेताओं के साथ सरहद के मुसलमानों को क्या आपत्ति थी और वह आपत्ति का कारण क्या था ।

सरहद के मुसलमानों के विरुद्ध युद्ध के कारण

पंजाब में राष्ट्र-प्रेमी शीखों द्रारा पराजित हो कर मोल्वी इस्माईल दहेल्वी और उस का पीर सय्यद अहमद अपनी टोली के साथ सरहद प्रांत की और भाग निकले । सरहद प्रांत के हिन्ड नाम के स्थल पर दोनों ने १२, जमादिल आखिर हिजरी १२४२ के दिन एक विशाल धर्म सभा का आयोजन किया और इस्लाम के नाम पर जेहाद करने के लिये लोगों को एकत्रित किया । उस सभा में सय्यद अहमद को ''अमीरुल मोअमेनीन'' का संबोधन अर्पण किया गया।

उस समय सरहद प्रांत के मुसलमानों को सय्यद अहमद के अकीदों की जानकारी नहीं थी । सरहद के मुसलमान चुस्त और पक्के सुन्नी अकीदे वाले थे । हनफी मजहब को मानते थे । सरहद के मुसलमान सय्यद अहमद रायबरेल्वी और इस्माईल दहेल्वी को भी अपनी तरह सुन्नी-हनफी समझते थे । इसलिये प्रारंभ में सरहद के मुस्लिमों ने उन की खूब तरफदारी एंव सहायता की । उन के उपर अपने तन-मन-धन का बलिदान देने के लिये आतुर हो गए । परवारा जैसे दिपक पर न्योछावर होता है ऐसे कुरबान होने लगे । उन को अपना धार्मिक और समाजी रहबर समझने लगे ।

अपने लिये लोगों के मन में यह भावना देख कर वहाबी मुखिये मन ही मन में आनंदित होने लगे । और वह इस आशा में रहने लगे कि अंग्रेज़ों की वफादारी व्यक्त करने में तथा वहाबी धर्म के अकीदों का प्रचार करना अब अति सरल हो जाएगा । सय्यद अहमद अपने मन की भावनाओं पर संयम रख रहा था परन्तु मोल्वी इस्माईल दहेल्वी अपने जल्दबाजी वाले स्वभाव के कारण अपने वहाबी अकीदों के प्रचार करने के लिये तत्पर हो गया था । मोल्वी इस्माईल

दहेल्वी ने अपने अकीदों के प्रचार बाबत शीध्रता से काम लिया और अकीदों का प्रचार करना शुरू कर दिया । परिणाम स्वरूप सरहद के मुस्लिम उत्तरोत्तर उन से दूर होते गए । हालांकि इस्माईल दहेल्वी का पीर हाल तुरन्त अकीदों की विवादास्पद बात छेडना नहीं चाहता था परन्तु मोल्वी इस्माईल दहेल्वी ने शीखों के खिलाफ जेहाद करने से ज्यादा अपने अकीदों के प्रचार को महत्वता दी । यहाँ तक कि अपने बातिल अकीदों के साथ असहमति दर्शाने वाले सरहद के मुस्लिमों पर काफिर और मरदूद के फत्वे दिए । उस से भी आश्चर्यजनक बात यह थी कि उन्होंने जेहाद का कार्य शीखों के विरुद्ध रोक कर जेहाद का मुख मुसलमानों की तरफ कर दिया ।

वहाबीओं के वर्णनीय मुखिया सरहद क्षेत्र के मुस्लिमों को अंग्रेज़ों के कहने पर शहीद करने की योजना ले कर ही आए थे परन्तु अकारण मुस्लिमों को मारने से बडा हाहाकार होने का भय था । इसलिये उन्होंने अपनी योजना की सफलता के लिये बहाने ढूंड लिये ।

सब से प्रथम बहाना यह था कि सय्यद अहमद अमीरुल मोअमेनीन है । इसलिये उस के हाथ पर बयअत कर के उस के मुरीद हो जाओ और सय्यद साहब की इमामत का स्वीकार करो । दूसरा बहाना यह था कि तुम कब्रों की जियारत, नबी-वलीयों के अधिकार, जैसे अकीदे रखते हो, जो 'शिर्क' है । एसी मान्यताओं के कारण तुम 'काफिर' और 'मुश्रिक' हो । इसलिये तुम अपनी अकीदों से तौबा कर के फिर से कल्मा पढ कर इस्लाम में प्रवेश करो और सय्यद अहमद के हाथ पर बयअत कर के (मुरीद बन कर) हमारे वहाबी-नजदी धर्म के अकीदों का स्वीकार करो ।

वहाबी मुखियों की उपरोक्त पेशकश से सरहद प्रांत के आलिम और मुसलमान आश्चर्यचक्ति हो गए । चारों तरफ से वहाबी अकीदों के विरुद्ध हो-हा शुरू हो गई और सरहद की सुन्नी मुस्लिम प्रजा उन के विरुद्ध हो गई ।

✪ यहाँ पर एक हवाला प्रस्तृत करता हूँ।

हवाला :-

"हिन्दुस्तान के गौश-ए-शिमालो मगरिब की सरहद पर जो पहाडी कौमें रहती है वह सुन्नीयुल मजहब हन्फी कौमें हैं। चूंकि पहाडी कौमें उन के अकाइद के मुखालिफ थी। इसलिये वो वहाबी उन पहाडियों को हरगिज इस बात पर राजी न कर सके कि वो उन के मसाइल को भी अच्छा समझते।"

संदर्भ :- 'मकालाते सर सय्यद' लेखक :- मुहम्मद इस्माईल पाणीपती, प्रकाशक :- मजलिसे तरक्कीए अदब, लाहोर, भाग - ९, पृष्ठ : १३९,१४०

"भारत की सीमा के उत्तर पश्चिम सरहद पर जो पहाडी कौमें रहती हैं, वह सुन्नी मजहब हन्फी कौमे हैं। पहाडों में वसवाट करती कौमें उन के अकीदों के विरुद्ध थी, इसलिये वहाबी लोग पहाडों में बसने वाले लोगों को इस बात पर प्रसन्न न कर सके कि पहाडी लोग उन के अकीदों को अच्छा समझते।"

उपरोक्त हवाले से यह बात स्पष्ट हो गई कि सरहद प्रांत में वसवाट करनेवाले सुन्नी मुस्लिमों ने वहाबी अकीदों का अस्वीकार किया, तथा सरहद के आलिमों ने वहाबीओं का पूरी शक्ति से विरोध किया और उनके विरुद्ध फत्वा भी दिया। जब कि प्रारंभिक काल में जब तक अंग्रेज़ों के एजन्ट मोल्वी इस्माईल दहेल्वी, सय्यद अहमद और उस की टोली की वहाबियत प्रगट नहीं हुई थी तब तक तो सरहद प्रांत के स्थानिक सुन्नी आलिमों ने उन का समर्थन किया था।

हवाला :-

"हज़रत मौलाना शैख अब्दुल गफूर अखुन्द सवाती दुर्रानी सरहद के पीरे तरीकत थे। शुरू में आप भी सय्यद साहब के हमनवा थे, लैकिन मुजाहिदीन की वहाबियाना सरगर्मियों से मुतनफ्फिर हुए और वहाबी मुजाहिदीन के खिलाफ तज़लील का फत्वा दिया। आप के हमनवा ओलमा में हज़रत मौलाना मीयां नसीर अहमद अल-मअल्लरूफ किस्सा ख्वानी मुल्ला, हज़रत मौलाना हाफिज दराज पेशावरी, शारेह बुखारी और मुल्ला अजीम अखुन्द जादा वगेरह सरे फहेरिस्त थे।"

संदर्भ :- "हकाइके तहरीके बालाकोट", लेखक :- शाह हुसैन गरदेजी, प्रकाशक :- अल-मजमउल इस्लामी, मुबारकपुर, पृष्ठ : ११६ और ११७

हिन्दी अनुवाद

"हज़रत मौलाना शैख अब्दुल गफूर अखुन्द सवाती सरहद के दुर्रानी सरदार के पीरे तरीकत थे। प्रारंभ में आप भी सय्यद साहब के समर्थक थे। परन्तु मुजाहिदों की वहाबीयत भरे आंदोलन से नाराज हो गए और वहाबी मुजाहिदों को 'गुमराह' (रास्ता भटके हुए) होने का फत्वा दिया। आप के फत्वे के समर्थक आलिमों में हज़रत मौलाना मीयां नसीर अहमद कि जो किस्सा ख्वानी मुल्ला से पहचाने जाते थे और बुखारी शरीफ की शरह लिखने वाले हज़रत मौलाना हाफिज दराज पेशावरी और मुल्ला अजीम अखुन्दजाखा के नाम सब से आगे है।"

अब यहाँ पर वांचको को कोई असमज नहीं रही होगी कि वहाबी-तबलीगी जमाअत के मुखिया इस्लाम के नाम पर शीखों से जेहाद या भारत की स्वतंत्रता के लिये अंग्रेज़ों की विरुद्ध लडने नहीं गए थे परन्तु अंग्रेज़ों के एजन्ट बन कर, अंग्रेज़ों के शक्तिशाली शत्रु मुस्लिमों को धर्म के नाम पर लडाने के लिये वहाबी-नजदी अकीदों के प्रचार के लिये ही गए थे । उन की वहाबीयत जाहिर हुई इसलिये उन के खिलाफ लोगों का आक्रोश भडक उठा ।

उपरोक्त अनुच्छेद में जिस हज़रत शैख अब्दुल गफ़ूर अखुन्द रहमतुल्लाहे तआला अलैह का वर्णन है, उन का सरहद प्रांत में इतना प्रभाव था कि सरहद प्रांत का हर मुसलमान आप का हर आदेश मानने के लिये हर समय तैयार रहता था । प्रारंभ में आपने तथा कथित वहाबी मुजाहिदों को सुन्नी समझकर समर्थन किया था । इसलिये सरहद के हर विस्तार से समर्थन मिला । परन्तु हज़रत शैख अब्दुल गफ़ूर कट्टर सुन्नी और आशिके रसूल थे । थोडी अवधि में ही आप समझ गए कि जेहाद के नाम पर आने वाले यह लोग तो वहाबी-नजदी हैं । वहाबियों के भेद खुल गए और दंभ जाहिर हो गया । हज़रत शैख अब्दुल गफ़ूर अखुन्द ने उन को छोड दिया । सिर्फ छोड ही नहीं दिया बल्कि आपने उन का तीव्र विरोध भी किया। हज़रत शैख अब्दुल गफ़ूर अखुन्द जैसे पीरे तरीकत और आदरणीय व सन्मानीय हस्ती द्रारा विरोध होने के परिणाम स्वरुप सरहद प्रांत के लोग और आलिम भी वहाबीओं के खिलाफ खुल्लम खुल्ला मेदान में आ गए ।

दूसरी तरफ वहाबी भी अपनी नीति जाहिर हो जाने के कारण बहुत आक्रोशित हुए और सरहद प्रांत में वहाबीयत को जबरदस्ती फेलाने का मार्ग अपनाया । सर्व प्रथम उन्होंने वहाबी नेता और इमाम सय्यद अहमद को अमीरुल मु'मिनीन ठहरा कर, उस के हाथ पर बयअत करने का लोगों पर दबाव किया और जिन लोगों ने

बयअत करने से इन्कार किया उन को काफिर, मुनाफिक, मुर्तद तथा बागी के फत्वे दिए ।

हवाला :-

मोल्वी इस्माईल दहेल्वी अपने पीर सय्यद अहमद की इमामत बाबत लिखता है कि :
"हर के इमामते आँ जनाब इब्तेदाअन कबूल न कुनद या बादल कबूल इन्कार नुमायद, पश-हमुन अस्त बागी मुस्तहल्लुद दम के कत्ले-ऊ मिष्ले कत्ले कुफ्फार ऐन जेहाद अस्त"

संदर्भ :- 'मकतूबाते सय्यद अहमद शहीद', संपादक :- मुहम्मद जाफर थानेसरी, प्रकाशक :- नफीस एकेडमी, करांची (पाकिस्तान), पृष्ठ नं. १६९, मकतूब नंबर : ३१

उपरोक्त फारसी अनुच्छेद का हिन्दी अनुवाद :-

"जो व्यक्ति आं जनाब (सय्यद अहमद) की इमामत प्रारंभ से ही स्वीकार न करे अथवा स्वीकार करने के बाद उस का इन्कार करे, वह व्यक्ति ऐसा बागी है कि उस का रक्त बहाना हलाल है और उस को कत्ल करना काफिर को कत्ल करने की तरह अस्ल जेहाद है ।"

वहाबीओं की चालाकी देखिये । मुसलमानों के खिलाफ तल्वार उठा कर, उन को मारने को उचित ठहराने के लिये प्लेटफोर्म बना रहे हैं । अपने अधम कृत्यो को इस्लामी द्रष्टिकोण से यथार्थ टहराने की चेष्टा कर रहे हैं । उन की यह लडाई अंग्रेज़ की जड़ें मजबूत करने के लिये हैं, ऐसा स्पष्ट रुप से बताने की जगह उस को

इस्लामी रुप दे रहे हैं। अंग्रेज़ों के विरुद्ध तलवार उठाने को इस्लाम के खिलाफ बताने वाले मुसलमानों को मारने के निंदनीय घोर कृत्य को योग्य ठहराने का प्रयास कर रहे है। सच्चे मुसलमानों को काफिर का फत्वा दे कर, उस फत्वे के सहारे मुस्लिमों की हत्या की मलिन प्रवृत्ति कर रहे हैं।

हवाला :-

"१८३० इस्वी में सय्यद अहमद रायबरेल्वी और मोल्वी इस्माईल दहेल्वी ने पेशावर, मर्दान और सवात की मुस्लिम आबादी को बजौरे शमशीर महकूम बना कर सरदार पाइन्दाखान को पैगाम भिजवाए और खुद मिल कर भी बयअत की दावत दी। जब वो बयअप पर तैयार न हुवा, तो सय्यद साहब ने उस पर कुफ्र का फत्वा लगा कर चढाई कर दी।"

संदर्भ :- "तारीखे तनावलिया", लेखक :- सय्यद मुराद अल, अलीगढी, प्रकाशक :- मक्तबा कादरिया, लाहौर, (पाकिस्तान) का परिचय पेइज नं.२, अजः- मुहम्मद अ. कय्यूम जलवाल

हिन्दी अनुवाद

"इस्वी १८३० में सय्यद अहमद रायबरेल्वी और मुहम्मद इस्माईल दहेल्वी ने पेशावर, मर्दान और सवात की मुस्लिम आबादी को तलवार के जोर से अपने अंकुश में कर लिया और सरदार पाइन्दाखान को संदेशे भिजवाए और प्रत्यक्ष मिलकर भी बयअत करने (मुरीद होने) का आमंत्रण दिया। जब वो बयअत करने के लिये तैयार न हुवा, तो सय्यद साहब ने उस पर काफिर होने का फत्वा दे कर आक्रमण कर दिया।"

सरदार पाइन्दाखान का दोष क्या था ? केवल इतना ही कि उस ने वहाबीओं के गुरू का मुरीद बनने से इन्कार कर दिया। केवल मुरीद न बनने केकारण कुफ्र के फत्वे और वहाबी आक्रमण का भोग बना। भारत के नागरिक और विशेषत मुसलमानों पर असीम अत्याचार करने वाले दुष्ट तथा अत्याचारी अंग्रेज़ों के विरुद्ध स्वतंत्रता का युद्ध लडने से मुसलममानों को रोकने वाले और अंग्रेज़ों विरुद्ध जेहाद को पाप बताने वाले वहाबी अब निर्दयता से सुन्नी मुसलमानों पर आक्रमण कर रहे हैं। मुसलमानों को मार डालना, उन की संपत्ति-माल को लुंटना, मुस्लिमों की युवा बालिकाओं को अपने साथ जबरदस्ती निकाह करने के लिये मजबूर करना। अंग्रेज़ों की जडें मजबूत करने के लिये मजहब और राष्ट्र के साथ गद्दारी करना यह सब बातें इतिहास के पृष्ठों में सुरक्षित हैं, परन्तु बेशर्मी की सीमा यह है कि ऐसे लुटेरे, हत्यारे, डाकु और व्यभिचारीओं और देश के बागीओं को वहाबी-तबलीगी जमाअत के लोग 'शहीद' के लकब से संबोधित कर के लोगों की आँखों में धूल झोंक रहे हैं। ऐसे नीच लोगों को 'शहीद' का पदवी दे कर 'शहीद' तथा 'शहादत' की गरिमा का भी अपमान कर रहे हैं। अगर इसी तरह लुंटेरो को भी शहीद बताने में आएगा तो 'शहीद' लकब का अवमुल्यांकन हो जाएगा।

केवल सरदार पाइन्दाखान ही नहीं बल्कि संपूर्ण सरहद क्षेत्र के मुसलमान और उन के सरदार वहाबीओं के अत्याचार के भोग बने थे। मुस्लिमों को अपना 'शिकार' बनाने के लिये वहाबी कैसे-कैसे प्लानींग करते थे, यह देखिए।

हवाला :-

वहाबी तबलीगी जमाअत के प्रथम मुखिया और इमाम मोल्वी इस्माईल दहेल्वी अपने पीर सय्यद अहमद को संबोधित कर के पत्र में लिखता है किः-

''यहां दो मआमले दर पैश हैं । एक तो मुफसिदों और मुखालिफों का इरतेदाद साबित करना और कत्लो-खून के जवाज की सूरत निकालना और उन के अमवाल को जाइज करार देना ।''

संदर्भ :- ''मक्तूबाते सय्यद अहमद शहीद'', (उर्दु अनुवाद) अनुवादक :- सखावत मिर्जा, प्रकाशक :- नफीस एकेडमी, कराची, पृष्ठ : २४१

''यहां पर दो बातें उपस्थित हैं । एक तो फसाद करने वाले और विरोधीयों को मुर्तद (इस्लाम से बाहर) साबित करना और उन को कत्ल कर के उन का रक्त बहाना जाइज (योग्य) ठहराने के संजोगों का निर्माण करना एंव उन के माल-संपति को लूंटने को यथार्थ पुरवार करना ।''

उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट हो गया कि वहाबी-तबलीगी जमाअत के मुखियाओं के लिये यह विषय ही महत्वपुर्ण था कि विरोधीओं (सुन्नीओं) को काफिर होने का फत्वा दे कर, उन को मार डालना और उन की संपत्ति को लुट लेना । इन अत्याचारी, गैर-इस्लामिक कृत्यों को यथार्थ पुरवार करने के लिये संजोगों को किस तरह निर्माण किया जाए यह बात ही महत्वपुर्ण थी । अपने मनमानी पुर्वक फत्वे का सहारा ले कर वहाबीओं ने जो आंतक फेलाया वह इतना निंदनीय है कि कयामत तक वह दुनिया के मुस्लिमों और हिन्दुस्तानी लोगों की द्रष्टि में हमेंशा बदनाम रहेंगे । वहाबीओं की फत्वाबाजी शुरू होते ही सरहद के मुसलमानों ने जो विरोध किया उस का एक हवाला प्रस्तृत है ।

हवाला :-

''जब कोई अमीर मुसलमान और आलिम पंजाब का उन की तरफ मुतवज्जेह न हुवा, तब उन्होंने उन की तकफीर का फत्वा जारी किया । उस फत्व-ए-तकफीर के इजरा से तमाम मुल्के पंजाब के अमीर और उलमा नाराज हो गए और जवाब लिखे कि तुम वहाबी मजहब हो, तुम से बयअत करना रवा नहीं ।''

संदर्भ :- ''फरियादे मुस्लिमीन'', लेखक :- मुन्शी मुहम्मद हुसैन 'महमूद', प्रकाशक :- मक्तबा रियाजे हिन्द, अमृतसर, पृष्ठ : ९८

हिन्दी अनुवाद

''जब पंजाब का कोई भी मुस्लिम सरदार और आलिम उन की तरफ ध्यानित नहीं हुवा, तब उन्होंने (वहाबीओंने) उन पर काफिर का फत्वा लगा दिया। काफिर के फत्वे के प्रचलित होने के कारण पंजाब प्रदेश के सरदार और उलमा नाराज हो गए और प्रत्युत्तर लिखा कि तुम वहाबी मजहब हो । तुम से बयअत (मुरीद) होना उचित नहीं ।''

✪ एक और हवाला प्रस्तृत करता हूँ ।

हवाला :-

''आप की इताअत तमाम मुसलमानों पर वाजिब हुई । जो आप की इमामत को सिरे से तस्लीम न करे या तस्लीम करने से इन्कार कर दे, वो बागी मुस्तहिल्लुद-दम है और उस का कत्ल कुफ्फार के कत्ल की तरह

ऐन खुदा की मरजी है । मोअतरिजीन के एतराजात का जवाब तलवार है, न कि तहरीर व तकरीर ।''

संदर्भ :- ''सीरते सय्यद अहमद शहीद'', लेखक :- सय्यद अबुल हसन अली नदवी, प्रकाशक :- एम. एच. सईद एन्ड कंपनी, करांची, (पाकिस्तान) पृष्ठ : ४८५

''आपका अनुसरण करना तमाम मुसलमानों पर वाजिब हुवा । जो आप की इमामत को बिल्कुल ही न माने या स्वीकार करने से इन्कार करे, वो ऐसा बागी है कि उस का खून बहाना हलाल है और उस को कत्ल करना, काफिर को कत्ल करने के समान है । विरोध जताने वालों की आपत्तिओं का जवाब तलवार है, लेखन या प्रवचन नहीं ।''

संक्षिप्त में इतना कि जो लोग वहाबी-तबलीगी जमाअत के मुखियाओं की मान्यताओं के साथ असहमत हुए, उन लोगों पर वहाबीओं ने नये-नये फत्वा लगाकर, उन की हत्या करना और उन के माल-जायदाद को लूंट लेने की मलिन प्रवृत्तिओं को योग्य बताने के लिये मजहब का सहारा लिया । इस्लाम के नाम पर होने वाले जेहाद का गलत तथा अयोग्य अर्थ निकाला और निर्दोष तथा राष्ट्र-प्रेमी मुस्लिमों का कत्लेआम किया ।

वहाबीओं की इस्लाम और मुस्लिम विरुद्ध की प्रवृत्ति, अंग्रेज़ो प्रति वफादारी, मादरे वतन के साथ गद्दारी, अहंकारी और अभिमानी मनोवृत्ति, स्वार्थी निती, आर्थिक प्रलोभन वृत्ति, वासना-तृप्ति की उत्सुकता और ऐसी अनेक असामाजिक चेष्टाओं के कारण सरहद प्रदेश में विरोध की तुफानी हवा चलने लगी । मुसलमानों ने अनिष्ट को नष्ट करने का मक्कम और द्रढ संकल्प लिया और अंत

में...... शीखों के साथ मुस्लिमों का संगठन हुवा । इस्लाम और राष्ट्र के शत्रू के खातमे के लिये दोनों राष्ट्रप्रेमी प्रजा संगठित हुई । मुस्लिमों के धार्मिक रहनुमा और गुरूओं ने भी वहाबीओं के खिलाफ आवाज बुलंद किया । उन के आदेश पर 'लब्बैक' कहते हुए सरहद प्रदेश के मुस्लिमों ने वहाबीओं का नाश करने की दिशा में आगे बढने का पक्का इरादा बना लिया और शीखों के साथ संगठन बनाया ।

हवाला :-

''मुसलमानो और शीखों ने सय्यद साहब के खिलाफ इत्तेहाद कर लिया, क्यूं कि सय्यद साहब की मुस्लिम कुश और वहाबियाना हुकूमत की दास्तानें अहले हजारा सुन चुके थे और मजीद ये कि हज़रत शैख अब्दुल गफूर अखुन्द सवाती के खुल्फा व मुरीदीन और हज़रत हाफिज दराज पेशावरी के तलामीजा की एक कसीर तअदाद हजारा में मौजूद थी । इस लिये उन हजरात ने मकामी मुसलमानों को हकीकते हाल से आगाह किया और सय्यद के खिलाफ हो गए ।'

संदर्भ :- ''हकाइके तहरीके बालाकोट'', लेखक :- शाह हुसैन गरदेजी, प्रकाशक :- अल-मजमउल इस्लामी, मुबारकपुर, पृष्ठ : १४४

हिन्दी अनुवाद

''मुसलमानों और शीखों ने सय्यद साहब की विरुद्ध संगठन कर लिया, क्यूंकि सय्यद साहब की मुस्लिम विरोधी और वहाबियत आधारित शासन की बातें हजारावासी सुन चुके थे । और विशेष यह कि हज़रत शैख अब्दुल गफूर अखुन्द सवाती के अनुगामी

(खुल्फा) तथा मुरीद (अनुयायी) और हज़रत हाफिज दराज पेशावरी के शिष्यों की भारी मात्रा हजारा में उपस्थित थी। इन महानुभावों ने स्थानिक मुस्लिमों को सत्य वास्तविकता से सुचित किया और लोग सय्यद के विरुद्ध हो गए।''

वहाबीयों के बढ रहे प्रभाव को रोकने में सरहद प्रांत के पीरे तरीकत हज़रत शैख अब्दुल गफूर अखुन्द सवाती रहमतुल्लाहि तआला अलैह का बहुत बडा योगदान है। वहाबीयों के विरुद्ध शुरवीरता पुर्वक लडने में तथा वहाबीयों के अत्याचार का भोग बनकर वहाबीयों के जुल्मो-सितम सहन करने में भी शैख अब्दुल गफूर अखुन्द के मुरीद आगे थे।

हवाला :-

''खादी खान शहीद हज़रत मौलाना अब्दुल गफूर अखुन्द कद्दस सिर्रहू के मुखलिस मुरीद थे।''

संदर्भ :- ''तजकिरा अकाबिरे अहले सुन्नत'', लेखक :- मौलाना अब्दुल हकीम शर्फ कादरी, प्रकाशक :- मक्तबा कादरिया, लाहौर, पृष्ठ : २४८

''शहीद खादीखान हज़रत मौलाना अब्दुल गफूर अखुन्द रहमतुल्लाहि अलैह के निःस्वार्थ मुरीद थे।''

केवल सरदार खादीखान ही नहीं बल्कि पेशावर के हाकिम सरदार मुहम्मद खान, सरदार पाइन्दा खान भी हज़रत शैख अब्दुल गफूर अखुन्द के मुरीद थे। हज़रत शैख अब्दुल गफूर अखुन्द स्वंय

हिन्दुस्तान की स्वतंत्रता के महान लडायक थे।

हवाला :-

''आपने अपनी जमाअत के साथ अंबीला मकाम पर अंग्रेज़ों से जेहाद किया और उन्हें जबरदस्त शिकस्त दी।''

संदर्भ :- ''तजकिरा उलमाए अहले सुन्नत'', लेखक :- महमूद अहमद कादरी, प्रकाशक :- खानकाहे कादरिया अशरफिया, भवानीपूर (बिहार), पृष्ठ : १७८

''आपने अपनी जमाअत के साथ अंबीला नाम के स्थान पर जेहाद किया और अंग्रेज़ों को बहुत बुरी तरह से पराजित किया।''

मुस्लिम-शीख संगठन का महत्व का कारण

वहाबी अकीदों का अस्वीकार करनेवाले पेशावर के शासक सुल्तान मुहम्मदखान पर आक्रमण कर के, उस के प्रदेश पर कब्जा करने के बाद वहाबीओं के अत्याचार सीमापार हो गए। उस समय सरहद प्रांत में पेशावर का बहुत महत्व था और पेशावर के हाकिम का दबदबा एक ताकतवर शासक का था। ऐसे ताकतवर शासक का प्रदेश अपने कब्जे में ले कर वहाबी अति-आनंदित हो गए। उन के मस्तिष्क में सर्वोपरिता का भूत सवार हो गया। अहंकार तथा अभिमान की मनोवृति वेगवान बनी। प्रारंभ में सय्यद अहमद रायबरेल्वी को 'अमीरुल मोअमेनीन' कहने वाले वहाबी अब उस

को 'सय्यद बादशाह' कहने लगे। शिष्यों की वाह वाही और मुरीदों की चापलूसी और चमचागिरी ने सय्यद अहमद को बहका दिया। सय्यद अहमद और मोल्वी इस्माईल दहेल्वी ने उस प्रदेश को इस्लामी प्रशासन जाहिर कर के स्वंय उस शासन के अधिनायक बन गए। सय्यद अहमद ने पेशावर के आस-पास के प्रदेश को भी अपने शासन में समाविष्ट कर लिया। सय्यद अहमद ने समस्त प्रदेश को अपना आदेश मानने और उस अनुसार कार्य करने का आदेश दिया और उस प्रदेश में व्यवस्थित शासन चलाने के लिये सब गाँवों में अपने प्रतिनिधी नियुक्त किए। एसे प्रतिनिधिओं को 'काजी' का पद दिया गया। काजी के पद पर सय्यद अहमद ने वहाबी सेना के कथित मुजाहिदों की ही नियुक्ति की।

इस्लाम में 'काजी' के पद का अति-महत्व है। इस्लाम के प्रारंभिक युग से ही काजी के पद की विशिष्ट महत्वता है। काजी का पद 'जज' की हैसियत रखता है। काजी को इस्लामी कानून अनुसार खूब विशाल अधिकार प्राप्त हैं। हत्या और उस के जैसे अन्य गंभीर अपराध के दोषियों को मृत्युदंड तक की सजा देने का अधिकार है। काजी के पद पर शरीअत के कानून अनुसार ऐसी ही व्यक्ति बिराजमान हो सकती है जिस के भीतर अन्य आवश्यक योग्यता के साथ-साथ महत्व की योग्यता शरीअत के कानूनों की संपूर्ण जानकारी होनी चाहिए। परन्तु सय्यद अहमद के तथा कथित इस्लामी शासन में वहाबी काजीओं के लिये ऐसी योग्यता की कल्पना भी नहीं हो सकती। वे काजी वहाबी सेना के सैनिक ही थे, जिन्होंने सरहद प्रांत में सरेआम हत्या एंव लूटफाट ही की थी। ऐसे अज्ञान, अनपढ़, जाहिल, क्रुर, आंतकी, अपराधी और निम्न कक्षा के लोगों के हाथों में सामाजिक तथा धार्मिक व्यवस्था की धूरा आ गई। यह तो चोर बन गए हाकिम जैसा हो गया।

वहाबी सेनाओं को पेशावर प्रदेश की वहीवटी सत्ता प्राप्त हुई और वह संभाल नहीं पाए। सत्ता के नशे में अति-उत्साहित हो कर विलासी जीवन जीने का मार्ग अपनाया। पेशावर के विजय के कारण उन का भय फेल गया था। इसलिये खुल्लम-खुल्ला विरोध करने की किसी में ताकत नहीं थी। पेशावर में मुफ्त के माल खाने के बाद उन का ध्यान शारिरीक भुख (वासना) पूरी करने की और गया। युवानी में विधवा होने वाली युवतीयां उन की वासनाओं की पिडीता बनीं। अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिये उन्होंने धर्म का सहारा लिया। विधवा होनेवाली युवान स्त्रीओं का निकाहे-षानी यानी पून:विवाह कराने का आंदोलन और अभियान चलाया और अपने को पसंद आनेवाली युवती को बलपुर्वक अपनी 'पत्नि' बनने के लिये मजबूर किया।

हवाला :-

> "सय्यद साहब ने सदहा गाजियों को मुख्तलिफ ओहदों पर मुकर्रर फरमाया था कि वो शरए मुहम्मदी के मुवाफिक अमल दर आमद करें। मगर उन की बे-एतदालियाँ हद से ज्यादा बढ गई थीं। वो बअज अवकात नौजवान ख्वातीन को मजबूर करते थे कि उन से निकाह कर ले और बअज अवकात यह देखा गया है कि आम तौर पर दो-तीन दोशीजा लडकियाँ जा रही हैं, मुजाहिदीन में से किसी शख्स ने उन्हें पकडा और मस्जिद में ले जा कर निकाह पढा लिया।"

संदर्भ :- "हयाते तय्यबह", लेखक :- मिर्जा हयरत दहेल्वी, प्रकाशक :- इस्लामी एकेडमी, लाहौर, पृष्ठ : २८०

हिन्दी अनुवाद

"सय्यद साहब ने सेंकडों गाजीओं (सेनानीओ) को विभिन्न पदों पर नियुक्त किया था कि वह इस्लामी शरीअत अनुसार कार्यान्वयन (अमलदारी) करें । परन्तु उन का असंतुलित प्रशासन अमर्यादित हो गया था । वह कई बार युवान लडकियों को मजबूर करते थे कि उन से विवाह कर ले और कई बार एसा देखने में आया कि सामान्य दो-तीन अविवाहित लडकियाँ जा रही हैं । मुजाहिदों (वहाबीओं) में से कोई व्यक्ति ने उस को पकडा और मस्जिद में ले जा कर निकाह पढा लिया ।"

वाह ! क्या तरीका है वहाबीओं के तथाकथित इस्लामी शासन का ? रास्ते जाते हुई अविवाहित लडकियों को उठा कर, जबरन निकाह पढने का अवसर जाने दे तो वो वहाबी कैसा ? इस्लामी कानून अनूसार निकाह एक ऐसा पवित्र बंधन है कि उस में पुरुष तथा स्त्री दोनों की अनूमती होना आवश्यक है । यदि स्त्री विवाह करने का इन्कार करे तो विवाह हो ही नहीं सकता । एक पक्षीय सहमति का कोई अर्थ ही नहीं । परन्तु यह तो वहाबीओं का शासन था । स्त्री को दिल बहलाने का खिलौना ही समझते थे । रास्तों पर जा रही कन्या को उठा कर मस्जिद में ले जा कर जबरदस्ती निकाह पढ लेते । यदि कोई सुंदरी आँख में बस ही गई थी और वह निकाह के लिये सहमत ही न थी, तो उस असहाय को मस्जिद में ले जाने का कष्ट ही क्यूँ दिया ? सीधे अपने जनानखाने में ही शामिल कर लेते, क्यूंकि इस्लामी कानून अनुसार स्त्री की सहमति के बिना निकाह ही नहीं हो सकता, तो फिर निकाह पढने की नौटंकी करने की क्या

आवश्यकता ? निकाह का ऐसा नाटक करने के बाद भी तुम 'व्यभिचारी' ही रहोगे और सीधे घर ले जाकर भी तुम 'जिनाकार' ही रहोगे । यह तो लोगों को धोका देना हुवा । बल्कि यह घटना को गंभीरता से देखने में आए तो यह भी एक प्रकार का बलात्कार ही है । तलवार की धार के भय से थर-थर कांप रही स्त्री को जबरदस्ती घर में बिठाना बलात्कार नहीं तो और क्या है ? वासना की तृप्ति के लिये वहाबी कैसे-कैसे फत्वे प्रचलित करते थे वह भी आप देखें।

हवाला :-

जैसा कि उपर वर्णन किया है कि सय्यद अहमद तथा मोल्वी इस्माईल दहेल्वी ने हर जगह पर अपनी सेना के सेनानीओं को काजी के पद पर नियुक्त किया था और ऐसे काजीओं को अमर्यादित सत्ता भी दी थी । पेशावर शहर के काजी के पद पर मोल्वी मजहर अली नियुक्त हुवा था । मोल्वी मजहर अली ने आदेश दिया कि :-

"तीन दिन के अरसे में मुल्के पेशावर में जित्नी रांडे हैं, सब के निकाह हो जाना जरूरी है । वर्ना अगर किसी घर में रांड रह गई, तो उस घर को आग लगा दी जाएगी ।"

संदर्भ :- "हयाते तय्यबह", लेखक :- मिर्जा हयरत दहेल्वी, प्रकाशक :- मक्तबा अत्तौहीद, दिल्ही, पृष्ठ : ३४९

हिन्दी अनुवाद

"तीन दिन के अंदर पेशावर प्रदेश में जितनी विधवा हैं, सब विधवाओं के विवाह हो जाना जरूरी हैं । यदि किसी घर में विधवा रह गई, तो उस घर को आग लगा दी जाएगी ।"

यदि किसी घर में शराब मिलेगी, तो उस घर को आग लगा दी जाएगी...... यदि किसी घर में जुवा खेलते पकडे गए, तो उस को आग लगा देंगे...... यदि कोई घर में व्यभिचार करते हुए कोई पकडा गया, तो उस घर को आग लगाएंगे......... ऐसे आदेश नहीं दिए जा रहे। केवल पति विहीन स्त्री से आपत्ति है। क्यूं ? उस के पीछे स्वार्थ वृत्ति है। पति-विहीन स्त्री अपने घर में बेठी रहे और वहाबी उस को देखता ही रह जाए यह असह्य है। यदि ऐसी स्त्री घर में ही बेठी रहेंगी तो वहाबी को 'अवसर' केसे मिलता ? वहाबी मुल्ला की अन्य एक चेष्टा यह थी कि केवल तीन दिन का ही समय दिया था। यह अवधि नहीं बल्कि खुल्लम खुल्ली धमकी थी। केवल तीन दिन के समय में विधवा का हाथ पकडने वाला कोन आ सकता था ? और वह भी केवल एक-दो विधवाओं का नहीं बल्कि सेंकडो-हजारो विधवाओं का ? माता-पिता भयभित हो गए कि तीन दिन में यदि हमारी विधवा पुत्रीओं के पुनःविवाह नहीं हुए, तो वहाबी हमारे घरों को आग लगा देंगे। एक साथ इतने योग्य 'पात्र' ढूंढने कहाँ से? 'पात्र' तो तैयार ही थे। वहाबी सेना के कामुक वहाबी सेनानी उत्सुक ही थे। परिणाम भी देखिये :-

हवाला :-

''एक नौ-जवान खातून नहीं चाहती थी कि मेरा निकाहे-षानी हो। मगर मुजाहिद साहब जोर दे रहे हैं कि होना ही चाहिये, आखिर माँ-बाप अपनी नौ-जवान लडकी को हवाल-ए-मुजाहिद करते थे। इस के सिवा उन को कोई चारा न था।''

संदर्भ :- ''हयाते तय्यबह'', लेखक :- मिर्जा हयरत दहेल्वी, प्रकाशक :- मक्तबा अत्तौहीद, दिल्ही, पृष्ठ : ३४७

हिन्दी अनुवाद

''एक युवान स्त्री नहीं चाहती थी कि उस का पुनःविवाह हो, किन्तु मुजाहिद (वहाबी) दबाव डाल रहे थे कि नहीं। होना चाहिए, अंत में माता-पिता अपनी युवान पुत्री को मुजाहिद के हवाले कर देते थे। इस के सिवा उन के पास दुसरा कोई उपाय नहीं था।''

स्वच्छ चरित्र और इस्लामी कानून का अनुसरण करने के दावेदार वहाबी-तबलीगी जमाअत के मुल्लाओं और तथाकथित मुजाहिदों की चरित्र हिनता प्रकट हो रही है। जिस तरह डाकू और लूंटेरे गाँव को लूट कर गाँव की बहन-पुत्रीओं को उठा जाते थे इसी तरह यहाँ हो रहा है। डाकू और लूंटेरे वहाबी जितने दंभी तथा पाखंडी नहीं होते थे। वे अपनी वर्तणुक का सत्य प्रकट कर देते थे। कि वह स्त्री पसंद आ गई है अथवा जरूरत है इस लिये उठा ले जाते है। जबरन उस के साथ मुंह काला करने के लिये उठा जाते हैं। ऐसा स्पष्ट केह देते थे या अपने वर्तन से बता देते थे, परन्तु वहाबी तो डाकू-लूंटेरो से भी दो कदम आगे चल रहे थे। युवान स्त्रीओं को उठा जाने का आशय तो डाकूओं की तरह समान ही था, परन्तु वे उस को चालाकी के साथ ले जाते। वहाबी मुल्लाओं के फत्वे प्रगट होते थे, पुनःविवाह द्रारा समाज के कल्याण की बातें करते, माता-पिता को मानसिक दबाव में लाते और निकाह का सहारा लेते। किन्तु उन का आशय तो कामवासना की तृप्ति ही होती थी। लूंटफाट एंव लम्बे समय से युद्ध कर के थक गए थे और कोमल काया चाहते थे। व्यभिचारी शरीर बे-काबू हुए थे।

निर्लज्जता की चरम सीमा

बलपूर्वक निकाह की घटना का जो उल्लेख अभी हुवा, उस में पीडा तो इस बात की है कि ऐसी असामाजिक गतिविधि मजहब के नाम पर करने में आ रही थी । और ऐसी गतिविधि करने वाले धर्म के नेता बने हुए थे । उस से बढकर कष्टदायक बात तो यह है कि ऐसे तथाकथित धार्मिक नेताओं को वर्तमान समय के वहाबी-तबलीगी पंथ के लोग मुजाहिद, शहीद तथा वली जैसे आदरणीय संबोधन से प्रशंसित कर रहे है और स्वंय को उन के अनुयायी बताने में गर्व का अनुभव कर रहे हैं । मोल्वी इस्माईल दहेल्वी और उस के पीर सय्यद अहमद रायबरेल्वी के तथाकथित 'जेहाद' की वास्तविकता प्रकट होने के बाद अब उन के चरित्रहीन अनुगामीओ (खलीफा) की अत्याचारी गतिविधिया भी उजागर हो रही है । ऐसे हीन मानसिकता वाले लोग वहाबी संप्रदाय के पेश्वा सय्यद अहमद के खलीफा (अनुगामी) थे । नियुक्त न्यायधीश तथा वहाबी सेना के सेनानी थे ।

इस्लाम के प्रारंभिक काल के मुजाहिदो के जेहाद की शोर्यकथाएं कहाँ और वहाबीयों की लूंटमार पर आधारित स्वार्थी लडाइयाँ कहाँ ? इस्लाम के मुजाहिदों की तूलना में वहाबी सेना के लूंटेरो की समानता की कल्पना भी नहीं की जा सकती । इस्लाम के मुकद्दस मुजाहिदों के पवित्र चरित्र को देखिये और वहाबीयों के अपवित्र कार्य देखें । इस्लाम के मुजाहिदों ने मजहब के नाम पर सब कुछ न्योछावर कर के कुरबानी देने का जज्बा मिल्लत को दिया है, जब कि वहाबीयों ने धर्म के नाम पर आनंद एव रंगरेलियाँ मनाने की प्रथा का प्रारंभ किया ।

एक और महत्व की बात ध्यान करने पात्र है कि यदि मोल्वी इस्माईल दहेल्वी और उस के पीर सय्यद अहमद सच में इस्लामी कानून की अमलदारी करने के लिये इच्छुक होते तो उन की कार्य प्रणाली क्या होती ? परंतु यहाँ पर तो केवल इस्लाम नाम का उपयोग ही करना था । अंग्रेजों की नमक हलाली का हक अदा करना था । सुन्नी मुसलमानों पर यथाशक्ति अत्याचार करना था और साथ ही साथ जितना हो सके इतना आनंद-प्रमोद करना था ।

यदि मोल्वी इस्माईल दहेल्वी और उस की टोली अंग्रेजों को शक्तिवान बनाने के लिये देशवासी और इस्लाम के अनुयायीओं के खिलाफ खुलकर लडाई की होती तो इतना दुख न होता । अंग्रेजों के आर्थिक प्रलोभन की मोह-माया में फंस कर राष्ट्र के बागीयों की नापाक सुची में समाविष्ट हो जाने के दुख तथा सदमे की भावना अवश्य हुई होती । परन्तु यहाँ तो आधात की कोई सीमा नहीं रही । कार्य तो राष्ट्रद्रोह का ही किया है । इस्लाम और भारत के शत्रु की ही भूमिका निभाई है । परन्तु वे सब कुकर्म और दुराचार को इस्लाम का नाम देनेका हीन कृत्य किया और समग्र मुसलमानों को लज्जित किया है । नाम 'जेहाद' का लिया और काम डाकूओं का किया । नाम 'इस्लाम' का लिया और कार्य अंग्रेजों का किया । स्वांग धार्मिक नेताओं जैसा धारण किया और कार्य 'धूत' को भी शर्मिंदा करे ऐसा किया । अपना नाम 'मुजाहिद' रखा परन्तु काम आवारा भी न कर सके ऐसा किया ।

सय्यद अहमद ने अपनी सेना के भिन्न-भिन्न दलो पर एक सरदार (अमीर) को नियुक्त किया था । वे अमीरों में से अमीर नेअ्मतुल्लाह तथा अमीर हबीबुल्लाह खाँ कैसे रंगीन स्वभाव के थे वह देखे :-

हवाला :-

"(जमाअत के अमीर नेअ्मतुल्लाह), औरतों के बेहद शौकीन थे, तीन तो उन की निकाहतन बीवीयाँ थी और दस-बारह निहायत खूबसूरत लडकियाँ बतौरे खादिमाओं को रखते थे । अमीर हबुबुल्लाह खाँ की तरह अमीर नेअ्मतुल्लाह का भी ज्यादा वक्त उन्हीं नौ-जवान लडकियों से लह्वो-लअब में गुजरता था ।"

संदर्भ :- "मुशाहिदाते काबुल व यागिस्तान", लेखक :- मोल्वी मुहम्मद अली कसूरी (एम.ए.), प्रकाशक :- अंजुमने तरक्कीए उर्दु - करांची, पृष्ठ : १०८

हिन्दी अनुवाद

"(जमाअत के अमीर नेअ्मतुल्लाह) स्त्रीओं के बहुत शौकीन थे । तीन तो उन की विवाहित पत्नियाँ थी । और दस-बारह (१०-१२) अत्यंत सुंदर लडकियाँ सेविका के तौर पर रखते थे । अमीर हबीबुल्लाह खाँ की तरह अमीर नेअ्मतुल्लाह का भी अधिक समय उन नौ-युवान लडकियों के साथ मनोरंजन करने में परित होता था ।"

वहाबी-तबलीगी जमाअत के तथाकथित मुजाहिद किस के खिलाफ युद्ध कर रहे थे ? यह भी अब एक खोज का विषय बन गया है । इस्लाम के नाम पर जेहाद करने के लिये निकलने वाले हसीनाओं के समुह के मध्य गुम हो गए हैं । तीन पत्नियाँ तथा १०-१२ सेविका के बीच घीरे हूए तथाकथित मुजाहिदों के अमीर की

क्या परिस्थिती होती होगी ? उस की बहादुरी की प्रशंसा करना या "फंस गया" की परिस्थिती पर दया करना ? एक रांड और सौ सांड कहावत कि बजाए यहां पर एक सांड और अनेक रांड जैसी परिस्थिती है । अल्लाह के नाम पर जेहाद करने गया हुवा वहाबी मुजाहिद किस प्रकार के युद्ध में व्यस्त है ?

✪ ऐसी जंग के परिणाम देखें :-

हवाला :-

"अमीर साहब की खादिमाओं में कोई लडकी हामिला हो जाए तो उस के बच्चे को पैदाइश के बाद चुपके से दरियाबुर्द कर देना । अमीर साहब की आदत थी कि उन खादिमाओं को अकषर बदलते रहते थे ।"

संदर्भ :- "मुशाहिदाते काबुल व यागिस्तान", लेखक :- मोल्वी मुहम्मद अली कसूरी (एम.ए.), प्रकाशक :- अंजुमने तरक्कीए उर्दु - करांची, पृष्ठ : १११

हिन्दी अनुवाद

"अमीर साहब की सेविकाओं में से कोई गर्भवती हो जाए तो उस के नवजात शीशु को जन्म के बाद गला घोटकर चुपके से नदी में डाल देते । अमीर साहब की आदत थी कि उन सेविकाओं को बार-बार बदलते ।"

वहाबी सेना के मुजाहिदों के अमीर (सरदार) तथा सय्यद अहमद रायबरेल्वी के खलीफा (अनुगामी) अपनी सेवा करने वाली कन्याओं के पास किस प्रकार की सेवा करवाते थे उस का अनुमान

आ ही गया होगा । सेवा करने के फल स्वरूप यदि कोई बालिका कुंवारी माता बन जाए, तो उसकी कोख से अवतरित अवैध बच्चे को गला दबाकर मार डालने के बाद दरिया दफन कर दिया जाता। उस के अलावा ऐसी सेविकाओं को बदल भी देते । जितनी लडकियां वहाबी सेना का अमीर बदलता था, उतनी तलवारें भी कोई सेनानी कदाचित नहीं बदलता होगा । परन्तु यह तो वहाबी-तबलीगी पंथ के पेश्वा मोल्वी इस्माईल दहेल्वी की सेना का सेनानी था । जिस का हथियार तलवार नहीं बल्कि कुछ और ही था ।

वर्तमान समय के वहाबी-तबलीगी विचारधारा रखने वाले इतिहासकार मोल्वी इस्माईल दहेल्वी तथा उस की वहाबी सेना का बचाव करने हेतु लिखते है कि उस समय सरहद प्रांत में पुन:विवाह को घृणास्पद समझा जाता था । समाज की वह बुराई नष्ट करने के लिये वहाबी सेना के मुजाहिदो ने विधवाओं के निकाहे-षानी या 'नी विधवाओं के पुन:विवाह के आंदोलन का प्रारंभ किया था । उन का यह काम इस्लामी द्रष्टिकोण से उचित ही नहीं बल्कि सुन्नते रसूल जीवित करने वाला था ।

उपरोक्त बचाव के संदर्भ में केवल इतना ही कहना है कि यदि सय्यद अहमद रायबरेल्वी, मोल्वी इस्माईल दहेल्वी और उन के साथ सेना के वहाबी सेनानी यदि वास्तव में सच्चे मन से सुन्नत को जीवित करना चाहते थे तो उनका यह आंदोलन एक मार्गिय न होता, क्यूंकि वहाबीओं ने दूसरों की विधवाओं को जबरन विवाह करवा कर अपने घरों में बिठा दिया था परन्तु अपनी विधवाओं का दूसरी जगह विवाह नहीं किया । जिस का अनुमान निम्नलिखित हवालों के पठन से आ जाएगा ।

विधवाओं के पुन:विवाह के आंदोलन का कारण

सय्यद अहमद रायबरेल्वी को विधवाओं के पुन:विवाह का विचार अपनी भाभी (भाई की पत्नि) के कारण आया था । सय्यद अहमद रायबरेल्वी के बडे भाई सय्यद मुहम्मद इस्हाक की असामधिक मृत्यु के कारण उस की पत्नि सय्यदा वलिय्या युवानी में ही विधवा हो गई । सय्यद अहमद द्वारा निकाह के प्रस्ताव को सय्यद इस्हाक की विधवा सय्यदा वलिय्या ने ठुकरा दिया । प्रस्ताव ठुकराने के कारण सय्यद अहमद के अहंम को चोट पहुँची । उसने अपनी भाभी को अपनी पत्नि बनाने का द्धढ निर्णय लिया । उसने विधवाओं के पुन:विवाह के आंदोलन का इस्लामी द्रष्टिकोण से प्रारंभ किया और वह अपने इरादे में सफल भी हुवा । अपनी भाभी को अपनी शय्या-संगीनी बनाकर ही रहा । सय्यद अहमद रायबरेल्वी का जीवन वृतांत लिखने वाले एक वहाबी इतिहासकार यह बात का स्वीकार करते हुए लिखता है कि :-

हवाला :-

> ''सय्यद साहब के सवानेह निगार सय्यदा वलीय्या पर ये इल्जाम आईद करते हैं कि वो निकाहे-षानी को मअ्यूब समझती थी । ता-हम सय्यद साहब ने मुसलसल दो-तीन माह की कोशिश के बाद बडे भाई की नौजवान बेवा पर कमंद डाल दी ।''

संदर्भ :- ''मख्जने अहमदी'', लेखक :- सय्यद मुहम्मद अली, प्रकाशक :- मक्तबा हबीबिया, लाहौर (पाकिस्तान) पृष्ठ : ४५

हिन्दी अनुवाद

''सय्यद अहमद के जीवन वृतांत लिखनेवाले सय्यदा पर यह आरोप लगाते हैं कि वह पुन:विवाह को बुरा समझती थी । यहां तक कि सय्यद साहब ने दो-तीन महिने तक प्रयत्न कर के बडे भाई की नव-युवान विधवा पर फंदा डाल दिया ।''

अपनी भाभी के उपर 'फंदा' यानी कि कमंद डाल कर ही सय्यद साहब ने राहत की सांस ली । अपने इस कर्म पर आक्षेप न हो इसलिये सय्यद साहब ने विधवा पुन:विवाह आंदोलन जारी रखा था ।

सय्यद अहमद रायबरेल्वी की कुल तीन पत्नियाँ थीं ।(१) जोहरा (२) वलीय्या (३) फातिमा । सय्यद अहमद की दो पुत्री थी।(१) साएरा (२) जोहरा । मोल्वी अब्दुल हय्य बढानवी की दो पत्नियाँ थीं । सय्यद साहब के खास मुरीद मोल्वी जाफर अली नकवी की दो पत्नियाँ थीं । वे सब स्त्री विधवा हो गई । उन विधवाओं में से एक भी विधवा ने पुन:विवाह नहीं किया । इस के अलावा सय्यद के कई खलीफा, साथी तथा मुरीदों की पत्नियाँ विधवा हुई थीं । उन विधवाओं ने पुन:विवाह नहीं किया । यह कैसा आंदोलन था कि सरहद प्रांत के मुसलमानों को धमकी तथा चेतावनी देनेमें आए कि तीन दिन में सब विधवाओं के पुन:विवाह कर दो वरना तुम्हारे मकान जला दिए जाएंगे । परन्तु खुद वहाबीयों की विधवाओं के पुन:विवाह की सलाह भी देने में नहीं आ रही । विधवाओं के पुन:विवाह का आंदोलन तो एक बहाना था । इस बहाने युवा स्त्रीओं को भुगत कर अपनी वासना को संतुष्ट करना था ।

बालाकोट की अंतिम लडाई और वहाबीयों का विनाश

विधवाओं के पुन:विवाह का बहाना बनाकर और उस के साथ-साथ अविवाहित कन्याओं को उठा कर उन के साथ बलपुर्वक निकाह पढ लेना, मन चाहे उस तरह फत्वे देना, सरहद के मुसलमानों को इस्लामी कानून का नाम ले कर सख्त सजा करना, बयतुलमाल में से खुले आम भ्रष्टाचार करना, पक्षपात, भाई-भतीजावाद, स्वार्थी रवैया, धार्मिकता का दंभ, खुल्ली डाकूगीरी, असीम अत्याचार इत्यादी द्वारा वहाबी मुल्लाओं ने सरहद प्रांत के मुसलमानों का जीवन कठिन बना दिया था । अंग्रेजों के पीठबल के कारण वहाबी इतने शक्तिशाली थे कि अकेले उन के खिलाफ लडना अशक्य था । सरहद के मुस्लिम तथा अन्य प्रजा वहाबियों के अत्याचार से तंग आ गए थे । इन अत्याचारों से मुक्त होने के लिये लोग स्थायी उपाय ढूंढ रहे थे । समाज के वीर तथा समझु लोग चिंतित थे । अंत में समझदार लोगों की समझ में आया कि यह सब अंग्रेजों की चाल है । मजहब के नाम पर हम को शीखों के विरुद्ध लडवा कर हमें कमजोर बना दिया । हमारी कमजोरी का लाभ ले कर हमारे ईमान और हमारे देश दोनों को लूंट रहे है । वहाबी मान्यताओं के प्रचार द्वारा हमारे ईमान को लूंट कर तथा अंग्रेजी साम्राज्य को विस्तृत कर के हमारे राष्ट्र को लूटने वाले यह वहाबी मुल्ले अंग्रेजों के हाथ बिके हुए तथा राष्ट्र के बागी हैं । राष्ट्रप्रेम की भावना प्रबल बना कर सरहद प्रांत के मुसलमान और शीख प्रजा ने आंतरिक विवाद को भूलकर विदेशी ताकत के विरुद्ध संगठित हो कर युद्ध करने का पक्का निर्णय किया ।

बालाकोट नाम की जगह पर शीख-मुस्लिम संगठन विरुद्ध मोल्वी इस्माईल दहेल्वी के वहाबी लश्कर की अंतिम लडाई लडी गई । यह लडाई में वहाबी सेना का विनाश हो गया । मोल्वी इस्माईल दहेल्वी, सय्यद अहमद रायबरेल्वी तथा कई वहाबी मुल्लों की इस लडाई में मृत्यु हुई । मरे हुए अंग्रेजों के दलाल और देश के बागीयों को वहाबी-तबलीगी जमाअत के लोग 'शहीद' में समाविष्ट कर रहे हैं । यदि मुस्लिम श्रोता हों तो ऐसा प्रवचन देने में आए कि इस्लाम की खातिर शीखों के सामने लडते लडते शहीद हो गए । यदि राजकीय मंच हो और श्रोतागण राजकीय हो, तो ऐसी बडाई मारने में आए कि मातृ-भूमि की रक्षा करने हेतु अंग्रेजों विरुद्ध लडते-लडते शहीद हो गए ।

यहां पर संक्षेप में कुछ संदर्भ प्रस्तृत किए है । जिस के पठन से यह वास्तविकता स्पष्ट हो जाएगी कि वहाबीओं के गुरू मोल्वी इस्माईल दहेल्वी और सय्यद अहमद की लडाई किस के सामने थी और वे किस के हाथों मारे गए । बालाकोट की लडाई के संदर्भ में स्वंय वहाबी-तबलीगी जमाअत के विश्वसनीय तथा स्वीकृत इतिहासकार के कथनों को उन के लिखे हुए पुस्तकों के हवाले से पढने के लिये तैयार हो जाओ ।

हवाला नं. १

''शीखों के साथ और उन के जेरे अषर हजारो मकामी मुसलमान थे । उन में से अकषर के जिस्म बिला-शुब्ह शीखों के फरमांबरदार थे ।''

हवाला :- ''सय्यद अहमद शहीद'', लेखक :- गुलाम रसूल महर, प्रकाशक :- शैख गुलाम अली एन्ड सन्स, लाहौर, पृष्ठ : ७५२

हिन्दी अनुवाद

शीखों के साथ और उन के प्रभाव में हजारो स्थानिक मुसलमान थे । उन में से अधिकांश मुसलमानो के शरीर निसंदेह शीखों के आज्ञापालक थे ।

हवाला नं. २

''पहाडी गद्दार कौमें रूपियों की लालच से मुसलमान हो कर शीखों से गठ गई थीं ।''

हवाला :- ''हयाते तय्यबह'', लेखक :- मिर्जा हयरत दहेल्वी, प्रकाशक :- मक्तबा अत्तौहीद, दिल्ही, पृष्ठ : ३६१

हिन्दी अनुवाद

''पहाडी गद्दार प्रजा धन के प्रलोभन में मुसलमान हो कर शीखों के साथ हो गई थी ।''

हवाला नं. ३

''खुद मुसलमानों के हाथों सय्यद साहब के गाजीयों के बडे हिस्से को एक रात में जिब्ह करवाया ।''

हवाला :- ''उलमाए हिन्द का शानदार माजी'', लेखक :- सय्यद मुहम्मद मियां, व्यवस्थापक :- जमीअतुल उलमाए हिन्द, प्रकाशक :- एम ब्रधर्स, भाग : २, पृष्ठ : २४५

हिन्दी अनुवाद

''स्वंय मुसलमानों के हाथों सय्यद साहब के सेनानीओं के अधिकांश भाग को एक रात्री में मरवा दिया ।

हवाला नं. ४

"इ.स. १८३१ में बालाकोट के मकाम पर हजरत सय्यद अहमद शहीद और उन के साथी शहीद कर दिए गए और खुद आजाद कबाईल में से बअज लोगों ने हिन्दुस्तानी मुजाहिदीन को लूटा, कसोटा और कत्ल तक किया ।"

हवाला :- "काबुल में सात साल (मुकद्दमा)", लेखक :- उबेदुल्लाह सिंधी, प्रकाशक :- सागर एकेडमी, लाहौर, पृष्ठ : १६

"इ.स.१८३१ में बालाकोट की जगह पर हजरत सय्यद अहमद शहीद और उन के साथी शहीद कर दिए गए और खुद आजाद कबीलों में से कुछ लोगों ने हिन्दुस्तानी मुजाहिदीन को लूंटा, कष्ट दिया और हत्या तक की ।"

उपरोक्त हवालों अनुसार सिद्ध हुवा कि वहाबी-तबलीगी जमाअत के पेश्वा मोल्वी इस्माईल दहेल्वी और सय्यद अहमद इस्लाम के लिये शहीद न हुए थे किन्तु अंग्रेजों से वफादारी का हक अदा करने में सुन्नी अकीदे वाले और राष्ट्रप्रेमी मुसलमानों के हाथों मारे गए थे । वहाबीओं ने सरहद प्रदेश के मुस्लिमों की बहन-बेटी के सम्मान-प्रतिष्ठा पर जो खतरा खडा कर दिया था, वो इतना असह्य था कि मुसलमानों ने शीखों के साथ संगठित हो कर रंगीन स्वभाव के हवसखोर वहाबीओं का नाश ही कर दिया ।

मोल्वी इस्माईल दहेल्वी तथा उस के पीर सय्यद अहमद को 'शहीद' का खिताब दे कर, वहाबी-तबलीगी जमाअत के लोग इस

भ्रांति में रह रहे होंगे कि हम उन के प्रति हमारी आस्था के अनुसार वास्तविकता में श्रद्धांजलि दे रहे हैं, किन्तु वास्तविकता यह है कि 'जेहाद' तथा 'शहादत' जैसी बातें उन के जिवन चरित्र में उपलब्ध ही नहीं । लूटमार, व्यक्तिगत अहंम, स्वार्थी लडाइयाँ, भोग-विलास के लिये मजहब के नाम पर डाकूगीरी, किसी की बहन-बेटी को जबरन पत्नि बनाना और अंग्रेजों प्रति वफादारी व्यक्त करने के लिये मुस्लिमो विरुद्ध किए झगडों को भ्रष्ट वहाबी इतिहासकार 'जेहाद' का नाम दे कर, इतिहास को भ्रष्ट करने की कुचेष्टा कर रहे हैं । अंधश्रद्धा के अंधकार में स्वंय तो बहक रहे है और अन्यों को भी बहकाने के प्रयास कर रहे हैं ।

यदि मोल्वी इस्माईल दहेल्वी एन्ड कंपनी के तथाकथित जेहाद को एक क्षण के लिये भी 'जेहाद' मान लिया जाए, तो वहाबी धर्मगुरूओं की स्थिति अत्यंत आलोचनात्मक हो जाएगी । जैसा कि शीखों के विरुद्ध 'शीदु' नामक जगह पर हुई लडाई में वे कायरतापुर्वक भाग निकले थे और 'मेदाने-जेहाद' से 'कायर' की तरह भाग जाने वालों के लिये इस्लामी द्रष्टिकोण से विवरण किया जाएगा, तो फिर उन को मिलने वाले विशेषणों से बचाना कठिन हो जाएगा ।

जेहाद, शहीद, गाजी तथा शहादत जैसे उच्च आदर और सम्मान धारक पदों का वहाबीयों ने इतनी हद तक अवमुल्यन किया है कि व्यभिचारीओं, डाकूओं तथा लूटेरो को ऐसे खिताब प्रदान करने में थोडा भी लोभ से काम नहीं लिया । इस से पूर्व सय्यद अहमद के अनुगामी नेअ्मतुल्लाह का वर्णन हो चुका है । नेअमतुल्लाह को तथाकथित मुजाहिदों का सरदार बनाया गया था । अमीर नेअमतुल्लाह औरतों का बहुत रशिया था । पूर्व पर्णनासुर वह १०-१२ युवा स्त्रीओं को एक साथ रखता और भोग-विलास करता था। उस के ऐसे कर्मों का परिणाम यह आया कि :-

हवाला नं. ५

"मौलाना अब्दुल करीम की वफात के बाद मौलाना अब्दुल्लाह के पोते नेअ्मतुल्लाह खाँ अमीर बनाए गए। जिन को किसी मुसलमान ने शहीद कर दिया।"

हवाला :- "उलमाए हिन्द का शानदार माजी", लेखक :- सय्यद मुहम्मद मियां, व्यवस्थापक :- जमीअतुल उलमाए हिन्द, प्रकाशक :- एम ब्रधर्स, भाग : ३, पृष्ठ : ७३
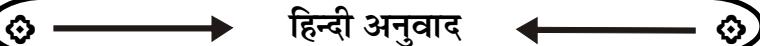
"मौलाना अब्दुल करीम के अवसान के बाद मौलाना अब्दुल्लाह के पोते नेअ्मतुल्लाह खाँ को अमीर बनाया गया। जिस को किसी मुसलमान ने शहीद कर दिया।"

अमीर नेअ्मतुल्लाह जो वहाबी-तबलीगी जमाअत के सरदार मोल्वी इस्माईल दहेल्वी के पीर सय्यद अहमद रायबरेल्वी का 'खलीफा' तथा वहाबी सेना का 'अमीरुल मुजाहिदीन' था। वो हमेंशा विलासी जीवन जीता था और अपनी विकृत वासना की तृप्ति की चेष्टाओं में व्यस्त रहता था। कई युवतियाँ उस की वासना का शिकार हुई थीं। उस के पापो की चर्चा चारों तरफ फैली हुई थी। हो सकता है कि ऐसे व्यभिचारी को किसी ने आवेश में आ कर मार डाला हो। ऐसी व्यक्ति अपने पापी-कर्मों के कारण बूरी मौत ही मरती है। यदि ऐसी व्यक्ति की हत्या हो जाए तब भी कोई आश्चर्य नहीं होता।

किन्तु ऐसी व्यक्ति की हत्या को शहादत में समाविष्ट कर के 'शहीद कर दिया' जैसे वाक्य प्रयोग करना तथा उस को शहीद की तरह उल्लेखित करने की चेष्टा निसंदेह निंदनीय है।

यदि इसी तरह असामाजिक तत्वों को शहीद का संबोधन दिया जाऐगा तो फिर प्रत्येक डाकू, आवारा, खून के व्यापारी कि जो अधिकांश बुरी मोत मरते हैं, वो सब भी शहीदों की सूची में बहुत सरलता से समाविष्ट हो जाएंगे। किसी के मकान में चोरी करने हेतु गया हुवा चोर घर का मालिक जागृत होते ही भागे और छत से फलांग लगाते समय नीचे गीर कर मर जाए, लूंटेरे लूटमार करने जाएं और पुलिस के साथ मुठभेड में मारे जाएं, क्या वे सब को भी 'शहीद' के शिर्षक से सम्मानित किया जा सकता है ? कदापि नहीं, तो फिर अंग्रेजों के गुलाम, बारगाहे रिसालत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के गुस्ताख, राष्ट्र के बागी, मुस्लिम समाज के शत्रु, अत्याचारी एंव व्यभिचारी वहाबी-तबलीगी जमाअत के धर्मगुरूओं को 'शहीद' के संबोधन और शीर्षक से क्यूं सम्मानित किया जाता है ?

भारत के देशद्रोहियों पर अंग्रेजों द्वारा पुरस्कारों की वर्षा

अंग्रेजों ने केवल भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के अन्य कई देशों में अपने 'गुलामों' को नियुक्त किया था। वे गुलामों ने अपनी ही 'मातृभूमि' के साथ विद्रोह कर के अंग्रेजी साम्राज्य की बुनियादों को बलवान किया था। ऐसे देश द्रोहियों को सम्मानित कर के अंग्रेजों ने उन को आर्थिक तौर पर मालामाल कर दिया। भारत में अंग्रेजों विरुद्ध प्रारंभ हुई लडाई तथा स्वतंत्रता आंदोलन को असफल बनाने का महत्वपूर्ण कार्य करने के बदले में अंग्रेजों ने वहाबी-तबलीगी जमाअत के मुल्लाओं को कैसे-कैसे उपहार से सम्मानित किया था। उस की संक्षिप्त में माहिती प्रस्तुत है।

हवाला : १

वहाबी-तबलीगी जमाअत की दो मुख्य संस्थाए (१) ओल इन्डिया जमीअतुल उलमाए इस्लाम तथा (२) जमीअतुल उलमाए हिन्द के अध्यक्ष (१) मोल्वी शब्बीर अहमद उष्मानी तथा (२) मोल्वी हुसेन अहमद मदनी के बीच राजकीय बात को ले कर तीव्र मतभेद उत्पन्न हुए थे । वे मतभेदों के समाधान के लिये दोनों संस्था के नेतागण की एक बेठक का आयोजन ७, दिसम्बर - १९४५ के दिन उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिल्ले के देवबंद शहर में किया गया था । जिस की (मिनीट्स) दारुल उलूम देवबंद के स्थापक मोल्वी कासिम नानोत्वी के पोते ताहिर अहमद कासमी ने छाप कर प्रसिद्ध किया था ।

मोल्वी शब्बीर अहमद उष्मानी के विरुद्ध वाद-विवाद कर रहे जमीअतुल उलमाए हिन्द के प्रतिनिधि मंडल के सभ्य मोल्वी हिफजुर्रहमान ने जो कहा था, वह उसी अक्षरों में निम्नलिखित है ।

"मोलाना हिफजुर्रहमान साहब ने कहा : इल्यास साहब रहमतुल्लाहि अलैह की तबलीगी तहरीक को इब्तिदाअन हुकूमत की जानिब से ब-जरीआ रशीद अहमद साहब कुछ रुपिया मिलता था, फिर बंद हो गया ।"

हवाला :- "मकालमतुस्सदरैन", संपादक :- मोल्वी ताहिर अहमद कासमी, प्रकाशक :- रहमानी प्रेस, मोहल्ला गरहिया, दिल्ही, पृष्ठ : ८

हिन्दी अनुवाद

"मोलाना हिफजुर्रहमान साहब ने कहा : इल्यास साहब रहमतुल्लाहि अलैह के धर्म प्रचार के आंदोलन

को प्रारंभ में प्रशासन की तरफ से हाजी रशीद अहमद साहब के माध्यम से कुछ रुपिये मिलते थे, फिर बंद हो गए ।"

अब यहां पर तबलीग जमाअत की वास्तविकता भी सामने आ रही है कि इस जमाअत का स्थापक मोल्वी इल्यास कांधलवी भी अंग्रेजों द्वारा खरीदा हुवा था । तब्लीग जमाअत के बारे में यह भ्रांति फेलाई जाती है कि यह जमाअत केवल इस्लाम की सेवा तथा धर्म का प्रचार करने हेतु अस्तित्व में लाई गई है । यदि यही उद्देश्य ही प्रमुख स्थान पर है तो अंग्रेजों ने यह संस्था को प्रारंभ से ही क्यूं सहायता प्रदान की ? अंग्रेज कि जो इस्लाम के कट्टर शत्रु हैं, उन को तबलीगी जमाअत के लिये सहानुभूति क्यूं होने लगी ? इस्लामी कानून के प्रचार में अंग्रेजों को कब से दिलचस्पी होने लगी ? अज्ञान मुस्लिम इस्लामी शिक्षण प्राप्त करें ऐसी भावना अंग्रेजों में कब से पैदा हो गई ? इस्लाम के उदयकाल से ही इस्लाम के शत्रु इस्लाम का नामो निशान मिटाने के लिये कई बार युद्ध कर चुके हैं। उन अंग्रेजों को क्या चिंता थी कि इस्लामी शिक्षण के प्रचार के लिये आर्थिक सहायता करें । ईसाई धर्म के प्रखर अनुयायी तथा समर्थक ऐसे ब्रिटिशर्स इस्लाम के हमदर्द बनकर तबलीगी जमाअत को क्यूं आर्थिक सहायता कर रहे थे ? बाइबल के स्थान पर कुरआन के शिक्षण तथा प्रचार के लिये क्यूं दाता बने हुए थे ? सुक्ष्म से सुक्ष्म बात को राजकीय तथा आर्थिक लाभ की द्रष्टि से देखने वाले अंग्रेज तबलीग जमाअत के प्रचार कार्य में उदारवृति दिखा कर क्या निःस्वार्थ थे ? मुसलमानों के उपर असिम अत्याचार करने वाले, मुस्लिमों के पवित्र धर्म स्थानों की मानहानि करने वाले, दिल्ही की जामेअ मस्जिद में घोडे बांध कर घोडों के मल-मूत्र से मस्जिद की

जगह को अपवित्र करने वाले अंग्रेज क्या तबलीग जमाअत को इस्लाम प्रति आदर के कारण सहकार दे रहे थे ? मुसलमानों की शैक्षणिक संस्थाओं को तोप के गोले मार कर तबाह करने वाले अंग्रेज तबलीग जमाअत की गतिविधियों को सहायता कर के क्या वास्तव में मुस्लिम समाज प्रति सहानुभूति रखते थे ?

मोल्वी इल्यास कांधल्वी कि जो वहाबियों के इमाम मोल्वी रशीद अहमद गंगोही का मुरीद तथा शिष्य था। मोल्वी इल्यास द्वारा स्थापित तबलीग जमाअत का हेतू वहाबियत का प्रचार करना था। वहाबियत फेला कर मुसलमानों को कई पंथों में बिखेर देना, यह अंग्रेजों की निती थी और अंग्रेजी पोलीसी अनुसार काम करने वाली संस्था को अंग्रेज अवश्य सहायता प्रदान करेंगे ही। अंग्रेज को तो इस्लाम के नाम से भी शत्रुता थी। वे इस्लाम को खत्म करने के लिये कुछ भी करने को तैयार थे। इसी लिये तबलीग जमाअत को सहायता प्रदान कर के अंग्रेज इस्लाम को भारी नुकसान पहुंचाने की दिशा में आगे बढ रहे थे। तबलीग जमाअत को सहायता दे कर इस्लाम को नुकसान पहुंचाने के साथ-साथ अंग्रेजों का दुसरा हेतू यह भी था कि मुसलमान मजहब के नाम पर वहाबीयों के साथ झगडने में इतना उलझ जाएंगे कि भारत की स्वतंत्रता की लडाई को भूल जाएंगे।

केवल मोल्वी इस्लाय ही नहीं बल्कि वहाबी तबलीगी जमाअत के सरदार और वहाबीयों के हकीमुल उम्मत मोल्वी अशरफ अली थानवी भी अंग्रेजों की तनख्वाह (वेतन/Salary) खाते थे।

हवाला : २

उपरोक्त हवाले में वर्णन की हुई बेठक में जमीअतुल उलमाए हिन्द के प्रतिनिधि ने मोल्वी इल्यास कांधलवी की तबलीगी प्रवृत्ति को अंग्रेजी सहायता प्राप्त होने का घस्फोट किया, उस का प्रत्युत्तर देते हुए मोल्वी शब्बीर अहमद उस्मानी ने कहा :

"देखिये हजरत मौलाना अशरफ अली साहब थान्वी (रह.) हमारे आपके बुजुर्ग व पेश्वा थे। उन के मुतअल्लिक बअज लोगों को यह कहते हुए सुना गया कि उन को छे सो रुपिये (रु. ६००/-) माहवार हुकूमत की जानिब से दिए जाते थे।"

हवाला :- "मकालमतुस्सदरैन", संपादक :- मोल्वी ताहिर अहमद कासमी, प्रकाशक :- रहमानी प्रेस, मोहल्ला गरहिया, दिल्ही, पृष्ठ : १०

हिन्दी अनुवाद

"देखिये हजरत मौलाना अशरफ अली साहब थान्वी (रह.) हमारे सर्वमान्य वरिष्ठ तथा नेता थे। उन के विषय कुछ लोगों को यह कहते हुए सुना गया है कि उन को मासिक छे सो रुपिया (रु. ६००/-) प्रशासन की तरफ से अर्पण किये जाते थे।"

वहाबी-तबलीगी जमाअत के सर्व-स्वीकृत नेता जिस को तबलीग जमाअत के लोग 'हकीमुल उम्मत' और 'मुजद्दिद थान्वी' के सम्मान पुर्वक संबोधन से संबोध करते हैं, उस मोल्वी अशरफ अली थानवी को अंग्रेजी हुकूमत की तरफ से मासिक छे सो रुपिया की तनख्वाह (वेतन) मिलती थी। यानी कि मोल्वी थान्वी अंग्रेजों के वेतनभोगी कर्मचारी थे।

एक तरफ तो अंग्रेज मुसलमानों के रुहानी पेश्वा तथा सर के ताज जैसे आलिम जैसा कि अल्लामा फजले हक खैराबादी, मुफ्ती इनायत अहमद काकोरवी, हजरत किफायतुल्लाह 'काफी' तथा मुफ्ती सदरुद्दीन आजुर्दा जैसे जंगे आजादी के महान बिन-वहाबी सुन्नी सूफी बरेल्वी पंथी आलिमों को आजीवन कारावास,

फांसी तथा संपति की जब्ती जैसी सख्त सजा दे रहे हैं और दूसरी तरफ वहाबी-तबलीगी जमाअत के पेश्वाओं को उस सस्ताई के समय में मासिक (६००) रुपिया जैसी बडी राशी की सहायता कर रहे थे, यह क्या संकेत कर रहा है ? अंग्रेज अपने वफादार गुलामों की वफादारी की कदर कर रहे थे और अंग्रेजों के वफादार तथा भारत के बागी भारत की स्वतंत्रता की लडाई में विध्न डालने के लिये मजहब का सहारा ले कर भारतीय प्रजा को आंतर विग्रह की अग्नि में डाल रहे थे ।

अंग्रेजों ने मुसलमानों के उपर अत्याचार करने में जरा भी क्षति नहीं रखी थी । मादरे वतन सरजमीने हिन्दुस्तान को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त कराने के लिये स्वतंत्रता की लडाई में भाग भाग ले रहे मुसलमानों को निर्दयता पुर्वक मार डाला था ।

हवाला : ३

''अंग्रेजो की बरबरीयत का अंदाजा इस एक वाकिये से होगा कि सिर्फ दहेली में उन्होंने सत्ताइस हजार मुसलमानों को फांसी पर लटका दिया ।''

हवाला :- ''हिन्दुस्तानी मुस्लिम सियासत पर एक नजर'', लेखक :- डो. मुहम्मद अशरफ, पृष्ठ : १७

''अंग्रेजो की निर्दयता का अंदाजा (अनुमान) इस एक घटना से ही आ जाएगा कि केवल दिल्ही में ही उन्होंने सत्ताइस हजार (२७,०००) मुसलमानों को फांसी पे लटका दिया ।''

केवल एक दिल्ही में ही सत्ताइस हजार (२७,०००) मुसलमानों को फांसी पे चढा देने वाले अंग्रेज़ों ने अखंड भारत में लाखों की मात्रा में मुसलमानों को शहीद कर दिया था । मुस्लिम महिलाओं को विधवा और मुस्लिम बच्चों को अनाथ बनाने वाले अंग्रेज हत्यारे कि जिसके अत्याचार की कहानी सिर्फ सुनने से ही पाठकों की आँखों से लहू के आँसू टपकेंगे, ऐसे अत्याचारी अंग्रेज वहाबी-तबलीगी जमाअत के हकीमुल उम्मत की द्रष्टि से कैसे थे ? यह देखें :-

हवाला : ४

''एक शख्स ने मुझ से दरियाफ्त किया था अगर तुम्हारी हुकूमत हो जाए तो अंग्रेजों के साथ क्या बरताव करोगे ? मैंने कहा कि महकूम बनाकर रखेंगे । क्यूंकि जब खुदा ने हुकूमत दी तो महकूम बनाकर ही रखेंगे । मगर साथ ही इस के निहायत राहत-व-आराम से रखा जाएगा । इसलिये कि उन्होंने हमें आराम पहुंचाया है ।''

संदर्भ :- ''अल-इफादातिल-यौमिया'' (मोल्वी थान्वी के कथनो का संग्रह) संपादक :- मोल्वी अजीजुल हसन, प्रकाशक :- मक्तबा तालीफाते अशरफिया, थानाभवन (यू.पी.) भाग : ४, पृष्ठ : ६९७

''एक व्यक्ति ने मुझ से प्रश्न किया कि यदि तुम्हारा शासन हो जाए तो अंग्रेजों के साथ कैसा वर्तन व्यवहार करोगे ? मैंने कहा कि शासित बनाकर रखेंगे । साथ ही साथ अत्यंत राहत और शांति से रखेंगे क्यूंकि उन्होंने हम को आराम पहुंचाया है ।''

मुसलमानों की सामुहिक हत्या करनेवाले अंग्रेज के अत्याचार मोल्वी थानवी को नहीं दिख रहे क्यूंकि मासिक छे सो (६००) की भारी राशी से मोल्वी थानवी की जेब गरम हो रही थी। इ.स. १९४२ के समय की छे सो रुपिये की रकम वर्तमान समय अनुसार कितनी हुई उस की गणना (आज कल) करते हैं। इ.स. १९४२ में २४, केरट (शुद्ध) सोने की कींमत एक तोले की रू ३० थी । आज (मार्च २०१८) में २४, केरेट सोने की कींमत एक तोले की लगभग रू ३०,००० जितनी है। यानी कि ३०,००० ÷ ३० = १००० गुना दाम हो गया है। उस हिसाब से ६०० × १००० = ६,००,००० (छे लाख) हुए। संक्षिप में इस्वी १९४२ में रु ६०० की कींमत वर्तमान समय में रु ६,००,००० (छे लाख रूपिये) जितनी होती है। इस हिसाब से जिस व्यक्ति को अंग्रेज घर पर वर्तमान समय के अनुसार ६,००,००० रूपिये जितनी बडी रकम पहुंचाते हों, वह व्यक्ति अंग्रेज की प्रशंसा नहीं करेंगी तो क्या मुजरा करेगी ? वर्तमान समय में मासिक छे लाख (६,००,०००) जितनी तनख्वाह प्राप्त करने वाला व्यक्ति जिस तरह मोज-मस्ती तथा ऐशो-आराम से जीवन व्यतित कर सकता है, ऐसा ही वैभवी जीवन इस्वी १९४२ में छे सो रुपिया (६००) मासिक तनख्वाह प्राप्त करने वाला व्यक्ति व्यतित कर सकता था। मोल्वी थानवी भी अंग्रेज द्वारा प्राप्त हो रहे मासिक रुपिया ६००/- के कारण ऐशो-आराम करते थे । इसी लिये तो उन्होंने कहा कि अंग्रेजों ने हमें आराम पहुँचाया है। यह तो दोनों तरफ से समझौता था। मोल्वी थानवी अंग्रेजों के विरोधी मुसलमानों को तितर-बितर करने का कार्य करते थे। और उसके कार्य के पुरस्कार स्वरुप अंग्रेज उस को बहुत बडी रकम अर्पण करते थे। धर्म बंधूओं और देश बंधूओं का मोल्वी थानवी ने अंग्रेजों के साथ सौदा किया था और उस सौदे के बदले उन को मासिक तनख्वाह मिलती थी।

उस तनख्वाह का आभार व्यक्त करने मोल्वी थानवी कह रहा है कि अंग्रेजों ने हमें आराम पहुँचाया है। स्वंय अंग्रेजों की संपति खा कर आराम कर रहा था और मुस्लिम कौम पर अंग्रेज अत्याचारो के पर्वत ढा रहे थे । बल्कि मोल्वी थानवी ने अपने अंगत स्वार्थ हेतु कयामत तक मिल्लते इस्लामिया को फिर्काबंदी, फित्ना, फसाद, वाद-विवाद, मतभेद तथा मजहबी झगडों में डाल कर अंग्रेजों की नमक हलाली का हक अदा किया है।

अंग्रेजों के वेतन भांगी मोल्वी अशरफ अली थानवी के भाई अंग्रेज़ों की कृपा द्रष्टि प्राप्त कर चुके थे और प्रशासन के महत्व के पदों पर नियुक्त रहे।

हवाला :-

"मोलाना मरहूम थानवी के भाई मोहकम-ए-सी.आई.डी. में बडे ओहदेदार आखिर तक रहे। उन का नाम मजहर अली है।"

संदर्भ :- "मकतूबाते-शैखुल-इस्लाम", लेखक :- मुनाजिर अहसन गिलानी, पृष्ठ नं. २९७

हिन्दी अनुवाद

"मोलाना मरहूम थानवी के भाई सी.आई.डी. विभाग में बडे अधिकारी के तौर पर अंत तक रहे। उन का नाम मजहर अली है।"

देखिये ! वहाबी-तबलीगी जमाअत के संग और संपर्क में रहने वाली प्रत्येक संस्था पर अंग्रेजों की कृपाद्रष्टि थी। और बिन-वहाबी सुन्नी बरेल्वी पंथी व्यक्ति अथवा संस्था के उपर अंग्रेज का हमेंशा प्रकोप ही रहा । क्यूंकि बिन-वहाबी, सुन्नीयों ने भारत की

स्वतंत्रता की लडाई में महत्व का भाग लिया था और अंग्रेजों के गति रोधक बने रहे ।

भारत में वहाबी-देवबंदी-तबलीगी द्रष्टिकोण के प्रचार-प्रसारण के लिये उत्तरप्रदेश के सहारनपुर जिल्ले के देवबंद नामक गाँव में दारुल उलूम देवबंद की जो स्थापना की गई, उसकी अंग्रेजों ने बहुत सहायता की । उसके खिलाफ अंग्रेजों ने सुन्नी बरेल्वी सूफी पंथी संस्थाओं का विनाश करने में अल्प क्षति भी नहीं होने दी ।

अंग्रेजी साम्राज्य के द्रुष्ट तथा धातकी वहीवटदारो ने हिन्दुस्तान की स्वतंत्रता की लडाई को सहायता तथा समर्थन कर रही प्रत्येक व्यक्ति तथा संस्था को चुन-चुन कर खत्म करने का प्रयास किया, और स्वतंत्रता की लडाई के विरोधी तथा अंग्रेज के गुलाम और मातृ-भूमि भारत के विद्रोहियों को आर्थिक तथा प्रत्येक प्रकार की सहायता कर के प्रोत्साहित किया था ।

वहाबी, देवबंदी और तबलीगी गृप की महत्व की संस्था दारुल उलूम देवबंद की स्थापना हुई, तो प्रारंभ में अंग्रेजों को शंका हुई कि कदाचित यह संस्था द्वारा भारतीय मुसलमानो को अंग्रेजो के विरुद्ध एकत्रित कर के स्वतंत्रता की लडाई को प्रबल बनाई जाएगी । यह संस्था अंग्रेजों के विरुद्ध कार्य करती है कि नहीं ? उस की माहिती एकत्रित करने के लिये लेफटन्ट गवर्नर के एक गुप्त मुखबिर मिस्टर पामर को नियुक्त किया गया । मिस्टर पामर ने दारुल उलूम देवबंद के विषय में अपना अभिप्राय कुछ इस तरह दिया :

हवाला :-

> "यह मदरसा खिलाफे सरकार नहीं, बल्कि मुवाफिके सरकार मुम्दिद मुआविने सरकार है ।"

संदर्भ :- "मोलाना मुहम्मद अहसन नानोत्वी", लेखक :- मुहम्मद अय्यूब बिन मियां मशीयतुल्लाह, प्रकाशक :- रोहिलखंड लिट्रेचर सोसायटी, कराची (पाकिस्तान) पृष्ठ : २१७

हिन्दी अनुवाद

> "यह मदरसा गवर्नमेन्ट का विरोधी नहीं, परन्तु गवर्नमेन्ट के अनुकुल, मददगार और सहायक है ।"

✪ अन्य एक हवाला प्रस्तृत करता हूँ :-

हवाला :-

> "मद्रस-ए-देवबंद के अराकीन में अकषरियत ऐसे बुजुर्गों की थी जो गवर्नमेन्ट के कदीम मुलाजिम और पेन्शन याफ्ता थे । जिन के बारे में गवर्नमेन्ट को शक्को-शुब्ह की कोई गुंजाइश नहीं थी ।"

संदर्भ :- "सवानेह कासमी", लेखक :- मोलवी मुनाजिर अहसन गीलानी, प्रकाशक :- दारुल उलूम देवबंद, भाग : २, पृष्ठ : २४७

हिन्दी अनुवाद

> "देवबंद के मदरसे के वहीवटकर्ताहों में बहुमती ऐसे लोगों की थी जो गवर्नमेन्ट के भूतपुर्व कर्मचारी थे तथा पेन्शन प्राप्त करने वाले थे । जिन के बारे में गवर्नमेन्ट को कोई शंका का स्थान नहीं था ।"

दारुल उलूम देवबंद तथा उलमाए देवबंद अंग्रेज के हाथो बिक चुके थे उस की स्पष्ट साक्षी के तौर पर एक और हवाला प्रस्तृत है ।

हवाला :-

"बर्रे सगीर की तारीख में मालूम होता है कि उलमाए देवबंद हुकूमत के वजीफा ख्वार थे। और दारुल उलूम देवबंद को हुकूमत की जानिब से इमदाद मिलती थी।

संदर्भ :- "जरीदा तर्जुमान", (साप्ताहिक) दिल्ही, दिनांकः ११, सितम्बर १९९१, पृष्ठ : ६, कोलम नं. ४ में प्रस्तुत किया हुवा २४-१-१८८३ के समाचार पत्र में 'जंग दैनिक' का संदर्भ

"उप खंड के इतिहास में मालूम होता है कि देवबंद के आलिम प्रशासन के वेतनभोगी थे और दारुल उलूम देवबंद को प्रशासन की तरफ से सहायता मिलती थी।"

उपरोक्त संदर्भो द्वारा यह बात मध्याहन के सुर्य की तरह स्पष्ट हो गई कि वहाबी-देवबंदी-तबलीगी जमाअत की प्रमुख संस्था दारुल उलूम देवबंद अंग्रेज द्वारा मिल रही सहायता के बल पर प्रगति कर सकी है। यह संस्था द्वारा हिन्दुस्तानी मुसलमानों के दिलों में अंग्रेज प्रति घृणा की अग्नि को शांत करने की प्रवृत्तियाँ कर के भारत की स्वतंत्रता की लडाई को असफल बनाने का प्रयास किया गया। यह कार्यात्वयन दारुल उलूम देवबंद के आलिमो द्वारा सिद्ध करने के पुरस्कार के तौर पर अंग्रेजों से नाणाकीय सहायता एंव खिताब प्राप्त किए।

दारुल उलूम देवबंद के स्थापको में दारुल उलूम देवबंद के प्रधान अध्यापक मोल्वी महमूदुल हसन देवबंदी (कि जिसको वहाबी-

तबलीगी जमाअत के अनुयायी शैखुल हिन्द के खिताब से संबोधित करने में गर्व करते है) के पिता मोल्वी जुल्फिकार अली भी था। उसको अंग्रेजी प्रशासन प्रति निष्ठा के उपहार स्वरूप ओनररी मेजीस्ट्री का पद मिला था। उसके अलावा दारुल उलूम देवबंद के व्यवस्थापक हाफिज अहमद को अंग्रेजों ने 'शम्सुल उलमा' का संबोधन प्रदान किया था।

वहाबी-देवबंदी वर्ग के लगभग अग्रहियों ने अंग्रेजों प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त की है। मोल्वी इस्माईल दहेल्वी, सय्यद अहमद रायबरेल्वी, मोल्वी रशीद अहमद गंगोही, मोल्वी अशरफ अली थानवी, मोल्वी इल्यास कांधलवी, मोल्वी मुहम्मद अहसन नानोत्वी इत्यादिने खुले तौर पर अंग्रेजों की तरफदारी की तथा भारत की स्वतंत्रता की लडाई का विरोध किया। जिस की विस्तृत माहिती यहाँ तक के पठन से प्राप्त हो चुकी होगी।

बिन-वहाबी, सुन्नी, बरेल्वी आलिमों ने हमेंशा अंग्रेजी साम्राज्य का विरोध किया और इस देश को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त कराने के लिये हमेंशा 'बहादुर योद्धा' की तरह संघर्ष किया। सुन्नी बरेल्वी सूफी पंथी आलिमो द्वारा प्रारंभ की हुई स्वतंत्रता की लडाई के कारण अंग्रेजों को बहुत हानि पहुंची। इस्वी १८५७ का विद्रोह शांत होने के बाद अंग्रेजों ने स्वतंत्रता की लडाई में भाग लेने वाले बिन-वहाबी सुन्नी आलिमो को दन्ड देने के लिये जो अत्याचार किये है, उन के मात्र वर्णन से कपकपी तारी हो जाती है। उसके पहले के पृष्ठो में फांसी की सजा, आजीवन केद, संपति जब्त करना, कारावास जैसी यातनाए तथा अन्य तरह से देश के लिये कष्ट सहन करने वाले सुन्नी आलिमों की माहिती संक्षेप में वर्णन कर दी गई है और साथ ही साथ अंग्रेजों के गुलाम और मातृ-भूमि भारत के देशद्रोहियों ने अंग्रेजों से प्राप्त की हुई आर्थिक तथा सामाजिक सहायता का वर्णन भी कर दिया है।

''इमाम अहमद रजा फाजिले बरेल्वी का जन्म स्थल बरैली तथा स्वतंत्रता की लडाई''

उत्तर प्रदेश का बरेली शहर कई बातों के कारण महत्व रखता है । दुनियाभर में फेले हुए बिन-वहाबी, सुन्नी पंथ के अनुयायीओं के आध्यात्मिक रहनुमा आ'ला हजरत इमाम अहमद रजा खाँ फाजिले बरेल्वी का जन्मस्थल होने के साथ साथ बरेली एक एसा स्थान है, जहाँ स्वतंत्रता सेनानीओं ने अंग्रेजों के कदम उखाड दिए थे ।

जंगे आजादी के मुख्य नायक हजरत अल्लामा फजले हक खैराबादी द्वारा अंग्रेज विरुद्ध दिये गए जेहाद के फत्वे का समग्र बिन-वहाबी, सुन्नी आलिमों ने समर्थन तथा अनुमोदन किया । इमाम अहमद रजा फाजिले बरेल्वी के दादा हजरत अल्लामा रजा अली ने भी जेहाद के फत्वे की तरफदारी की और अंग्रेजो के विरुद्ध चल रही स्वतंत्रता की लडाई को प्रत्येक रूप से मदद की । यहां तक कि अंग्रेज सेना पर धावा बोलने के लिये स्वतंत्रता सेनानीयों को आपने बिना-मुल्य पर घोडे उपलब्ध कराए । मुजाहिदों को घोडे तथा खाद्य सामग्री पहुंचाने की जिम्मेदारी आपने अपने बेटे रईसुल अत्किया हजरत मोलाना रजा अली खाँ को सोंपी थी । हजरत मोलाना नकी अली खाँ आ'ला हजरत इमाम अहमद रजा खाँ के पिता थे । बाप-बेटे दोनों ने तन-मन-धन की बाजी लगाकर अंग्रेजों के विरुद्ध स्वतंत्रता की लडाई एंव आंदोलन को अति-वेगवान बना दिया । स्वंय अंग्रेज इतिहासकार मिल्लीसन इस बात का स्वीकार करते हुए लिखता है कि :-

हवाला :-

''बर्तानवी हुक्काम तमाम हिन्द पर कब्जा करने की हर मुम्किन कोशिश कर रहे थे । तो उस वक्त फजले हक खैराबादी, अहमदुल्लाह शाह मद्रासी, इमाम बख्श सहबाई और रजा अली बरेल्वी जैसे मोल्वी तसल्लुत के खिलाफ अपनी भरपूर कोशिश कर रहे थे ।''

संदर्भ :- ''हयाते मुफ्ती आजम'', लेखक :- मिर्जा अब्दुल वहीद बेग, प्रकाशक :- इदारा तेहकीकाते मुफ्ती आजमे हिन्द, बरेली, पृष्ठ : २८

हिन्दी अनुवाद

''ब्रिटीश प्राधिकारी समग्र भारत पर कब्जा करने की सब संभव प्रयत्न कर रहे थे । उस समय फजले हक खैराबादी, अहमदुल्लाह शाह मद्रासी, इमाम बख्श सहबाई तथा रजा अली बरेल्वी जैसे मोल्वी अंग्रेजी प्रभाव के विरुद्ध भरपूर प्रयास कर रहे थे ।''

सुन्नी आलिमो द्वारा दिये गए जेहाद के फत्वे ने समग्र भारत के मुसलमानों को अंग्रेज विरुद्ध लडने के लिये मेदान में ला कर खडा कर दिया । मुस्लिमो के प्रतिकार से अंग्रेज अति-भयभीत थे। अंग्रेज समझते थे कि सुन्नी बरेल्वी सूफी पंथी मोल्वीओं द्वारा दिये गए जेहाद के फत्वे के कारण ही मुसलमान स्वतंत्रता की लडाई में भाग ले रहे है । अंग्रेज चाहते थे कि वह फत्वे की महत्वता को ही कम कर दें । अपनी इस इच्छा को पूर्ण करने के लिये अंग्रेजों ने वहाबी-देवबंदी-तबलीगी जमाअत के एक प्रखर वक्ता मोल्वी मुहम्मद अहसन नानोत्वी को इस कार्य में लगा दिया । मोल्वी मुहम्मद

अहसन नानोत्वी को वहाबी-देवबंदी-तबलीगी गिरोह के नेता अति आदर द्वारा सम्मानित करते थे । मोल्वी मुहम्मद अहसन नानोत्वी ने जेहाद के फत्वे के विरुद्ध तथा अंग्रेज तरफी प्रचार का प्रारंभ कर दिया ।

इस्वी १८५७ के मई महीने की २२, मी तारीख को शुक्रवार के दिन बरेली शहर के ''नौ-महोल्लाह'' की मस्जिद में मोल्वी मुहम्मद अहसन नानोत्वी ने जो प्रवचन किया था, उस का वर्णन स्वंय मोल्वी मुहम्मद अहसन नानोत्वी के जिवन वृतांत में निम्न अनुसार उल्लेखित है ।

हवाला:-

''२२, मई को नमाजे जुम्आ के बाद मोलाना मुहम्मद अहसन साहब ने बरेली की मस्जिदे नौ-महोल्लाह में मुसलमानों के सामने एक तकरीर की और उस में बताया कि हुकूमत से बगावत करना खिलाफे कानून है ।''

संदर्भ :- ''मोलाना मुहम्मद अहसन नानोत्वी'', लेखक :- मुहम्मद अय्यूब बिन मशीयतुल्लाह, प्रकाशक :- रोहिलखंड लिट्रेचर सोसायटी, कराची (पाकिस्तान) पृष्ठ : ५

हिन्दी अनुवाद

''२२, मई के दिन जुम्आ की नमाज के बाद मोल्वी मुहम्मद अहसन साहब ने बरेली के नौ-महोल्लाह मस्जिद में मुस्लिमों के समक्ष एक प्रवचन किया और उस में कहा कि प्रशासन विरुद्ध विद्रोह करना कानून के खिलाफ है ।''

उपरोक्त घटना के समर्थन में यदि पाठकों को विशेष अधिक संदर्भों की आवश्यकता हो, तो निम्नलिखित संदर्भ पर द्रष्टिपात कर सकते हैं ।

(1) Fifty Seven by Henery George Keene, Page No. 128 (London - 1883)

(2) Freedom Struggle in U.P., Volume 5, Page No. 170

मोल्वी मुहम्मद अहसन नानोत्वी के उपरोक्त प्रवचन ने आजादी की लडाई लड रहे मुसलमानो को आघात का भारी झटका दिया । समाज में रोष की अग्नि भडकने लगी । क्यूंकि मुसलमानों के दिलों में मचल रही ''आजादी की भावना'' को एक मोल्वी ने चुनौती दी थी । यह केवल चुनौती ही नहीं थी बल्कि सुन्नी आलिमो द्वारा स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिये दिये गए ''जेहाद के फत्वे'' का खुले तौर पर उल्लंघन तथा खन्डन था । मुसलमानो के देश प्रेम की भावना के साथ साथ धार्मिक भावना भी आहत हुई थी । उस समय बरेली के मुसलमानो के मजहबी नेता आ'ला हजरत इमाम अहमद रजा फाजिले बरेल्वी के दादा हजरत मौलाना रजा अली खाँ साहब थे । आपने मोल्वी मुहम्मद अहसन नानोत्वी के कथनो का भरपूर विरोध किया तथा अंग्रेज के एजन्ट की भ्रामक जाल में न फंसाने का मुसलमानो से अनुरोध किया । परिणाम स्वरुप मुसलमानो ने हजरत मोलाना रजा अली खाँ के उपदेश को मार्गदर्शक समझकर आजादी की लडाई में भाग लेने के निर्णय में अटल रहे । वहाबी मोल्वी की देश प्रति बगावत के उपर मुसलमानो ने फिटकार बरसाई।

हवाला :-

''इस तकरीर ने बरेली में एक आग लगा दी और तमाम मुसलमान मोलाना मुहम्मद अहसन नानोत्वी

के खिलाफ हो गए । अगर कोतवाले शहर शैख बदरुद्दीन की फरमाइश पर मोलाना बरेली न छोडते तो उन की जान को भी खतरा पेदा हो सकता था ।''

संदर्भ :- ''मोलाना मुहम्मद अहसन नानोत्वी'', लेखक :- मुहम्मद अय्यूब बिन मशीयतुल्लाह, प्रकाशक :- रोहिलखंड लिट्रेचर सोसायटी, कराची (पाकिस्तान) पृष्ठ : ५१

''यह प्रवचन ने बरेली में आग लगा दी और सब मुसलमान मोलाना मुहम्मद अहसन नानोत्वी के विरोधी हो गए । यदि शहर के कोतवाल शैख बदरुद्दीन के सुझाव पर मोलाना बरेली शहर छोड कर गए न होते, तो उन के प्राण को भी संकट उत्पन्न हो सकता था ।''

अपनी जान पर जोखिम होने के कारण अंग्रेजों के एजन्ट तथा वहाबी-देवबंदी वर्ग का मोल्वी बरेली से भाग गया और बरेली की भूमि एक अनिष्ट से मुक्त हो गई । मोल्वी मुहम्मद अहसन नानोत्वी ने जेहाद विरुद्ध की हुई वाणी विलास से बरेली के मुसलमानो के मन को शुद्ध करने हजरत मौलाना रजा अली खाँ के आदेश से दिनांक २५-५-१८५७ के दिन एक विशाल सभा का आयोजन किया गया ।

हवाला :-

''इस तकरीर का रद्दे अमल यह भी हुवा कि २५ मई, १८५७ को बरोजे ईद नौ-महोल्लाह की मस्जिद में

मोल्वी रहीमुल्लाह खाँ ने अंग्रेजों के खिलाफ सख्त तकरीर की । इस मौके पर बख्त खाँ भी मौजूद थे । मुसलमानो में बहुत जोश पैदा हो गया था ।''

संदर्भ :- ''मोलाना मुहम्मद अहसन नानोत्वी'', लेखक :- मुहम्मद अय्यूब बिन मशीयतुल्लाह, प्रकाशक :- रोहिलखंड लिट्रेचर सोसायटी, कराची (पाकिस्तान) पृष्ठ : ५१

हिन्दी अनुवाद

''यह प्रवचन की खन्डनात्मक गतिविधी यह भी हुई कि दिनांक २५ मई, १८५७ को ईद के दिन ''नौ-महोल्लाह'' मस्जिद में मोल्वी रहीमुल्लाह खाँ ने अंग्रेजों विरुद्ध जोरदार प्रवचन किया । उस अवसर पर बख्त खाँ भी उपस्थित थे । मुसलमानो में भारी जोश उत्पन्न हो गया था ।''

मुसलमानो के भीतर पैदा हुई आजादी की लडत की भावना हमेंशा जारी रखने के लिये हजरत रजा अली खाँ साहब ने एक समिति का गठन किया । उस समिति का नाम ''जेहाद कमिटि'' था। उस समिति के सभ्यो में

(१) हजरत रजा अली खाँ बरेल्वी
(२) अल्लामा फजले हक खैराबादी
(३) मुफ्ती इनायत अहमद काकोरवी
(४) मोलाना नकी अली खाँ बरेल्वी
(५) मोलाना अहमदुल्लाह शाह
(६) मोलाना सय्यद अहमद मशहदी बदायूनी तथा
(७) जनरल बख्त खाँ के नाम मुख्य थे ।

अंग्रेजों के खिलाफ लडने के लिये मुस्लिम सेना का निर्माण किया गया और उस सेना के कमान्डर-इन-चीफ के तौर पर जनरल बख्त खाँ की नियुक्ती की गई । जेहाद कमिटि के मुखिया हजरत मोलाना रजा अली खाँ साहब बरेल्वी थे ।

आजादी की लडाई का प्रारंभ होते ही मुजाहिद युद्ध मेदान में कुद पडे । बरेली में हजरत रजा अली खां के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन अनुसार जनरल बख्त खां ने सेनानीयों को संगठित कर के, योजनापुर्वक अंग्रेजो पर आक्रमण किया और अंग्रेज पलायन हो गए । केवल बरेली ही ऐसा शहर है जो अंग्रेजो के अधिकार में नहीं आया था तथा केवल बरेली में अंग्रेजो का बहुत बुरी तरह पराजय हुवा था । अंग्रेज अपने परिवार को ले कर बरेली से भागे और बरेली मुजाहिदों के नियंत्रण में आ गया ।

आ'ला हजरत इमाम अहमद रजा खाँ फाजिले बरेल्वी के दादा इमामुल ओलोमा, हजरत रजा अली खां के आदेशानुसार जनाब खान बहादुर खां को बरेली के शासक के तोर पर चुन लिये गए और उन का राज्यभिषेक बरेली के बाजार चोक में करने में आया । संक्षेप में बरेली के मुजाहिदों ने रोहिलखंड को भी अंग्रेजों के कब्जे में से मुक्त करवाया और उस के बाद वे मुजाहिदों ने मुघल साम्रज्य के अंतिम बादशाह बहादुरशाह जफर की सहायता करने जनरल बख्तखा के नेतृत्व में दिल्ही की तरफ प्रयाण किया ।

स्वंय अंग्रेज इतिहासकार मिल्लीसन हजरत रजा अली खां बरेल्वी रहमतुल्लाहि तआला अलैह की दिलैरी, बहादुरी तथा अंग्रेजो प्रति शत्रुता का स्वीकार करते हुए लिखता है कि :

हवाला :-

''बरेली के अंदर अवाम में बरतानवी इकतिदार के खिलाफ जो बगावत फैली, उस के तमामतर जिम्मेदार बख्तखां और उस के साथी बरेल्वी मुल्ला शाह रजा अली वल्द हाफिज काजिम अली खां थे । जो बरेली की अवाम को बरतानवी हुक्काम के खिलाफ बागी बनाने के लिये न सिर्फ मुजरिम ठहरे बल्कि उन्होंने बरेली की अवाम को बरतानवी हुक्काम के खिलाफ मुकाबला करने के लिये बेहद मुश्तईल किया । अगर मुल्ला रजा अली बरेल्वी अपने अकीदतमंदो के हमराह मुकाबला न करता तो बरेली शहर पर हमारा कब्जा होना बिल्कुल आसान था ।''

संदर्भ :- ''हयाते मुफ्ती आजम'', लेखक :- मिर्जा अब्दुल वहीद बेग, प्रकाशक :- इदारा तेहकीकाते मुफ्ती आजमे हिन्द, बरेली, पृष्ठ : ३०/३१

हिन्दी अनुवाद
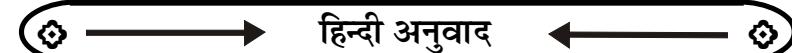
''बरेली के लोगों में ब्रिटीश साम्राज्य के प्रभाव के विरुद्ध जो बगावत फेली, उस के संपूर्ण जिम्मेदार बख्तखां और उस के साथी बरेल्वी मुल्ला शाह रजा अली, जो हाफिज काजिम अली खां के बेटे थे । जो बरेली के लोगों को ब्रिटीश प्राधिकारी के खिलाफ बागी बनाने के लिये केवल दोषी ही नहीं थे बल्कि उन्होंने बरेली के लोगों को ब्रिटीश साम्राज्य के खिलाफ लडने के लिये बहुत उत्तेजित किया । यदि मुल्ला रजा अली बरेल्वी अपने अनुयायीओं के

साथ मुकाबला न करता, तो बरेली शहर पर हमारा कब्जा करना बहुत सरल था।''

★ विशेष हवाले के लिये देखें :-

''तर्जुमाने अहले सुन्नत'', मासिक का जंगे आजादी नंबर (कराची) जुलाई १९७५ का अंक, पृष्ठ : ३०४

बरेली की भूमी को जंगे आजादी के महान लडायक हजरत रजा अली खां के उपर गर्व है कि उन्होंने अपना सब कुछ दाव पर लगा कर अखंड भारत की रक्षा के लिये अत्याचारी अंग्रेजो विरुद्ध द्रढता से मुकाबला किया और समग्र मुसलमान कौम को मातृ-भूमि प्रति वफादारी का पाठ सिखाया।

भारत की लोगों के कमनसीबी के कारण १८५७ का विद्रोह असफल रहा। अंग्रेज सत्ता में आए और विद्रोह में भाग लेने वाले मुजाहिदों को ढूंढ ढूंढ कर खत्म करने का प्रारंभ किया। आजादी के योद्धाओं की सूचि तैयार की गई। मुजाहिदों में से कुछ पकडे गए। कुछ भुगर्भ में चले गए। उन को पकडने के लिये अंग्रेजों ने अपनी सारी शक्तियां खर्च कर दी। व्यापक खोज के बाद भी जो मुजाहिद को नहीं ढूंढ पाए, उन की संपत्ति जब्त कर ली। कुछ मुजाहिदों के सरों के लिये पुरस्कार भी रखे थे।

आ'ला हजरत इमाम अहमद रजा फाजिले बरेल्वी रदीयल्लाहु तआला अन्हु के दादा हजरत मोलाना रजा अली खां साहब का नाम भी अंग्रेजो द्वारा बनाई गई 'इच्छित-सूचि' में था। बल्कि आपके मस्तिष्क के लिये पुरस्कार की सूचना भी दी गई थी।

हवाला :-

''इमामुल ओलोमा साहिबे करामत बुजुर्ग थे। अंग्रेजों ने आप के सर को कलम करने पर इन्आम मुकर्रर कर दिया था। मगर जनरल हन्डसन न आपको कत्ल कर सका, न ही आपको गिरफ्तार कर सका। अंग्रेजों ने जेहाद करने के जुर्म में जागीर को जब्त कर लिया।''

संदर्भ :- ''हयाते मुफ्ती आजम'', लेखक :- मिर्जा अब्दुल वहीद बेग, प्रकाशक :- इदारा तेहकीकाते मुफ्ती आजमे हिन्द, बरेली, पृष्ठ : ३२

''इमामुल उलमा (रजा अली खां साहब) करामतवाले बुजुर्ग थे। अंग्रेजों ने आप का सिर काटने के लिये इनाम का विज्ञापन किया था। परन्तु जनरल हन्डसन ना ही आपको मार सका, ना ही आपको कैद कर सका। अंग्रेजों ने जेहाद (विद्रोह) करने के जुर्म में संपत्ति जब्त कर ली।''

अंग्रेजों ने ऐसे कई सुन्नी बरेल्वी मुजाहिदों तथा आलिमों की संपत्तियां जब्त कर लीं। उस से विपरीत वहाबी-तबलीगी-देवबंदी समुह के नेताओं को आर्थिक सहायता तथा वहीवटी पदो पर नियुकित जारी रखी। वहाबी तबलीगी जमाअत के सर्वमान्य धर्मगुरू मोल्वी अशरफ अली थानवी ने इस बात का स्वीकार किया है। इस विषय के समर्थन में एक महत्व का संदर्भ यहां पर प्रस्तृत है।

हवाला :-

''मोलाना शाह इस्हाक साहब का वाकिआ है । अपने बुजुर्गों से सुना है कि जब गवर्नमेन्ट अंग्रेजी का तसल्लुत हुवा, तो शाह साहब का जो वजीफा मुकर्रर था, वो जारी रखा गया ।''

संदर्भ :- ''अल-इफादातिल-यौमिया'' संपादक :- मोल्वी अजीजुल हसन सहारनपूरी, भाग : ७, पृष्ठ : ४८५ (ब-हवाला देवबंदी मजहब पेज नं. २७६)

''मोलाना शाह इस्हाक साहब का प्रसंग है । अपने पूर्वजों से सुना है कि जब अंग्रेजी गवर्नमेन्ट का वर्चस्व स्थापित हुवा, तो शाह साहब का जो वजीफा (मासिक वेतन) नियुक्त था, वो बरकरार रखा गया ।''

मोल्वी शाह इस्हाक वहाबी-देवबंदी वर्ग के आदरणीय धर्मगुरू का स्थान रखते थे । वे दारूल उलूम देवबंद के नेताओं की द्रष्टि में अति-सम्मान वाला स्थान रखते थे । बल्कि भारत में प्रारंभ की गई वहाबी आंदोलन के मुखियाओं के खास साथी थे ।

हवाला :-

''सय्यद साहब, मोल्वी अब्दुल हय्य साहब, शाह इस्हाक साहब, मोल्वी मुहम्मद या'कुब साहब, मोल्वी इस्माईल साहब ये हजरात सब के सब मुत्तहिद और यकजान और कवालिबे मुतअद्दिदा थे ।''

संदर्भ :- ''अरवाहे षलाषा'' संपादक :- मोल्वी जहुरूल हसन कसोल्वी, प्रकाशक :- कुतुबखाना इमदादुल गुरबा, सहारनपूर, हिकायत नं. ९१, पृष्ठ : १०७

हिन्दी अनुवाद
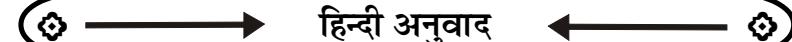
''सय्यद साहब, मोल्वी अब्दुल हय्य साहब, शाह इस्हाक साहब, मोल्वी मुहम्मद या'कुब साहब, मोल्वी इस्माईल साहब ये सब लोग एकजुट और एक आत्मा तथा तन से अलग अलग थे ।''

मोल्वी शाह इस्हाक का माहाना वेतन अंग्रेजों ने जारी रखा जबकि सुन्नी आलिमों की अपने पूर्वजों द्वारा प्राप्त हुई संपत्ति को अंग्रेजो ने खाली कराई ।

इतनी बडी भिन्नता क्या बताती है ? यदि अंग्रेज वास्तव में आलिमो प्रति आदरभाव रखते थे, तो ''एक को राजमहल और दूसरे को कारावास'' जैसी पक्षपाति निती और भेदभाव युक्त व्यवहार क्यूं अपनाते? वहाबी-देवबंदी-तबलीगी जमाअत के नेतागण को पुरस्कार ही पुरस्कार जबकि बिन-वहाबी सुन्नी आलिमों के साथ अत्याचार ही अत्याचार ? कुछ तो था, जिस की मर्यादा रखी जाती थी । एक तरफ वहाबी-देवबंदी वर्ग के मुल्लों पर पुरस्कार की जोरदार वर्षा हो रही थी, तो दूसरी तरफ सुन्नी बरेल्वी (बिन-वहाबी) आलिमो पर अत्याचार की आंधी चलाई जा रही थी । संक्षेप में इतना कि भारत के वफादार अत्याचार के शिकार बन रहे थे और भारत के गद्दार ऐश-आराम में मस्त थे । भारत के देशद्रोही अंग्रेजों के प्रिय थे जबकि मातृभूमि के लिये प्राण देने वाले वफादार अंग्रेजों को एक आँख नहीं भाते थे ।

देशद्रोहियों की बगावत के कारण ही इस्वी १८५७ का विद्रोह असफल रहा और लगभग एक शतक से अधिक समय के लिये भारतीय प्रजा स्वतंत्रता से दूर रही । स्वतंत्रता मिली वह भी कैसे ? अखन्ड भारत के टुकडे हुए । दंगे-फसाद हुए । कइयों के प्राण गए, करोडों की संपत्तियों को नुकसान हुवा । यदि यह प्राण की आहुति और विनाश केवल स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिये अंग्रेज विरुद्ध लडते हुए होती, तो कदाचित इतना दुख न होता, किन्तु यह विनाश एक ही मातृभूमि पर जन्म लेनेवाली दो प्रजातियों के आंतर विग्रह के कारण हुवा । अंग्रेज जब तक भारत में शासक थे, तब तक उन्होंने लडाना और शासन करना जैसी द्रष्ट निती अपनाई परन्तु जब उन के जाने का अवसर आया, तब जाते-जाते भी उन्होंने भारतीय प्रजाति को आंतर विग्रह की अग्नि में डाल दिया । अंग्रेजो की इस जाल में भारत की प्रजा फंस गई । जिस के दुःखद परिणाम स्वरुप अखंड भारत के दो(२) टुकडे हुए । अविभाजित हिन्दुस्तान का एक महत्वपुर्ण अंग कटकर अलग हुवा और हमेंशा की लडाई-झघडे का निमित एक नया देश ''ना-पाकिस्तान'' का सर्जन हुवा ।

अखन्ड हिन्दुस्तान के टुकडे और ना-पाकिस्तान का सर्जन

जिस तरह पाकिस्तान का सर्जन हुवा है, उस का वर्णन इतिहास के पृष्ठो में पढ कर सिर शर्म से झुक जाता है । भ्रष्ट, लालचु, अभिमानी, स्वार्थी, जिद्दी, दुष्ट, कपटी, सत्ता इच्छुक, दंभी, तिरस्कृत निती, हठधर्मी, सांप्रदायिक विष द्रष्टि, संकुचित मानसिकता वगैरह दुःषणो वाले कुछ ना-लायक राजकीय नेताओं ने सत्ता के सिंहासन

पर बिराजीत होने की जिज्ञासा की परिपुर्णता के लोभ में अपनी अपनी जाती के धर्मबंधूओं को बेहकाया । धर्मवाद, कोमवाद, ज्ञातिवाद, भाषावाद और प्रदेशवाद को निरंकुश कक्षा तक उत्तेजित किया । लोगों को स्वर्गानंद के सपने दिखाए । स्थिर भावी सुख की आशा दिलाई । भौतिक आनंद-प्रमोद की लालच दी । धार्मिक, सामाजिक, राजकीय, शैक्षणिक तथा आर्थिक प्रगति की बाँसरी बजाई । लोगों को बहेकाया, भडकाया, उत्सुक बनाया, उत्तेजित किया, धार्मिकता से भावनाशील किया, फिल्ना-फसाद की आंधी में झोंका, विवाद-विखवाद की विषमय हवा को फेलाया, बल्कि प्रजा में शत्रुता के भूत को ऐसा डगमगाया कि वह बे-लगाम और निरंकुश हो गए । यह सब देशी गद्दारों ने अंग्रेजो के इशारे और संकेत से किया । अंग्रेजो द्वारा बजाई गई ढोलक के सूर पर नृत्यु कर के सांप्रदायिक अग्नि को रोद स्वरुप से प्रजवलित करने के लिये देश के गद्दारों ने धर्म की रक्षा की निष्ठा और धर्म के विनाश के अज्ञात भय का जवलंतशील पेट्रोल के तौर पर उपयोग किया । जिस का दुःखद परिणाम यह आया कि शतको से एक-दूसरे के सुख-दुख में सहभागी बन कर जीने वाले देशवासी एक-दूसरे के प्राण धातक रूप से लेने के लिये तैयार हो गए । हमेंशा सुवर्ण अक्षरो से लिखा जाने वाला हिन्दुस्तान का इतिहास निर्दोष लोगों के जम के श्याम बन गए खुन के काले अक्षरो द्वारा अंकित हुवा । प्रेम, बंधुत्व तथा मित्रता की इमारतें घृणा के खंडेरो में बदल गई । मानवता का खुलेआम उल्लंघन हुवा और जैसा कि मानवता मर चुकी हो एसे वातावरण का सर्जन हो गया । यह सब केवल राजकीय पैंतरेबाजी और एक-दूसरे की टांग खिचाह के कारण ही हुवा । जो परिणाम हम ने सहे तथा सह रहे है और भविष्य में सहने पडेंगे, उन के विचार मात्र से बदन में कंपन उत्पन्न हो जाती है । जिस का वलोपात न कभी शांत हुवा है, न कभी शांत होगा । भूतावल की

भयानकता का अति डरावना द्रश्य स्थिर विचार धारा को अर्ध मूर्छित अवदशा में धकेल देता है।

पाकिस्तान के सर्जन और अस्तित्व के प्रमुख कारण सांप्रदायिक तथा धर्मवाद थे। जिस की वजह से उस समय जो हत्याएं हुई तथा जो अत्याचार हुए उसका द्रष्टांत इतिहास में बहुत कम मिलता है। खुन के प्यासे नरपिचाशों ने मानवता के मुल्यो को एक तरफ रख कर ऐसे-ऐसे जुल्मो सितम गुजारे है कि उस का वर्णन नहीं हो सकता। शैतान काले सिर के मनुष्य के स्वरूप में धर्म की आड में अधर्म कर रहा था। निर्दोषो के खून की नदी बहाने में अज्ञात आनंद लूट रहा था। भावि पीढी के छोटे बच्चो को अनाथ तथा स्त्रीयो को विधवा बना रहा था। मानवता का स्थान शैतानों ने ले लिया था।

हिन्दुस्तानी प्रजा में जो 'जनून' का भूत सवार था, उस भूत के उत्पन्न करने में सफेद त्वचा के पीछे छिपे हुए 'काले शैतान' अंग्रेजो की ही मुख्य भुमिका थी। भारत की दो मुख्य प्रजा हिन्दु तथा मुसलमान प्रजाति की भीतर लडाई के बीज बोने का काम अंग्रेजो ने किया और इस चालाकी से किया कि दोषी देशवासी ही ठहरे।

हिन्दुओं को हिन्दु धर्म प्रति भावना को उत्तेजित करने के साथ ही साथ मुसलमानो प्रति घृणा को उकसाया और दुसरी तरफ मुस्लिमो को बहुमति प्रजा हिन्दुओं से भयभीत किया। और एसा सब भारत की भूमि पर जन्म लेने वालों से ही करवाया। कट्टर धार्मिक नेताओं को राजनिती में ले आए जिन्होंने अपनी जबानो से सांप्रदायिकता तथा धर्मवाद का जनुन फेलाया। एसे संकुचित मानसिकता वाले तथा सांप्रदायिक नेताओं ने हिन्दु प्रजा को हिन्दुराज तथा राम-राज्य के स्वप्न दिखाए तथा मुसलमानो में असलामती की लघुतागंथी उत्पन्न की। परिणाम स्वरूप सदियों से कंधे से कंधा मिलाकर चलनेवाली दो बडी कौमे एक-दूसरे को संदेह की द्रष्टि से

देखने लगी। दोनो प्रजा अपने धर्म के प्रभाव वाले स्थान पर ही रहने तथा वसवाट करने के विषय में चिंतन करने लगी। समग्र भारत में वसवाट कर रही हिन्दु-मुस्लिम प्रजा एक-दूसरे को घृणा करने लगी। इस हद तक सांप्रदायिक तनाव उत्पन्न हो गया। धार्मिक नेताओ ने अपनी सर्वोपरिता तथा नेतागिरी स्थापित करने हेतु प्रजा की भावनाओं का दुरुपयोग किया। जिस का विस्तृत वर्णन यहां पर शक्य नहीं। संक्षेप में कुछ संदर्भ से ही संतृष्ट होना अनिवार्य है।

हवाला :-

हिन्दुओं के वरिष्ठ नेता लाला लजपतराय अपने पुस्तक 'शिवाजी' की उर्दु आवृति के पृष्ठ : ४४४ पर लिखता है कि :-

''श्री समर्थ रामदास स्वामी ब्राहमणे शिवाजी ने वारंवार इस्लाम विरुद्ध युद्ध करवानो उपदेश आप्यो।''

संदर्भ :- ''हिन्द नुं मुस्लिम राजकारण'', (गुजराती आवृति) अनुवादक :- यूसुफ अब्दुल्लाह मांडवीया, प्रकाशक :- घी कोहीनूर प्रिन्टींग प्रेस, बांटवा, पृष्ठ : २४

हिन्दी अनुवाद
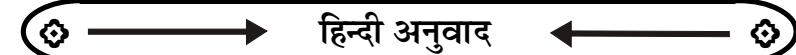
''श्री समर्थ रामदास स्वामी ब्राहमण ने शिवाजी को बार-बार इस्लाम विरुद्ध युद्ध करने का उपदेश दिया।''

✪ शिवाजी के अवसान बाद शिवाजी के पुत्र शंभाजी को वर्णनीय स्वामी ब्राहमण ने जो उपदेश दिया वह उपदेश परमानन्द कृत ''महाराष्ट्र नो इतिहास'' पृष्ठ : ३३३ पर उल्लेखित है, वह देखे।

हिन्दी अनुवाद

"आपस में (सब हिन्दु) प्रेम से रहो । अपने मुसलमान शत्रुओं को ढूंढ-ढूंढ कर तथा चुन-चुन कर मार्ग में से दूर करो । लोगों के मन में मुसलमानों का सामना करने की भावना जगाओ और महाराष्ट्र की सल्तनत को सब से ज्यादा विस्तृत करने का प्रयत्न करो ।"

संदर्भ :- "हिन्द नुं मुस्लिम राजकारण", (गुजराती आवृति)
अनुवादक :- यूसुफ अब्दुल्लाह मांडवीया, पृष्ठ : २४

उपरोक्त केवल दो संदर्भ नमूने के तौर पर प्रस्तृत किए है । एसे तीव्र सांप्रदायिकता का जहर फेलाने वाले अनेक लेख तथा प्रवचनो का विशाल मात्रा में प्रचार करने में आया । धर्म के नाम पर मर जाने या मार डालने के लिये लोगों को उन्माद पूर्वक उकसाने में आया । अंग्रेज कोई बेवकूफ या नादान नहीं थे । समय को पहचानने वाले थे । उन को यह एहसास हो गया था कि अब हिन्दुस्तान छोड कर जाना पडेगा । उन्होंने सोचा कि जब जाना ही है तो जाते जाते होली क्यूं न जला दी जाए ? इस निती के व्यवस्थित अमल में लाने के लिये हिन्दु-मुस्लिम दोनों प्रजा को धर्म तथा प्रदेश के नाम पर विभाजित कर दिया ।

सांप्रदायिक तत्वो ने हिन्दु तथा मुस्लिम दोनों प्रजा के भितर शत्रुता इतनी फेला दी कि दोनों प्रजाति के लोग एक-दूसरे को मिटाने में लग गए । हिन्दु एसा समझने लगे कि हिन्दुस्तान में मुसलमानो का अस्तित्व हिन्दु धर्म के लिये खतरा है । इसलिये मुसलमानो का अस्तित्व मिटा दो । मुसलमान एसा समझने लगे कि भारत में रहना अब संकटपूर्ण है । इसलिये सुरक्षित जगह के लिये आंदोलन चलाओ । हिन्दु भारत में से मुसलमान चले जाऐं एसा

चाहने लगे और मुसलमान भारत को छोड कर कोई दुसरी जगह जाने के लिये सोचने लगे । यह सब एक अज्ञात भय के कारण हुवा। बल्कि यह झूठा भ्रम था । वास्तविकता तो यह थी कि हिन्दु और मुस्लिम दोनों कौम भारत में ही संप, एकता, लागणी और प्रेम से मिल-झुल कर रहें और अखंड भारत को विभाजित होने से रोकें । इसी में देश और देश की समग्र प्रजा का हित और भला था । परन्तू भारत की भोली तथा भावुक प्रजा धर्म रक्षण का बहाना ले कर फेलाई गई जाल में फंस गई और अंग्रेज इच्छित परिणाम ला सके। परिणाम स्वरुप अखन्ड भारत के टुकडे हुवे और पाकिस्तान अस्तित्व में आया ।

अखन्ड भारत को दो हिस्सो में बाटने के कई कारण हैं, और उस के लिये जिम्मेदार भी कई हैं । यह सब चर्चा की यहां शक्यता नहीं है । यहां केवल बुनियादी कारण को चर्चा के केन्द्र में रखते हैं और वह है हिन्दुस्तान की दो विशाल जनसंख्या रखनेवाली प्रजा के भीतर अविश्वास तथा घृणा की भावना । अंग्रेजो के एजन्ट और उन के गुलाम, सत्ता के लालची तथा भारत के हितशत्रुओ ने वातावरण को दुषित करने में किसी भी प्रकार की क्षति नहीं रखी । मीरजाफर तथा अमीचंद चारों तरफ द्रष्टिपात होने लगे । जानबुझ कर या अनजाने में अंग्रेज की योजना को सफल बनाने के लिये धर्म, समाज, जाति, भाषा, कोम तथा प्रदेश के नाम पर अपने ही देशवासीयों से लडनेवाले कदाचित अपने मत से सेवाकीय प्रवृत्ति कर रहे थे, किन्तु उन की घृणा फेलाने वाली कार्य पद्धतिओं ने भारत को सब से ज्यादा हानी पहुंचाई ।

अंग्रेजो ने हिन्दुओं को मुसलमानो के विरुद्ध उकसाने के साथ साथ मुसलमानो को तथा कथित मुस्लिम धर्मगुरू के प्रभाव से गुमराह करने के प्राथमिक कदम स्वरुप वहाबी-तबलीगी जमाअत के मुल्लाओं का उपयोग किया । वहाबी-तबलीगी संप्रदाय के मोल्वी

प्रारंभ से ही अंग्रेज के इशारों पर नृत्य करनेवाले थे । स्वतंत्रता के लिये लडी गई १८५७ की जंग में वहाबी-तबलीगी पंथ के मोल्वी प्रारंभ से ही अंग्रेज के इशारो पर नाचनेवाले थे । इस्वी १८५७ के विद्रोह में वहाबी-तबलीगी मुल्लों ने अंग्रेजो की तरफदारी करने की हीन चेष्टाएं की थीं । अंत में जब देश अंग्रेजो की गुलामी से स्वतंत्र होने की अस्पष्ट छबि दिख रही थी । तब उन्होने पाकिस्तान के नाम पर मुसलमानो के लिये अलग प्रदेश की मांग के विचार को गतिशील बनाने के लिये मुस्लिमो को हिन्दुस्तान से हिजरत करने की प्रेरणा दी । इस प्रेरणा ने मुस्लिमो को हिन्दुस्तान छोड देने तक गुमराह किया ।

स्पष्ट बात है कि करोडो की जनसंख्या रखनेवाली मुस्लिम कोम यदि वास्तविकता में हिन्दुस्तान से हिजरत करने का द्रढ निर्णय करे तथा उस को अमल में लाने के लिये कटिबद्ध हो जाए, तो प्रश्न यह उपस्थित होता है कि इतनी विशाल जनसंख्या जाए कहां ? उन को वसवाट करने के लिये विशाल प्रदेश प्रदान करना अनिवार्य हो। और हुवा भी ऐसा ही । भारत का खूबसूरत तथा फलफाल प्रदेश पाकिस्तान के रूप में दे देना पडा ।

वहाबी-तबलीगी जमाअत के मोल्वीयों ने मुसलमानों को हिन्दुस्तान से हिजरत करने की प्रेरणा किस तरह दी उस के संदर्भ में आधारभूत किताबों से हवाले देखते हैं ।

मोल्वी खलील अहमद अंबेठवी कि जिस का समावेश वहाबी-देवबंदी वर्ग अति आदरणीय तथा सर्वस्वीकृत धर्मगुरू के तोर पर होता है। मोल्वी खलील अहमद अंबेठवी 'बराहीने-कातेआ' नाम की किताब लिखने के कारण विवादास्पद बने थे । मोल्वी खलील अहमद अंबेठवी के मृत्यु के बाद उस का जीवन वृतांत प्रकट करने में आया था उस में वर्णन है कि :-

हवाला :-

''पूछा गया कि क्या आपने हिन्दुस्तान को दारुल हर्ब बताया है? कि यहां रहना मुसलमानो को हराम और हिजरत करना वाजिब है ? आपने फरमाया : हाँ ''

संदर्भ :- ''तजकिरतुल-खलील'', संपादक :- मोल्वी आशिक इलाही मेरठी, प्रकाशक :- कुतुबखाना इशाअतुल उलूम, सहारनपूर पृष्ठ : ३६६

हिन्दी अनुवाद
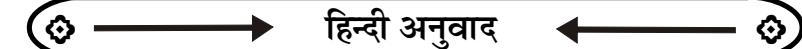
''पूछने में आया कि क्या आपने हिन्दुस्तान को दारुल हर्ब बताया है ? कि यहां स्थायी रहना मुसलमानो के लिये हराम (वर्जित) और हिजरत (दुसरी जगह प्रयाण करना) करना वाजिब (जरूरी) है ? आपने प्रत्युत्तर दिया : हाँ ''

नोट :- दारुल हर्ब उस देश को कहा जाता है जहां खुदा की इबादत करना निषेध हो । दारुल हर्ब शब्द का अर्थ शब्दकोष द्वारा देखते हैं ।

✪ The New Royal Persian-English Dictionary

संपादक :- Dr. S.c. Paul (Ph.D), आवृति :- त्रितीय,

प्रकाशक :- राम नारायणलाल, अल्हाबाद, पृष्ठ : १५९ देखें :-

दारुल हर्ब = A Country Where the Musalman Religion does not Prevail

''वो जगह जहां खुदा की इबादत की मुमानिअत हो ।''

✪ फिरोजुल्लुगात उर्दु (न्यु एडीशन), संपादक :- अल्हाज मोल्वी फिरोजुद्दीन, प्रकाशक :- अंजुमन बुक डियो, दिल्ही, पृष्ठ : ६०७ देखें

दारुल हर्ब = "वो मुल्क जहां गैर मुस्लिमो की हुकूमत हो और मुस्लिमो को मजहबी फराइज अदा करने से रोका जाए।"

"वो देश जहां गैर-मुस्लिमो का शासन हो और मुसलमानो को मजहबी फराइज (अति अनिवार्य धार्मिक क्रिया) परिपूर्ण करने से मना किया जाए।"

शब्दकोष (डिक्शनरी) के उपरोक्त दोनों हवालों द्वारा 'दारुल हर्ब' शब्द का अर्थ स्पष्ट समझ में आ गया होगा। वहाबी-तबलीगी जमाअत का धर्मगुरु भारत को 'दारुल हर्ब' कह कर यहां से हिजरत करना वाजिब या'नी कि जरूरी कह कर मुस्लिमो को प्रयाण करने उत्तेजित कर रहा है।

हवाला :-

दारुल उलूम देवबंद के स्थापक और वहाबी-तबलीगी जमाअत के सरदार मोल्वी कासिम नानोत्वी का विचार देखते है।

"हिन्दुस्तान दारुल हर्ब अस्त"

संदर्भ :- "कासिमुल उलूम", लेखक :- मोल्वी कासिम नानोत्वी, भाग : ३, पृष्ठ : ३५

हिन्दी अनुवाद

'हिन्दुस्तान दारुल हर्ब है।'

अब वहाबी-देवबंदी-तबलीगी जमाअत के प्रथम कक्षा के आगेवान मोल्वी और धर्म गुरू मोल्वी रशीद अहमद गंगोही का भारत के बारे में अभिप्राय देखें :-

हवाला :-

"सब हिन्दुस्तान बंदा के नजदीक दारुल हर्ब है।"

संदर्भ :- "फतावा रशीदीया", (मोल्वी रशीद अहमद गंगोही का फत्वा संग्रह) प्रकाशक :- कुतुबखाना रहीमिया, दिल्ही, प्रकाशन वर्ष:-हि. स. १३६३, भाग - ३, पृष्ठ : २२

हिन्दी अनुवाद

'समग्र भारत मेरी राय के अनुसार दारुल हर्ब है।'

मोल्वी खलील अहमद अंबेठवी, मोल्वी कासिम नानोत्वी तथा मोल्वी रशीद अहमद गंगोही तीनों भारत को दारुल हर्ब कह कर मुसलमानो को अलग देश की मांग का विचार दे रहे हैं। अंग्रेजो के इशारो पर चलने वाले वहाबी मुल्लाओं के वर्णनीय कथनों को तकवादी तथा तथाकथित मुस्लिम राजनितीओं ने सिर पर चढाया और मुहम्मद अली जिन्नाह जैसे जिद्दी राजनिती ने 'पाकिस्तान ले कर रहेंगे' जैसे नारे बुलंद किए। परिणाम की चिंता किए बगैर एक शक्तिशाली देश के दो टुकडे कर दिये। समग्र देश सांप्रदायिक फसाद के आंतर विग्रह में जला, अभी तक जल रहा है और भविष्य में न जाने कब तक जलता रहेगा।

हिन्दुस्तान के बारे में इमाम अहमद रजा बरेल्वी का स्पष्ट मंतव्य

जिस समय वहाबी-देवबंदी-तबलीगी जमाअत के मुल्ले भारत दारुल हर्ब होने का गलत फत्वा दे कर पाकिस्तान की मांग कर रहे थे, ऐसे विकट समय में बिन-वहाबी सुन्नी महा समुदाय के सरदार आ'ला हजरत इमाम अहमद रजा फाजिले बरेल्वी रदीअल्लाहो अन्हो ने मुसलमानो को सावचेत किया, समझाया और इस्लामी कानून की सर्वमान्य तथा आधारभूत किताबो के ठोस संदर्भ दे कर पुरवार किया कि हिन्दुस्तान हरगिज दारुल हर्ब नहीं है । वहाबी-तबलीगी जमाअत के मुल्लाओं ने भारत के दारुल हर्ब का जो फत्वा दिया था, उस के समर्थन में एक भी फिकह की आधारभूत किताबो के हवाले रजू न कर सके, बल्कि मेरी राय जैसे शब्दो का उपयोग कर के समग्र मुस्लिम कोम को गलत रास्ते पर ले जाने का व्यर्थ प्रयत्न किया ।

हिन्दुस्तान को दारुल हर्ब का फत्वा देना अप्रत्यक्ष रुप से पाकिस्तान के सर्जन को समर्थन देने के समान है । क्यूंकि यदि एक बार भारतीय मुस्लिमो में एसी मान्यता घर कर जाए कि भारत में स्थायी होना इस्लामी दृष्टिकोण से योग्य नहीं है और यहां से हिजरत कर के चले जाना अति-आवश्यक है, तो फिर पाकिस्तान की मांग तीव्र हो जाएगी, एसा उस समय के तथाकथित मुस्लिम राजनितीज्ञ अच्छी तरह जानते थे । जिस के कारण वहाबी मुल्लाओं के एसे फत्वो को एक विशिष्ट प्रकार का महत्व दिया गया और पाकिस्तान की मांग ज्यादा ज्वलनशील बनी ।

वहाबी-देवबंदी-तबलीगी वर्ग के नेताओ द्वारा भारत को दारुल हर्ब के दिये गए फत्वो ने कई मुसलमानो को उलझन में डाल दिया क्यूंकि कई लोगों को वहाबी-देवबंदी-तबलीगी जमाअत के मुल्लो की अंग्रेजो की वफादारी की आंतरिक बात की जानकारी थी । वे उन फत्वो पर विश्वास भी नहीं करते थे और विरोध भी नहीं कर सकते थे । उस की एक वजह यह थी कि भारत देश इस्लामी द्रष्टिकोण से दारुल हर्ब है कि नहीं ? उस की जानकारी उन को नहीं थी और दुसरा महत्व का कारण यह था कि मुस्लिम लीग के गुमराह करनेवाले नेताओ का उन फत्वो को संपूर्ण समर्थन प्राप्त था ।

एसी आपतकालीन कठिन परिस्थिती में बिन-वहाबी सुन्नी हनफी महा समुदाय के इमाम आ'ला हजरत इमाम अहमद रजा फाजिले बरेल्वी ने सत्य बात को डंके की चोट पर कह कर वास्तविकता में मजहब तथा देश की महान सेवा की । हिन्दुस्तान के बारे में अपना स्पष्ट मत देते हुए लिखते है कि :-

हवाला :-

'हमारे इमामे आ'जम रदीअल्लाहो अन्हो बल्कि उलमा-ए-षलाषा रहमतुल्लाहे तआला अलैहिम अजमईन के मजहब पर हिन्दुस्तान दारुल इस्लाम है । हरगिज दारुल हर्ब नहीं ।'

संदर्भः-''इअ्लामुल-अअ्लाम-बे-अन्ना-हिन्दुस्तान-दारुल-इस्लाम'', लेखक :- इमाम अहमद रजा बरेल्वी, प्रकाशकः- जमाअत रजाए मुस्तफा, बरेली, (यू.पी.) पृष्ठ : २

हिन्दी अनुवाद

'हमारे इमामे आ'जम रदीअल्लाहो अन्हो बल्कि तीनो इमामो रहमतुल्लाहे तआला अलैहिम अजमईन के

मजहब पर हिन्दुस्तान दारुल इस्लाम है। कदापी दारुल हर्ब नहीं ।'

किसी भी देश को दारुल हर्ब साबित करते वक्त यह बात ध्यान में रखनी जरूरी है कि उस देश में मजहबे इस्लाम के कानून, इबादतें तथा धार्मिक कार्य पर संपूर्ण पाबंदी हो । एसा प्रतिबंध हिन्दुस्तान में कभी लगाया नहीं गया, लगाया नहीं जाता और ना ही भविष्य में कभी लगाया जाएगा । (इन्शाअल्लाह) दारुल हर्ब का फत्वा देने के लिये मुख्य तथा अति अनिवार्य शर्त को भूल कर जिन्होंने भारत को दारुल हर्ब का फत्वा दिया, उन को सावचेत चेतावनी देते हुए इमाम अहमद रजा फाजिले बरेल्वी कहते है कि :-

हवाला :-

"अहले इस्लाम जुम्आ व ईदैन व अजान व इकामत व नमाज बा-जमाअत वगैरह शआइरे शरीअत बगैर मजाहिमत अलल ए'लान अदा करते हैं ।"

संदर्भ:-"इअ्लामुल-अअ्लाम-बे-अन्ना-हिन्दुस्तान-दारुल-इस्लाम", लेखक :- इमाम अहमद रजा बरेल्वी, प्रकाशक:-जमाअत रजाए मुस्तफा, बरेली, (यू.पी.) पृष्ठ : २

हिन्दी अनुवाद

"इस्लाम के अनुयायी जुम्आ, दोनो ईदों की नमाजें, अजान तथा इकामत, जमाअत के साथ नमाज इत्यादि जैसे इस्लाम (शरीअत) के (महत्व) के पहचान प्रतिक जैसे कार्य किसी भी प्रकार की रुकावट बगैर सार्वजनिक तोर पर अदा करते हैं ।'

इमाम अहमद रजा ने अपने वर्णनीय फत्वे के समर्थन में इस्लामी कानून की सर्वस्वीकृत तथा आधारभूत किताबें जैसी कि फतावा आलमगीरी, सिराजुल वहाज, मुल्ला खुस्रू, जामेउल कुसूलिन, गुरर, तन्वीरुल अब्सार, दुर्रे मुख्तार तथा मजमउल अब्हर के अरबी संदर्भ प्रस्तृत कर के एक अलग किताब इस विषय में लिखी है और ठोस संदर्भो द्वारा सिद्ध कर दिया कि हिन्दुस्तान हरगिज दारुल हर्ब नहीं है ।

इमाम अहमद रजा की वर्णनीय किताब ने समग्र मुस्लिम कोम को जागृत किया और वास्तविकता का परिचय करवाया, किन्तु अफसोस कि उस समय बहुत देरी हो चुकी थी । उस के अलावा इमाम अहमद रजा की यह सत्य वाणी का प्रचार न हो सके, इस के लिये अंग्रेज तथा देश के देशद्रोहियों ने नई-नई चाल तथा जाल से अधिकांश मुस्लिम समुदाय को अज्ञानता के अंधकार में रखा और अंत में.......... जो नहीं होना चाहिए, जो हुवा है, वो नहीं चाहिए, एसा हुवा । या'नी कि भारतीय उपखंड में स्थायी झघडे का बीज स्थापित हुवा या'नी कि पाकिस्तान का अस्तित्व विश्व के नक्शे पर अंकित हुवा ।

पाकिस्तान के अस्तित्व ने समग्र भारतीय उपखंड में होली जला दी और जो-जो घटनाएं घटी उस से समग्र विश्व स्तब्ध हो गया । धार्मिक जनून के जोश ने लोगों को मानवता के होश को भुला दिया । जिस राष्ट्र में गंगा और जमूना नदी के नीर बहते थे उस राष्ट्र के मुहल्ले और गलियों में मानव रक्त की नदीयां बहीं । घृणा तथा कटुता के प्रदुषित वातावरण में एक सामान्य मानव को सांस लेना भी दुर्लभ था । हिजरत करने वालो के दोनो देश में से निरंतर, अधिरत कारवाँ जारी थे । मुस्लिम प्रांत तथा मुस्लिम बहुमत वाले प्रदेशो में बस रहे हिन्दु और उसी तरह हिन्दु प्रांत तथा हिन्दु बहुमत

वाले प्रदेशो में से मुसलमान अपने पूर्वजो की प्यारी संपत्ति, ब्यापार-वाणिज्य, खेती-बाडी, घर-बार, चल सामग्री और जिस धरती पर उन्होंने अपना बचपन बिताया है, उन सब को छोड कर 'सुरक्षित स्थान' के लिये अंधी दोड लगा रहे थे । भय फेलाने वाले तत्वो ने ऐसे हिजरतीयो के पास जो कुछ भी था, वो लूंट लिया । युवा बहन-बेटीयों की आबरूए लूंटी गई तथा 'न करने के' इतने सारे कार्य किए कि यह भूमी भी ऐसे पापीयों के पाप से कांप गई होगी। नीचता तथा निर्दयता सीमा पार कर चुकी थी । कल का धनवान आज का एक निराधार फकीर जैसी परिस्थिती में आ गया । गरम बिस्तर पर मधूर निंद्रा करने वाले को आज कांटेदार जमीन को बिछौने के तोर पर अपनानी पडी है ।

यह सब सहा किसने ? और किसके पाप के कारण भुगता ? किसने क्या गंवाया तथा किसने क्या पाया ? यह सब जग जाहिर है । संक्षेप में केवल इतना कि राजनीती के खेल में खेल रहे जिद्दी, सांप्रदायिक, भ्रष्ट, नीच, अयोग्य, लालची, प्रपंची, धोकेबाज, शरारती, फसादी, घमंडी, अहंकारी, अभिमानी, विध्न संतोषी, आत्मधाती, अत्याचारी, अन्यायी तथा भ्रष्टाचारी राजनीतिज्ञ की 'डेन्जर गेम' का दुखद परिणाम निर्दोष नागरिको को सहना पडा । राजनेताओ को कुछ भी गंवाना नहीं पडा । अलबत्ता.... कुछ नेताओ की सत्ता की खुरशी पर बेठने की ख्वाहिश, इच्छा अधूरी रही । परन्तु..... निर्दोष लोगो की क्या स्थिति-परिस्थिती हुई, उस की दर्दभरी कथनी इतिहास के पृष्ठो में अंकित है ।

पाकिस्तान बनने के जो पीडायुक्त परिणाम हम ने सहे हैं, उस से ज्यादा अभी सह रहे है और भविष्य में न जाने कब तक सहते रहेंगे।

पाकिस्तान के अस्तित्व के बाद एसा महसूस होता था कि समय पारित होने के साथ-साथ धीरे-धीरे हिन्दु-मुसलमानो के

दरमियान की घृणा कम हो जाएगी । परन्तु जैसे ब्लोटींग पेपर में शाही फेले इसी तरह लोगो की मानसिकता में घृणा के प्रसरण में उत्तरोत्तर वृद्धि होती जाती है । ऐसी घृणा कोमी दंगा, कोमी फसाद तथा हुल्लड के समय अपनी गुंज सुनाती है । आखिरकार नुकसान तो राष्ट्र को ही हो रहा है । दो व्यक्ति का एक ही शत्रु शरारत कर के दोनो को लडाए तो नुकसान वह दोनो व्यक्तिओ का ही है । एक ही घर में बसने वाले दो भाई अपने ही घर में तोड-फोड करेंगे, तो नुकसानी दोनो को ही उठानी पडेगी । इसी तरह एक ही देश की प्रजा अपने देश की सार्वजनिक अथवा निजी संपत्ति को हानि पहुंचाऐंगे तो उस का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव प्रजा पर ही पडेगा ।

पाकिस्तान में स्थायी होने के लिये हिजरत करने के बारे में

अखन्ड भारत के टुकडे करने के बाद पाकिस्तान तरफी तत्वोने भारत में से हिजरत करने के लिये मुसलमानो को उकसाया, राजकीय तोर पर निवेदनो किये, सामाजिक क्षेत्र में भय बताया, आर्थिक प्रलोभन दिखाए और सब से घृणास्पद बात यह कि धार्मिक तोर पर भी डराया । पिछले पृष्ठो में उल्लेखानुसार वहाबी-तबलीगी जमाअत के मुल्लाओं द्वारा भारत को दारुल हर्ब के फत्वे दिये गए और भारत में रहना अयोग्य है, ऐसे निवेदन किए गए । भोली तथा धार्मिक मुस्लिम प्रजा को गुमराह करने में कोई क्षति नहीं होने दी । जब कि बिन-वहाबी, सुन्नी समुदाय के महान आलिम इमाम अहमद रजा फाजिले बरेल्वी रदीअल्लाहो अन्हो ने वहाबी-तबलीगी जमाअत के मुल्लाओं के असत्य पर आधारित फत्वों का सख्त शब्दो में खंडन

किया। किन्तु इमाम अहमद रजा के ऐसे खंडन करने वाले फत्वों को एक व्यवस्थित षडयंत्र द्वारा दबा देनेमें आया और उस समय की जरूरत के अनुसार जितना प्रचार तथा प्रसार होना चाहिये, उतना हुवा नहीं, या होने दिया गया नहीं। संक्षेप में भारत की, भारत में बसते मुसलमानो की तथा समग्र भारतीय प्रजा की कमनसीबी के कारण पाकिस्तान का सर्जन हुवा।

पाकिस्तान के सर्जन को प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाकर राजकीय नेताओं ने देश को सांप्रदायिक फसाद की होली में झोंक दिया। अत्याचारो से आजिज आ गए लोगों के दोनों तरफ से अविचारी निरंतर काफिले जारी रहे। कुछ गभराकर सब छोड कर तत्काल भाग निकले, कुछ लोग थोडा किन्तु अल्पविराम बाद निकल गए और कुछ सियाने लोग इस तैयारी में लग गए कि हो सके उतना जल्दी ब्यापार-धंधा समेट कर तथा स्थावर संपत्ति का नगदी कर के अनुकुल अवसर तथा समय देख कर निर्गमन कर लेंगे। भारत में से हिजरत कर के पाकिस्तान चले जाने वालों की भीड तथा प्रवाह धीरे-धीरे कम हुवा परन्तु बंध तो नहीं ही हुवा। इमाम अहमद रजा फाजिले बरेल्वी और आपके साथी आलिमों ने भारतीय मुसलमानों को पाकिस्तान से दूर रहने की अपील की और पाकिस्तान विरुद्ध एक व्यवस्थित आंदोलन का आरंभ किया। जिस के सबुत में कुछ संदर्भो को प्रस्तृत करता हूँ।

इमाम अहमद रजा फाजिले बरेल्वी खानदाने बरकात के महान बुजुर्ग हजरत सय्यद आले रसूल मारहरवी रदीअल्लाहो अन्हो के मुरीद थे। खानदाने बरकात समग्र भारत की सम्मानीय तथा आदरणीय खानकाहों में से एक खानकाह है। हजरत मीर अब्दुल वाहिद बिलगरामी रदीअल्लाहो अन्हो के वंशज के बडे हजरत मीर अब्दुल जलील बिलगरामी रदीअल्लाहो अन्हो उत्तर प्रदेश के एटा

जिल्ले के कासगंज तालुका के "मारेहरा" गाँव मे स्थायी हुए। हजरत मीर अब्दुल जलील बिलगरामी से ले कर हजरत शाह बरकतुल्लाह, हजरत अच्छे मीयाँ, हजरत शाह हम्जा, हजरत शाह सय्यद आले रसूल, हजरत शाह अबुल हसन अहमद नूरी और उसके बाद ताजुल उलमा, औलादे रसूल, सय्यद शाह मुहम्मद मियां, हजरत सय्यदुल उलमा आले मुस्तफा रिदवानुल्लाहे तआला अलैहिम अजमईन जैसे महान बुजुर्ग खानदाने बरकात में हुवे। यह सब बुजुर्गो के अलावा खानदान के अन्य कई बुजुर्ग एक ही खानकाह में दफन हैं। जिस को 'खानकाहे बरकातिया, मारेहरा मुकद्दसा' के नाम से पहचानने में आता है। यह खानकाह के महान बुजुर्गो की कृपा द्रष्टि और आशिर्वाद के कारण इमाम अहमद रजा फाजिले बरेल्वी ने विश्व व्यापी ख्याति प्राप्त की।

जिस समय भारत में से हिजरत कर के पाकिस्तान चले जाने की चहल-पहल निरंतर चालु थी। उस विकट परिस्थिती में इमाम अहमद रजा फाजिले बरेल्वी के पीरो मुर्शिद की बारगाह खानकाहे बरकातिया, मारेहरा शरीफ के सज्जादानशीं ताजुल उलमा, ओलादे रसूल, हजरत मुहम्मद मियाँ साहब का एक निवेदन प्रस्तृत है।

हवाला :-

"और वो लीगी लीडर और उनके पीठ्ठु, नाम-निहाद पाकिस्तान को खाली इस्लामी हुकूमत और मुसलमानो के लिये दीनी-ईमानी नुक्त-ए-नजर से मलजा व मा'वा बता रहे हैं और इस्लाम व दीन के नाम पर वहाँ रहने, बसने, कारोबार वगेरह करने की तरगीब दे रहे हैं। ये सब उन लीगीयो की मक्कारी और फरेबकारी, दुनियासाजी, कज्जाबी है। उस पर हरगिज इल्तिफात न कीजीए।"

संदर्भ :- ''अहले सुन्नत की आवाज'', प्रकाशक :- दारुल इशाअत बरकाती, खानकाहे बरकातीया, मारेहरा (यू.पी.) भाग : १३,१४, पृष्ठ : ९

हिन्दी अनुवाद

''और वे लीगी नेता तथा उस के समर्थक केवल तथा कथित पाकिस्तान को शुद्ध इस्लामी शासन और मुसलमानो के लिये धर्म तथा ईमान के द्रष्टिकोण से सरण स्थान बता रहे है और इस्लाम व धर्म के नाम पर वहाँ रहने, बसने, तथा ब्यापार करने के प्रोत्साहन दे रहे है । यह सब वे लीगीयो (मुस्लिम लीग के लोगो) की मक्कारी, धोकेबाजी, विश्वासघात, दुनिया कमाने की वृत्ति तथा झुठ है । उस पर बिल्कुल ध्यान नहीं देना चाहिये ।''

हवाला :-

''लीगीयों का नाम निहाद पाकिस्तान हम गुरबा के लिये हरगिज दारुल-अमन-वल-अमान नहीं । अव्वल तो खुद उन के मुर्तद्दीन व मुबतदेईन हमारे ईमानो-दीन के अशद्द अदुव्वे मुबीन है ।''

संदर्भ :- ''अहले सुन्नत की आवाज'', प्रकाशक :- दारुल इशाअत बरकाती, खानकाहे बरकातीया, मारेहरा (यू.पी.) भाग : १३,१४, पृष्ठ : ११

हिन्दी अनुवाद

''लीग के लोगों का तथाकथित पाकिस्तान हमारे लिये कदापी राहत तथा शांती की जगह नहीं । प्रथम

तो यह कि स्वंय लीग के मुर्तद (धर्म से विचलीत हुवे हुए) और बिदअती (धर्म में नई बातें उत्पन्न करने वाले) ही हमारे ईमान के खुले और कट्टर शत्रु हैं ।

हवाला :-

''तो आप पाकिस्तान के मुर्तद्दीन व मुबतदीईन के जेरे हुकूमत बिला वजहे शरई अपने इख्तियार से हरगिज न जाए ।''

संदर्भ :- ''अहले सुन्नत की आवाज'', प्रकाशक :- दारुल इशाअत बरकाती, खानकाहे बरकातीया, मारेहरा (यू.पी.) भाग : २, हिस्सा : ६ और ७, पृष्ठ नं. : ५३

हिन्दी अनुवाद

''तो आप पाकिस्तान के जहाँ मुर्तदो और बिदअतीयों का प्रभाव है, वहाँ शरीअत के योग्य कारण बगैर अपनी स्वेच्छा से कदापि जाना नहीं ।''

उपरोक्त तीनो संदर्भो द्वारा साबित हुवा कि इमाम अहमद रजा फाजिले बरेल्वी के आदरणीय पीरजादा हजरत ताजुल उलमा हिन्दुस्तान में बस रहे मुसलमानो को हिजरत कर के पाकिस्तान जाने से रोक रहे हैं । मुस्लिम लीग के नेताओं ने मुस्लिमो को छलने के लिये जो प्रलोभन की जाल बिछा कर प्रचार माध्यम द्वारा उस का विपुल मात्रा में च्रचार किया था, उस की वास्तविकता आपने उजागर कर दी और पाकिस्तान जाना किसी भी परिस्थिती में हितकारक अथवा लाभकर्ता नहीं, ऐसा साफ शब्दो में कहे दिया । आपने मुस्लिम लीग के नेताओं की भ्रष्ट पोलीसी को भी बे-नकाब किया ।

आपने किसी की भी शेह-शर्म रखे बगेर या किसी भी प्रकार के विरोधी प्रचार का भय रखे बगेर देशप्रेम तथा मुस्लिमो की हमदर्दी की भावना प्रकट करते हुए पाकिस्तान तथा पाकिस्तान के समर्थको को जो शाब्दिक कोडे मारे हैं, उस का द्रष्टांत ढूंढने से भी नहीं मिलता। पाकिस्तान... पाकिस्तान और पाकिस्तान का ना'रा लगाने वालो को आपने प्रत्युत्तर इस तरह से दिया कि आपने अपने लेख में कई बार पाकिस्तान की जगह "ना-पाकिस्तान" लिखा है।

हवाला :-

"लीग और ना-पाकिस्तान की नहुसत व खबाषत हर जगह गुरबा-ए-मुस्लिमीन अहले सुन्नत को परेशान किये हुवे है।'

संदर्भ :- "अहले सुन्नत की आवाज", प्रकाशक :- दारुल इशाअत बरकाती, खानकाहे बरकातीया, मारेहरा (यू.पी.) भाग : २, हिस्सा नं : १५, पृष्ठ : १४

"लीग तथा ना-पाकिस्तान का अशुभ प्रभाव तथा अपवित्रता ने हर जगह गरीब मुसलमान अहले सुन्नत को परेशान कर दिया है।"

हवाला :-

"जब यही ठान लिया कि 'ना-पाकिस्तान' के सिवा सारी दुनिया में कहीं न अमन है, न तिजारत चल सकती है, न मुलाजिमत मिल सकती है। भागो 'ना-पाकिस्तान' को। तो ऐसों को रोकने की मुझ कमजोर व गरीब में क्या कुव्वत ? वो खुद 'ना-पाकिस्तान' जा कर देख लें। कहीं पहुंचते पहुंचते "असा-अन-तुहिब्बू-शयअंव-व-हुवा-शर्रुल्लकुम" के मनाजिर ही सामने न आ जाएं।'

संदर्भ :- "अहले सुन्नत की आवाज", प्रकाशक :- दारुल इशाअत बरकाती, खानकाहे बरकातीया, मारेशरा (यू.पी.) भाग : २, हिस्सा नं. ८ और ९, पृष्ठ : २०

"जब एसा ही ठान लिया कि 'ना-पाकिस्तान' के सिवा तमाम दुनिया में अन्यत्र कहीं न शांति है, न चैन है, न ब्यापार चल सकता है, न नोकरी मिल सकती है। इसलिये भागो ना-पाकिस्तान तरफ। तो एसो को रोकने की मेरे जैसे कमजोर तथा गरीब में क्या शक्ति ? वे स्वंय ना-पाकिस्तान जा कर देख ले। कहीं वहाँ पहुंचते पहुंचते (एक कुरआनी आयत का अनुवाद) "तुम किसी बात को प्रिय रखते हो और वह तुम्हारे लिये हानिकारक हो" के द्रश्य ही सामने न आ जाए।"

उपरोक्त दोनों हवालों के इलावा कई बार इमाम अहमद रजा फाजिले बरेल्वी के पीरजादे हजरत ताजुल उलमा, ओलादे रसूल मारेहरवी ने पाकिस्तान के लिये 'ना-पाकिस्तान' शब्द प्रयोग कर के वहां झुठी उम्मीदों के आवेश में हिजरत कर के जाने वालो को स्पष्ट स्वरुप में चेतावनी दी है कि पाकिस्तान में शांती, आराम, ब्यापार, नोकरी या किसी अन्य लालच में 'जाने वाले' सुन लें कि तुम जहां जा रहे हो वह 'पाकिस्तान' नहीं बल्कि 'ना-पाकिस्तान' है।

मूल लेख में अरबी भाषा में लिखा वाक्य कोई कहावत नहीं बल्कि कुरआन शरीफ की आयत है। (यहां पर केवल उसका अनुवाद ही लिखा गया है।) यह आयत का अनुवाद तथा भावार्थ यह है कि जो बात तुम्हे प्रिय हो, हो सकता है कि वह तुम्हारे लिये हानिकारक हो और वास्तव में यह बात अनुभव से सिद्ध हो चुकी है कि अपने लिये आश्रय स्थान समझ कर पाकिस्तान की तरफ अंधी दोड लगाने वाले कईयो को मृगजल जेसे ही भ्रामक अनुभव हुवे है।

दुसरी एक जगह पर हजरत ताजुल उलमा, ओलादे रसूल मारेहरवी रदीअल्लाहो अन्हो ने भारत तथा पाकिस्तान की तुलना करते हुवे जो लिखा है, वह इतना श्रेष्ठ है कि उस लेख के शब्दो को 'शुद्ध सोने' के अक्षरो से लिखने में आए, फिर भी उस का सम्मान अधूरा कहलाएगा। आपका वह लेख भी देखते है।

हवाला :-

"पाकिस्तान जाने या हिन्दुस्तान में रहने के बारे में मुझ से मश्वरा पूछा। हिन्दुस्तान आपका वतने कदीम आबाह है और यहां जहां तक मेरा इल्म है, हम गुरबा का दीनो-ईमान पाकिस्तान से ज्यादा महफूज है और मालो-जान का अमन भी पाकिस्तान से कम अज कम, कम नहीं।"

संदर्भ :- "अहले सुन्नत की आवाज", प्रकाशक :- दारुल इशाअत बरकाती, खानकाहे बरकातीया, मारेहरा (यू.पी.) भाग : २, हिस्सा नं. ६ और ७, पृष्ठ : ५३

हिन्दी अनुवाद
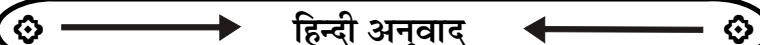
"पाकिस्तान जाना या हिन्दुस्तान में रहना ? उस के बारे में मुझ से पूछा गया। हिन्दुस्तान तुम्हारा पूर्वजो

के समय का वतन है और यहां जहां तक मेरा ज्ञान है, हमारा मजहब तथा ईमान पाकिस्तान से ज्यादा सुरक्षित है और माल तथा जान की सुरक्षा भी पाकिस्तान से कम नहीं।'

✪ और एक हवाले पर द्रष्टिपात करते है।

हवाला :-

"अपना वतन छोड कर मारे मारे फिरने से क्या नतीजा ? मुर्तद्दीन व मुबतदीईन का जेरे अषर पाकिस्तान हम गुरबा-ए-अहले सुन्नत के लिये हरगिज दारुल अमान साबित न होगा।"

संदर्भ :- "अहले सुन्नत की आवाज", प्रकाशक :- दारुल इशाअत बरकाती, खानकाहे बरकातीया, मारेहरा (यू.पी.) भाग : २, हिस्सा नं. १५, पृष्ठ : १३ तथा १४

हिन्दी अनुवाद
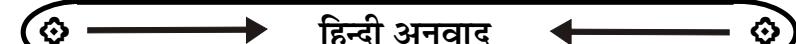
"अपना वतन छोड कर यहां-वहां फिरने का क्या परिणाम ? मुर्तद्द और बिदअतीयों से प्रभावित पाकिस्तान हमारे जैसे अहले सुन्नत के लिये कभी सुरक्षित प्रमाणित नहीं होगा।"

उपरोक्त संदर्भो के अलावा ऐसे कई संदर्भ प्रस्तृत हो सकते हैं कि जिस से स्पष्ट रुप से साबित होता है कि बिन-वहाबी, सुन्नी समुदाय के महान बरेल्वी आलिमो ने पाकिस्तान के खन्डन में कुछ कमी नहीं रखी। बटवारे के समय सुन्नी आलिमो ने पाकिस्तान के

बारे में जो मत व्यक्त किये थे वे सच साबित हुवे हैं। मुस्लिम लीग के गुमराह करने वाले नेताओं ने मुसलमानों को जो स्वप्न दिखाए थे, वह एक भ्रामक प्रचार था। अंग्रेज भारत छोडते समय एक जलती समस्या दे गए जिस की ज्वाला से अखंड भारत (भारत-पाकिस्तान) की प्रजा जल रही है।

कडवा सच

द्रुष्ट अंग्रेजो के छल-प्रपंच के दुखद परिणाम स्वरुप भारत के टुकडे हुवे और मुस्लिम बहुसंख्यक प्रदेश अलग हुवा तथा एक नया राष्ट्र पाकिस्तान अस्तित्व में आया। विभाजन के समय मुस्लिम लीग के नेता फुले नहीं समाते थे। हमारी हठ पूरी हुई। पाकिस्तान ले कर ही रहे ना ? किन्तु...... वह एक हठ थी, जो किसी भी तरह परिपूर्ण हुई। अंग्रेजो ने हिन्दु तथा मुस्लिम प्रजा के बीच जो गलतफहमियाँ, पूर्व-धारणाएं, झगडे, घृणाएं, विवाद, धार्मिक जनून, हठाग्रह, अविश्वास, विश्वासघात तथा शत्रुता के बीज बोए थे, वह बीज में से पौधा और पौधे में से बडा वृक्ष बना और दोनों प्रजा के भीतर मतभेद का स्थायी समाधान शक्य न हो, ऐसे द्रुष्ट आशय से ही भारत का विभाजन किया। जिस के कई द्रुष्प्रभाव में से एक प्रत्यक्ष तथा महत्व का प्रभाव यह पडा कि एक-दुसरे के विरुद्ध लडने के कारण दोनों देश की प्रगति रुक गई। दोनों देश एक-दुसरे को अपना कट्टर शत्रु समझकर संरक्षण तथा आक्रमण क्षेत्र में ज्यादा शक्तिशाली बनने के लिये सैन्य के लिये इतना खर्च कर रहे हैं कि प्रजा के विकास संबंधी कार्य तरफ (पर्याप्त) ध्यान नहीं दिया जा सकता। दोनों देशों की शक्ति तथा संपत्ति लडाई हेतु खर्च हो कर नष्ट हो जाती है और सब से गंभीर बात यह है कि दोनों

देश की लडाई तथा शत्रुता का द्रुष्ट प्रभाव दोनो राष्ट्र की प्रजा के उपर पडता है। परिणाम स्वरुप सांप्रदायिक तनाव, फसाद, नफरत, घृणा और शत्रुता फेलाती है।

जरा सोचे ! अपने अंतरात्मा को झंझोडो ! क्या हम आंतर विग्रह में ही जीना चाहते हैं ? क्या हमारे देश की प्रगति स्थगित नहीं हो जाती ? क्या ऐसे सांप्रदायिक दंगो से हमारी समस्याओं का समाधान हो जाएगा? कदापी नहीं, बल्कि समश्याएं बढ जाएंगी। एक ही परिवार (देश) में से विभाजित हो कर अलग-अलग महोल्लाह (देश) में बसने का क्या यह अर्थ है कि निरंतर एक-दुसरे के खिलाफ शत्रु द्रष्टि से एकटक घूरना ? यह सब करने के बाद परिणाम क्या मिलता है ? हमें क्या प्राप्त होता है? कष्टमय परिणाम स्वरुप सुख-शांति गंवाते है। प्रेम के वातावरण को घृणा द्रारा प्रदुषित करते हैं।

स्वतंत्रता मिलने के बाद दो-तीहाई शाताब्दी बिताने के बाद भी हम मानसिक लधूता से पिडीत हैं। एक दूसरे को समर्थन देने कि बजाय गिराने की ही षडयंत्र बना रहे हैं। प्रेम से संतोष की रोटी खाने के स्थान पर घृणा से लूंटमार से खाने की वृत्ति में पडे हुवे हैं। स्थिरता के बदले भटक रहे हैं। शांति की ठंडक को अपने ही हाथो से आपत्ति की अग्नि में रुपांतर कर रहे हैं। इस देश की भूमी पर जन्म ले कर यदि इस देश की प्रतिष्ठा को हम नहीं बढा सकते तो देश की महिमा को मिट्टी में मिलाने का हमें कोई अधिकार नहीं। हमारे प्रिय भारत देश की प्रतिष्ठा धुंधली तथा कमी करने के प्रयास में एक तरफ पाकिस्तान कोई क्षति होने नहीं देता, तो दुसरी तरफ भारत में बस रहे कुछ विकृत-सांप्रदायिक मानसिकता वाले तत्व भी कुछ कमी नहीं करते। सांप्रदायिक दंगो के कारण बिन-सांप्रदायिक भारत को शर्म से शर्मिंदा होना पडता है।

हिन्दुस्तान में पिछले तीस सालों से जो सांप्रदायिकता का वातावरण बन गया है तथा सांप्रदायिक मनोवृत्ति को उकसाया और

विकसाया गया है, वह सब हिन्दुस्तान के हित शत्रुओ के कारण ही है। हिन्दु तथा मुस्लिम दोनों समुदाय के कुछ लोग इसके जिम्मेदार हैं । दोनों कोम को बहकानेवाले अवसरवादी और सांप्रदायिक राजकीय पक्ष तथा नेता हैं । धर्म के नाम पर चुनाव लडना, मंदिर-मस्जिद के नाम पर मत प्राप्त करना, संप्रदाय और जाति के नाम पर समाज को बांट देना, प्रदेश और भाषा के नाम पर आंदोलन चलाना, यह सब अवसरवादी राजनीतिज्ञो की राजनीति है । राष्ट्र के लाभ को किनारे पर रख कर निजी लाभ तथा स्वार्थ को ही प्राथमिकता दी जाती है । और वास्तविकता की बात तो यह भी है कि धर्म, धार्मिक स्थल, कौम, जाति, भाषा तथा प्रदेश के नाम पर झगडा करा कर प्रजा को आपस में लडवा कर, दंगो का मोनीटरींग तथा कंट्रोलींग करनेवाले कुछ राजकीय पक्षों के नेता आपस में तो एसे प्रेम से आलिंगन करते हैं जैसे प्रेम और त्याग की मूर्ति । अपने प्रशासनिक असफलता का दोषी किसी दूसरे देश को बनाने की जैसे कि एक प्रणाली बन चुकी है । भारत और पाकिस्तान दोनो देश के नेता अपने देश की प्रजा को धोका देने के लिए 'उसका हाथ है' तथा 'वो सब करवा रहा है' का शोर मचाते हैं । राजकीय नेता प्रत्येक विषय में हमेंशा 'खेलने' के लिए तैयार ही होते हैं । प्रजा में अपनी प्रशांसनिक क्षतिया खुल कर सामने आ जाएंगी और प्रजा के विरोध का सामना करना पडेगा, ऐसा प्रतित होते ही प्रजा का ध्यान कहीं और केन्द्रीत करने के लिये सीमा पर तंगदिली या जवानो की मृत्यु की बात का प्रचार-प्रसार करेंगे । पाकिस्तान के नेता पाकिस्तानी प्रजा से ''पाकिस्तान खतरे में है'' और ''इस्लाम खतरे में है'' की आवाजें बुलंद करवाएंगे । हिन्दुस्तान में ''हिन्दुस्तान को पाकिस्तान से खतरा'' की खबर व्यापक बना देंगे। दोनों देश की प्रजा अपने देश की अन्य गेरकानूनी, भ्रष्टाचार, घोटालों की तरफ से ध्यान हटा कर सीमा सुरक्षा की तरफ अपना ध्यान केन्द्रीत करेगी। बस इसी तरह राजनेताओ का काम हो गया ।

पाकिस्तान में प्रजा का अधिकांश भाग धार्मिक द्रष्टिकोण से मुसलमानो का है । इसलिये वहां पर बात-बात में इस्लाम के नाम का उपयोग करने की चेष्टा करने में आती है । परन्तु वास्तविकता यह है कि यदि हम पाकिस्तान के भीतर में द्रष्टिपात करे तो वहां पर कई गेर-इस्लामी बाते व्यापक हैं । शराब, जुवा, नग्नता, लूंटमार, गुंडागीरी, विश्वासघात, व्यभिचार जैसी हलकी कक्षा के तथा घृणास्पद कार्यों के आचरण के समय इस्लामी आदेशो को भूला दिया जाता है । कदाचित पाकिस्तान के कोई पाठक को मेरी यह बात अति-कडवी लगेगी परन्तु कडवे सत्य के उच्चारण में किसीकी शर्म नहीं रखनी चाहिये । इसीलिये सीना तान कर कहता हूं कि इस्लामी कानून, रीत-भात तथा इस्लामी आदेश का पालन, आदर तथा सम्मान पाकिस्तान से ज्यादा हिन्दुस्तान में है । बल्कि यह कहने में अतिश्योक्ति नहीं है कि पाकिस्तान की तुलना में हिन्दुस्तान में मुसलमान ज्यादा सुखी तथा सुरक्षित है । तथाथि..... हिन्दुस्तान में कभी कभी सांप्रदायिक राजकीय पक्षो के उकसाने के कारण सांप्रदायिक हिंसा के समय अल्पसंख्यक मुसलमानो को जान-माल की बहुत हानि उठानी पडती है, और पाकिस्तान में तो हमेंशा (सदा) प्रजा भ्रष्ट राजनीतिज्ञ द्वारा लूंटी और बर्बाद की जाती है ।

भारत में बस रहे मुसलमानो को कभी कभी सांप्रदायिक ताकतो द्वारा उत्सर्जित सांप्रदायिक हिंसा में जो दुश्वारी का सामना करना पडता है उस में भी पाकिस्तान के नाम का ही उपयोग किया जाता है । जैसा कि भारतीय नागरिकता रखनेवाले तथा देश के वफादार मुसलमानो को सांप्रदायिक तत्व किसी भी बहानों से पाकिस्तानी एजन्ट तथा जासूस का संबोधन बहुत ही सरलता से दे देते हैं । दुसरी कोई भी गलती, जुर्म या राष्ट्र विरोधी कार्य न हो फिर भी सांप्रदायिक घटक (सांप्रदायिक राजकीय पक्ष, हिन व्यक्ति, सांप्रदायिक मिडीया, इत्यादि) किसी भी राष्ट्रवादी मुस्लिम को

पाकिस्तानी जासूस तथा देशद्रोही बताने में किसी भी प्रकार की हिचकिचाहट का अनुभव नहीं करता । सांप्रदायिक दंगा करवाने के लिए सांप्रदायिक घटको (तत्वो) हमेंशा पाकिस्तान का बहाना बनाकर शांति और प्रेम से जीने वाली हिन्दु और मुस्लिम दोनों प्रजा को अशांती की अग्नि में धकेल देते हैं और देश की अमुल्य संपत्ति को नुकसान पहुंचाने का घिनौना अपराध और पाप करते है । साथ ही साथ हमारे बिन-सांप्रदायिक देश के ललाट पर सांप्रदायिक दंगे का कलंक भी लगाते हैं । इसी तरह पाकिस्तानी हिन्दु नागरिक को पाकिस्तान के विकृत तथा संकुचित परिबल परेशान करने में कोई क्षति नहीं रहने देते ।

वर्तमान समय में देश प्रेम तथा मानवता की भावना को जिवित रखने का केवल एक ही उपाय है कि हमारे देश का प्रत्येक नागरिक अपने प्रत्येक देशबंधू को शांति से जीने दे । समाज को सांप्रदायिक तनाव के दुषण से बचाने के लिये सांप्रदायिक विचारधारा रखनेवालों को छोडकर भारत के प्रत्येक नागरिक को भारत का अंग समझ कर उस के साथ शांति बनाए रखे और सांप्रदायिक दंगो के कारण होती तबाही-बर्बादी के कारण देश की प्रगति की रुकावट तथा प्रतिष्ठा पर कलंक के लिये स्वंय प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष किसी भी प्रकार निमित्त न बने उस का खास ख्याल रखे ।

अलबत्ता...... इस देश में रह कर इस देश प्रति अपनी निष्ठा की फर्ज भूलकर, देश के साथ बेवफाई करके, शत्रु देश के एजन्ट की भूमिका निभाने वाले अयोग्य देशद्रोहियो को अनिवार्य तोर पर उजागर करके, उनके दंभ का पडदा चाक करना अति-आवश्यक ही नहीं, बल्कि अनिवार्य है । विशेष रुप से उस समय जब देश आपातकाल का सामना कर रहा हो, विदेशी तत्व षडयंत्र करके अपने प्यारे मादरे वतन भारत को विनाश के पंथ पर ले जाने की गंदी गतिविधिया कर रहे हों, तब किसी की भी शह-शर्म की परवाह किये बगैर ऐसे देशद्रोहियो को बे-नकाब करना चाहिये और इसी भावावेश के कारण इस किताब

में सुस्पष्ट साबिती के आधार पर ऐसे लोगो की वास्तविक छवि पाठको के सामने उजागर करने की यथा शक्ति प्रयत्न किया है कि जिन्होंने अंग्रेजो के हाथ पर बिक कर भारत प्रति बगवत ही की थी किन्तु उनके अनुयायीओ द्वारा लिखित भ्रष्ट इतिहास के कारण देश के लिये प्राण का बलिदान देने वाले सपूतो की सूची में मक्कारी से घुस गए हैं ।

अंत में...... इस देश में बस रही प्रजा स्वंय शांति से जीए तथा अन्यों को भी शांति से जीने दे । ऐसी पवित्र और शुद्ध भावना को जन्म दे कर देश की आन-बान-शान में वृद्धि करना, यह भी एक प्रकार का देश प्रेम ही है । देश की प्रतिष्ठा को बदनामी से बचाना, समाज में हमेंशा शांति स्थापित रहे ऐसे प्रयास करना तथा कानून एंव व्यवस्था की रक्षा में अपना योगदान देना यह भी एक महान राष्ट्र सेवा है ।

(समाप्त)

ललकार (चुनौती)

इस पुस्तक में वहाबी-देवबंदी-तबलीगी जमाअत के पेश्वाओं की अंग्रेज गुलामी तथा भारत प्रत्ये गद्दारी की जो दास्तान वास्तविक स्वरुप से वर्णन करने में आई है, वो खूद वहाबी-देवबंदी वर्ग की आधारभूत और मान्य किताबों के संदर्भ हवालों द्वारा अक्षरस प्रस्तृत की गई है ।

इसी लिये तो इस किताब का एक हवाला भी गलत साबित करने वाले को प्रत्येक हवाले पर :-

Rs :- 1,00,000/- (एक लाख रुपिया)

का पुरस्कार दिया जाएगा ।

विशेष में लेखक और प्रकाशक के विरुध्ध कानूनी कार्यवाही करने का भी अधिकार रहेगा ।

''उठो..... कमर कसो.... एक लाख का इनाम आप की प्रतिक्षा कर रहा है ।''

पोरबंदर
दिनांक :- 10/04/2018

अल्लामा अब्दुल सत्तार हमदानी
(लेखक)